

आर.एन.आई. नं. 3653/57  
मुद्रण तिथि 5 से 8 जुलाई, 2020  
डाक प्रेषण तिथि 10 जुलाई, 2020

वर्ष : 78 अंक : 07  
श्रावण, 2077 मूल्य : ₹ 10  
पृष्ठ संख्या 104

डाक पंजीयन संख्या JaipurCity/413/2018-20  
WPP Licence No. Jaipur City/WPP-04/2018-20  
Posted at Jaipur RMS (PSO)

ISSN 2249-2011

हिन्दी मासिक

# जिनवाणी

जुलाई, 2020



णमो अरिहंताणं

णमो सिद्धाणं

णमो आर्यरियाणं

णमो उवज्झायाणं

णमो लोए सत्त्वसाहूणं

एसो पंच णमोक्कारो, सत्त्व-पावप्पणासणो  
मंगलाणं च सत्त्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं॥



Website : [www.jinwani.in](http://www.jinwani.in)

कोरोना वायरस शारीरिक दूरी की प्रेरणा करता है,  
पारस्परिक द्वेष एवं घृणा की नहीं।

संसार की समस्त सम्पदा और भोग  
के साधन भी मनुष्य की इच्छा  
पूरी नहीं कर सकते हैं।

- आचार्य हस्ती



आवश्यकता जीवन को चलाने  
के लिए जरूरी है, पर इच्छा जीवन  
को बिगाड़ने वाली है,  
इच्छाओं पर नियंत्रण आवश्यक है।

- आचार्य हीरा



जिनका जीवन बोलता है,  
उनको बोलने की उतनी जरूरत भी नहीं है।

- उपाध्याय मान

With Best Compliments :  
**Rajeev Nita Daga Foundation Houston**

## जिनवाणी की प्रकाशन योजना में आपका स्वागत है

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर द्वारा विगत 77 वर्षों से प्रकाशित 'जिनवाणी' हिन्दी मासिक पत्रिका मानव के व्यक्तित्व को निखारने एवं ज्ञानवर्धक सामग्री परोसने का महत्त्वपूर्ण कार्य कर रही है। इसमें अध्यात्म, जीवन-व्यवहार, इतिहास, संस्कृति, जीवन मूल्य, तत्त्व-चर्चा आदि विविध विषयों पर पाठ्य सामग्री उपलब्ध रहती है। अनेक स्तम्भ निरन्तर प्रकाशित हो रहे हैं, जिनमें सम्पादकीय, विचार-वारिधि, प्रवचन, शोधालेख, अंग्रेजीलेख, युवा-स्तम्भ, नारी-स्तम्भ आदि के साथ विभिन्न गीत, कविताएँ, विचार, प्रेरक प्रसङ्ग आदि प्रकाशित होते हैं। नूतन प्रकाशित साहित्य की समीक्षा भी की जाती है।

जैनधर्म, संघ, समाज, संगोष्ठी आदि के प्रासङ्गिक महत्त्वपूर्ण समाचार भी इसकी उपयोगिता बढ़ाते हैं। जनवरी, 2017 से 8 पृष्ठों की 'बाल जिनवाणी' ने इस पत्रिका का दायरा बढ़ाया है। अनेक पाठकों को प्रतिमाह इस पत्रिका की प्रतीक्षा रहती है तथा वे इसे चाव से पढ़ते हैं। जैन पत्रिकाओं में जिनवाणी पत्रिका की विशेष प्रतिष्ठा है। इस पत्रिका का आकार बढ़ने तथा कागज, मुद्रण आदि की महँगाई बढ़ने से समस्या का सामना करना पड़ रहा है। जिनवाणी पत्रिका की आर्थिक स्थिति को सम्बल प्रदान करने के लिए पाली में 28 सितम्बर, 2019 को आयोजित कार्यकारिणी बैठक में निम्नाङ्कित निर्णय लिये गए, जिन्हें अप्रैल 2020 से लागू किया गया है-

वर्तमान में श्वेत-श्याम विज्ञापनों से जिनवाणी पत्रिका को विशेष आय नहीं होती है। वर्ष भर में उसके प्रकाशन में आय अधिक राशि व्यय हो जाती है। अतः इन विज्ञापनों को बन्दकर पाठ्य सामग्री प्रकाशित करने का निर्णय लिया गया।

आर्थिक-व्यवस्था हेतु एक-एक लाख की राशि के प्रतिमाह दो महानुभावों के सहयोग का निर्णय लिया गया। ऐसे महानुभावों का एक-एक पृष्ठ में उनके द्वारा प्रेषित परिचय/सामग्री प्रकाशित करने के साथ वर्षभर उनके नामों का उल्लेख करने का प्रावधान भी रखा गया।

जिनवाणी पत्रिका के प्रति अनुराग रखने वाले एवं हितैषी महानुभावों से निवेदन है कि उपर्युक्त योजना से जुड़कर श्रुतसेवा का लाभ प्राप्त कर पुण्य के उपार्जक बनें। जो उदारमना श्रावक जुड़ना चाहते हैं वे शीघ्र मण्डल कार्यालय या पदाधिकारियों से शीघ्र सम्पर्क करें।

अर्थसहयोगकर्ता जिनवाणी (JINWANI) के नाम से बैंक प्रेषित कर सकते हैं अथवा जिनवाणी के निम्नाङ्कित बैंक खाते में राशि नेफ्ट/नेट बैंकिंग/चैक के माध्यम से सीधे जमा करा सकते हैं।

बैंक खाता नाम-JINWANI, बैंक-State Bank of India, बैंक खाता संख्या-51026632986, आई.एफ.एस. कोड-SBIN0031843, ब्रॉच-Bapu Bazar, Jaipur

राशि जमा करने के पश्चात् राशि की स्लिप मण्डल कार्यालय या पदाधिकारियों की जानकारी में लाने की कृपा करें जिससे आपकी सेवा में रसीद प्रेषित की जा सके।

'जिनवाणी' के खाते में जमा करायी गई राशि पर आपको आयकर विभाग की धारा 80G के अन्तर्गत छूट प्राप्त होगी, जिसका उल्लेख रसीद पर किया हुआ है। 'जिनवाणी' पत्रिका में जन्मदिवस, शुभविवाह, नव प्रतिष्ठान, नव गृहप्रवेश एवं स्वजनों की पुण्य-स्मृति के अवसर पर सहयोग राशि प्रदान करने वाले सभी महानुभावों के प्रति आभार व्यक्त करते हैं। आप जिनवाणी पत्रिका को सहयोग प्रदान करके अपनी खुशियाँ बढ़ाना न भूलें।

-अशोक कुमार सेठ, मन्त्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, 9314625596



## जिनवाणी प्रकाशन योजना के लाभार्थी

‘जिनवाणी’ हिन्दी मासिक पत्रिका की अर्थ-व्यवस्था को सम्बल प्रदान करने हेतु निम्नाङ्कित धर्मनिष्ठ उदारमना श्रावकरत्नों से राशि रुपये 1,00,000/- प्राप्त हुई है। सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल एवं जिनवाणी परिवार उनका हार्दिक आभारी है।

- (1) श्री चंचलमलजी बच्छावत, कोलकाता, अध्यक्ष-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
- (2) श्रीमती मंजूजी भण्डारी, बेंगलोर, अध्यक्ष-अ. भा. श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल
- (3) श्री पी. शिखरमलजी सुराणा, चेन्नई, पूर्व संघाध्यक्ष एवं पूर्व मण्डल अध्यक्ष
- (4) श्री विनयचन्दजी डागा, जयपुर, कार्याध्यक्ष-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
- (5) डॉ. धर्मचन्दजी जैन, जयपुर, कार्याध्यक्ष-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
- (6) श्री अशोक कुमारजी सेठ, जयपुर, मन्त्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
- (7) श्री राजेन्द्र कुमारजी रितुलजी पटवा, जयपुर, कोषाध्यक्ष-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
- (8) श्री दुलीचन्दजी-श्रीमती कमलाजी बाघमार, चेन्नई
- (9) श्री अशोक कुमारजी चोरड़िया, जोधपुर
- (10) श्री प्रमोदजी महनोत, जयपुर, अध्यक्ष-श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जयपुर
- (11) श्री हिमांशुजी सुपुत्र श्री सोहनलालजी जैन, अलीगढ़-रामपुरा, जिला-टोंक
- (12) श्री गौतमचन्दजी जैन, पूर्व जिला रसद अधिकारी (अलीगढ़-रामपुरा वाले), जयपुर

निम्नाङ्कित धर्मनिष्ठ उदारमना श्रावकरत्नों से जिनवाणी प्रकाशन योजना हेतु स्वीकृति प्राप्त हो गयी है-

1. श्री कैलाशचन्दजी हीरावत, पूर्व संघाध्यक्ष, जयपुर
2. श्री आनन्दजी चौपड़ा, कार्याध्यक्ष-अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर
3. श्री क्रान्तिचन्दजी मेहता, अलवर, मण्डल कार्यकारिणी सदस्य
4. श्रीमती अलकाजी दुधेड़िया, अजमेर, महासचिव-अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल
5. श्री अतिशजी सेठिया, होलनांथा

जिन महानुभावों ने अर्थसहयोग हेतु स्वीकृति प्रदान की है, उनके प्रति भी सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल कृतज्ञता ज्ञापित करता है तथा स्वेच्छा से इस योजना से जुड़ने वाले महानुभावों की स्वीकृति के लिए प्रतीक्षारत है।

कोरोना संकट काल में हम सबको जैन जीवनशैली का महत्त्व समझ में आ रहा है, अतः जिनवाणी पत्रिका का आगामी विशेषाङ्क ‘जैन जीवनशैली’ पर केन्द्रित रहेगा।

-अशोक कुमार सेठ, मन्त्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, 9314625596

# जिनवाणी

मंगल-मूल, धर्म की जननी, शाश्वत सुखदा कल्याणी।  
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी, फिर प्रगटी यह 'जिनवाणी' ॥

## संरक्षक

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ  
प्लॉट नं. 2, नेहरूपार्क, जोधपुर (राज.), फोन-0291-2636763  
E-mail : absjrhssangh@gmail.com

## संस्थापक

श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़

## प्रकाशक

अशोककुमार सेठ, मन्त्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल  
दुकान नं. 182, के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302003(राज.)  
फोन-0141-2575997  
जिनवाणी वेबसाइट- www.jinwani.in

## प्रधान सम्पादक

प्रो. (डॉ.) धर्मचन्द जैन

## सह-सम्पादक

नीरतनमल मेहता, जोधपुर  
मनोज कुमार जैन, जयपुर

## सम्पादकीय कार्यालय

ए-9, महावीर उद्यान पथ, बजाजनगर, जयपुर-302015 (राज.)  
फोन : 0141-2705088  
E-mail : editorjinwani@gmail.com

## भारत सरकार द्वारा प्रदत्त

रजिस्ट्रेशन नं. 3653/57  
डाक पंजीयन सं.- JaipurCity/413/2018-20  
WPP Licence No. JaipurCity-WPP-04/2018-20  
Posted at Jaipur RMS (PSO)



परस्परप्राप्तो जीवनाम्

लद्धूण वि माणुसत्तणं,  
आरियत्तणं पुणरवि दुल्लहं।  
बहवे दसुया मिलेक्खुया,  
समयं गौयम! मा पमायडु॥

-उत्तराध्ययन सूत्र, 10.16

दुर्लभ मानवमव पाकर भी,  
आर्यत्व पाना है दुर्लभतर  
हैं दस्यु म्लेच्छ करोड़ों नर,  
गौतम! प्रमाद न क्षण का कर॥

जुलाई, 2020

वीर निर्वाण सम्वत्, 2546

श्रावण, 2077

वर्ष 78

अंक 7

सदस्यता शुल्क

त्रिवार्षिक : 250 रु.

20 वर्षीय, देश में : 1000 रु.

20 वर्षीय, विदेश में : 12500 रु.

स्तम्भ सदस्यता : 21000/-

संरक्षक सदस्यता : 11000/-

साहित्य आजीवन सदस्यता- 4000/-

एक प्रति का मूल्य : 10 रु.

शुल्क/साभार नकद राशि "JINWANI" बैंक खाता संख्या SBI 51026632986 IFSC No. SBIN 0031843 में जमा

कराकर जमापत्री (काउन्टर-प्रति) अथवा ड्राफ्ट भेजने का पता 'जिनवाणी', दुकान नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.)

फोन नं.0141-2575997, E-mail : sgpmandal@yahoo.in

मुद्रक : डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जयपुर, फोन- 0141-4043938

नोट- यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो।

## विषयानुक्रम

सम्पादकीय-	परिस्थिति के निर्माण की कारणता	-डॉ. धर्मचन्द जैन	7
अमृत-चिन्तन-	आगम-वाणी	-डॉ. धर्मचन्द जैन	10
विचार-वारिधि-	जैनधर्म : सबका हितकारी	-आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा.	11
प्रवचन-	जीवन निर्माण की कला : स्वाध्याय	-आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा.	12
	चातुर्मास का महत्त्व	-आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा.	18
	प्रदर्शन नहीं, आत्म दर्शन करें	-श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा.	22
दीक्षा-शताब्दी-	नैतिकता, प्रामाणिकता और निपुणता के		
	कुछ जीवन्त प्रसङ्ग	-श्री पी. शिखरमल सुराणा	25
परिवार-स्तम्भ-	'यतना' धर्म महान	-श्री अरुण मेहता	34
English-section	Uttarādhyayana Sūtra-Extracts	Shri C. M. Bhachhawati (Retd. IAS)	38
अध्यात्म-	शरीर से जुड़ा व्यक्ति परिस्थिति से जुड़ जाता है	-श्री टाट बाबा	44
	कर्मों का बन्धन एवं निर्जरा	-श्री सौभाग्यमल जैन (एडवोकेट)	48
प्रासङ्गिक-	चिन्तन करो ना	-श्रद्धेय श्री अभयमुनिजी म.सा.	51
	कोरोना काल के पहले और कोरोना काल के बाद	-श्री तरुण बोहरा 'तीर्थ'	64
पाठिक-पत्र-	त्रिकम सम्बत् 2077	-संकलित	52
शोधालेख-	कोरोना महामारी : मानवीय दुष्कृत्यों का		
	परिणाम	-श्री पदमचन्द गाँधी	54
तत्त्व चर्चा-	आओ मिलकर कर्मों को समझें (5)	-श्री धर्मचन्द जैन	59
	आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड उत्तर-तालिका	-संकलित	66
सुवा-स्तम्भ-	विवशता एवं पराधीनता पर विजयहेतु धर्मसाधना	-श्री मनीष मेहता	62
गीत/कविता-	अणुगारों को करते नमन	-श्री सुशील चाणोदिया	24
	दया एवं उत्तम पात्र	-डॉ. रमेश 'मयंक'	47
	निर्जरा भावना	-श्रीमती अभिलाषा हीरावत	70
	सावज्जं पच्चक्खामि	-महासती श्री पद्मप्रभाजी म.सा.	89
विचार/चिन्तन-	Guiding Quotes	-Jagrit Jain	17
	साधना का महत्त्व	-श्रीमती कमला सिंघवी	21
	Message of One to Ten Letter Words	-Smt. Minakshi Dinesh Jain	50
चातुर्मास-सूची-	रत्नसंघ के घोषित चातुर्मास	-संकलित	71
साहित्य-समीक्षा-	नूतन साहित्य	-श्री गौतमचन्द जैन	79
समाचार विविधा-	समाचार-संकलन	-संकलित	81
	साभार-प्राप्ति-स्वीकार	-संकलित	90
बाल-जिनवाणी -	विभिन्न आलेख/रचनाएँ	-विभिन्न लेखक	93

## परिस्थिति के निर्माण की कारणता

❖ डॉ. धर्मचन्द जैन

सूर्य का उदय प्रतिदिन एक परिस्थिति का निर्माण करता है। चन्द्रमा का उदय या अनुदय अथवा विभिन्न कलाओं में उसका उदय एक परिस्थिति के निर्माण में सहायक है। वर्षा, शीत आदि ऋतुओं का होना भी परिस्थितियाँ हैं। इन सबका निर्माण हमारे पूर्व कृत कर्मों के कारण नहीं हुआ है। अतः हर परिस्थिति को अपने कर्म फल का कारण मानना उचित नहीं है। कई परिस्थितियों का निर्माण प्राकृतिक कारणों से होता है। कहीं अनेक कारण उन परिस्थितियों को जन्म देते हैं। कुछ परिस्थितियाँ हम उत्पन्न करते हैं। जैसे-घर में कुट्ट वचन बोलकर कलह का वातावरण बनाने में हम स्वयं कारण हैं। कार्यालय का वातावरण कैसा होगा, इसमें कार्यालय के अधिकारी एवं कर्मचारियों की विशेष भूमिका होती है। समाज के वातावरण का निर्माण भी मनुष्य के विचारों एवं कार्यों से होता है।

भूकम्प या तूफान का आना, भूस्खलन होना, ज्वालामुखी का फटना आदि ऐसी अनेक प्राकृतिक परिस्थितियाँ हैं जिनमें मनुष्य के कर्मों की कारणता या अन्य प्राणियों के कर्मों की कारणता को निर्धारित करना दुष्कर है। मनुष्य के कर्मों की सीमा रेखा है। प्राणियों के कर्मों की भी सीमा रेखा है। कई प्राणी मिलकर भी एक कार्य को अञ्जाम देते हैं। जैसे अनेक मधुमक्खियाँ मिलकर शहद के छत्ते का निर्माण करती हैं; अनेक मनुष्य मिलकर एक भवन, तालाब, सड़क, पुल आदि का निर्माण करते हैं। जब वायु का तेज झोंका चलता है अथवा वर्षा के साथ तूफान आता है तो उसमें अनेक वायुकायिक एवं अप्कायिक जीव मिलकर एक क्रिया को अञ्जाम देते हैं। अनेक चींटियाँ मिलकर बिलों का सुन्दर निर्माण करती हैं, उनमें उनके रहने के कलात्मक आवास होते हैं।

घर बन्द है, खिड़कियाँ खुली हुई नहीं हैं तो घर में ग्रीष्म ऋतु में असह्य गर्मी लगती है। सर्दी में वही घर ठण्डक से बचाता है। जब बाहर लू चलती है तो घर की खुली हुई खिड़कियाँ भी बन्द करने का मन करता है। ये परिस्थितियाँ निरन्तर बदलती रहती हैं। कोई भी दिन सदा एक-सा नहीं होता। कोई न कोई भेद जरूर रहता है।

कर्मसिद्धान्तवादी हर परिस्थिति का निर्माण पूर्वकृत कर्मों से मानते हैं। किन्तु यह पूर्ण सच नहीं है। इसीलिये सिद्धसेन दिवाकर ने पाँचवीं शती में आगमों के आधार पर एवं पूर्व प्रचलित विचारधारा के आधार पर काल, स्वभाव, नियति, पूर्वकृत कर्म एवं पुरुषार्थ इन पाँच की कारणता स्वीकार की है। आगे चलकर जैन दार्शनिकों ने इन्हें पञ्च कारण-समवाय का नाम दिया है।

कोरोना वायरस के कारण विश्व में एक नयी परिस्थिति ने जन्म लिया है। विगत छह माह से विभिन्न देशों में इस वायरस के कारण एक मनुष्य दूसरे मनुष्य से दूरियाँ बना रहा है। वायरस का प्रकोप कहाँ किस पर हो जाये, सभी आशंकित हैं। विश्व में अब तक एक करोड़ लोग इस वायरस से संक्रमित हो चुके हैं। आधे से अधिक स्वस्थ भी हुए हैं, किन्तु लगभग 5 लाख लोग मृत्यु के शिकार हो गये हैं। विश्व में प्रतिदिन लगभग एक लाख अस्सी हजार लोग इस रोग से संक्रमित हो रहे हैं। भारत में भी संक्रमितों की संख्या लगभग 5 लाख हो चुकी है। प्रतिदिन लगभग 18,000 नये रोगी आ रहे हैं। लगभग 16,000 रोगी काल-कवलित हो गये हैं। इस रोग का प्रारम्भ चीन से होने के कारण अमेरिका, इटली आदि कुछ देश चीन के विरोध में उठ खड़े हुए हैं। इसे चीन की चाल माना जा रहा है।

कोरोना संकट के साथ ही भारत एवं चीन की लेह-लद्दाख सीमा पर मुठभेड़ चल रही है। वहाँ भारत के

द्वारा सड़क निर्माण का कार्य चल रहा था, जिसके विरोध में चीन ने कमाण्डर सहित भारत के कुछ सैनिकों पर हमला बोला एवं उन्हें मौत के घाट उतारा। भारत ने भी हार नहीं मानी एवं चीन सैनिकों को मार गिराया। भारत अब भिन्न प्रकार से विरोध कर रहा है। वह चीन निर्मित वस्तुओं का बहिष्कार कर रहा है। उनके आयात पर रोक लगायी जा रही है। जनता भी इस ओर जागरूक हुई है। इस तरह परिस्थितियाँ निरन्तर बदल रही हैं। इन परिस्थितियों के बदलने में आशंकाएँ भी कारण हैं तो विभिन्न देशों का निर्णय भी कारण है।

लॉकडाउन की जो परिस्थिति विभिन्न देशों में उत्पन्न हुई है उसमें उन देशों के राष्ट्राध्यक्षों की विशेष भूमिका रही है। इस परिस्थिति में मनुष्य का पूर्वकृत कर्म कारण हो, यह कहना कठिन है, क्योंकि यह परिस्थिति राष्ट्राध्यक्षों के अथवा राज्य के मुख्यमन्त्रियों द्वारा की गई घोषणाओं से उत्पन्न हुई है।

कारण से कार्य होता है, यह सामान्य सिद्धान्त सभी को मान्य है। किन्तु कौन से कारण से कौन-सा कार्य होता है, इस सम्बन्ध में लोगों में एवं दार्शनिकों में मतभेद दिखायी देते हैं। कुछ कार्यों के कारण तो हमें स्पष्ट ज्ञात हो जाते हैं, किन्तु कुछ के कारण हमारे लिए रहस्य बने हुए हैं। हमारा ज्ञान इन्द्रियों से होने वाले ज्ञान तक सीमित है। अतीन्द्रिय कारणों को हम नहीं जानते अथवा जो सूक्ष्म कारण हैं उनको भी हम नहीं जानते।

परिस्थिति एक कार्य है जो किसी कारण से जन्य होती है। कुछ परिस्थितियों का कारण काल है। ऋतुओं का परिवर्तन, बालक से युवा एवं वृद्धावस्था तक का परिणमन, फसलों का पकना आदि कार्यों में काल की कारणता मानी जाती है। वैसे प्रत्येक क्रिया काल सापेक्ष होती है। अवसर्पिणी, उत्सर्पिणी आदि कालचक्र में काल की कारणता को मुख्यता दी गई है। अवसर्पिणी काल में जहाँ निरन्तर सुख से दुःख की ओर प्रयाण होता है वहाँ उत्सर्पिणी काल में दुःख से सुख की ओर गमन होता है। सम्यग्दर्शन की उपलब्धि में काललब्धि को भी कारण माना गया है। कोरोना की जो परिस्थिति उत्पन्न

हुई है, उसमें परोक्ष रूप से काल की कारणता स्वीकार की जा सकती है।

कुछ दार्शनिक प्रत्येक परिस्थिति या कार्य में स्वभाव को कारण मानते हैं। कारण के स्वभाव के अनुसार कार्य की उत्पत्ति होती है। नीम के बीज से नीम वृक्ष उत्पन्न हो सकता है आम्रवृक्ष नहीं। आम की गुठली से आम्रवृक्ष उत्पन्न हो सकता है नीम नहीं। एक जैसी भूमि, खाद, पानी, प्रकाश आदि होने पर भी अपने-अपने स्वभाव के अनुसार बीज भिन्न-भिन्न वृक्ष या पौधे के रूप में उत्पन्न होते हैं। सर्प के दुग्ध पान करने पर भी ज़हर बनता है। मधुमक्खियाँ स्वभाव से फूलों का रस ग्रहण कर शहद का निर्माण करती हैं, किन्तु मल में बैठने वाली मक्खियाँ स्वभाव से गन्दगी का सेवन कर गन्दगी फैलाती हैं। कई मच्छर मनुष्य के रक्त में अपना प्रभाव छोड़कर मलेरिया आदि रोगों को जन्म देते हैं। कोरोना वायरस का जो स्वभाव है, वह वैसा कर रहा है। उसको जहाँ फैलने का, बढ़ने का या प्रभावित करने का वातावरण मिलता है वहाँ पहुँच कर वैसा कर रहा है। वह जीव है या अजीव, यह बहस का विषय है। इसमें दोनों प्रकार की विशेषताएँ मानी जा रही हैं। तम्बाकू जिस प्रकार अजीव होने पर भी मनुष्य के शरीर एवं चित्त को प्रभावित करती है, उसी प्रकार यह कोरोना वायरस मनुष्य के श्वसन तन्त्र को प्रभावित करता है। जो मनुष्य प्रतिरोध शक्ति से युक्त है वह इसके प्रभाव से अप्रभावित ही रहता है। यह इतना सूक्ष्म है कि हम इसे नहीं देख सकते, किन्तु यह भीतर जाकर मनुष्य के मरण का कारण बन रहा है।

कारणों की शृङ्खला में नियति को भी कारण माना जाता है। इसके अनुसार जो जब, जहाँ, जिस प्रकार होना है, वह तब वहाँ उस प्रकार से होता है। नियतिवादियों के अनुसार सब कुछ नियत है, इसमें अन्य कोई कारण मान्य नहीं है। जैनदर्शन में भी चौबीस ही तीर्थङ्करों का होना, बारह ही चक्रवर्तियों का होना आदि नियति का सूचक है। जैनदर्शन की एक परम्परा ने क्रमबद्ध मान्यता प्रतिपादित कर नियतिवाद को ही



प्रकारान्तर से महत्त्व दिया है। यदि कोरोना संकट में नियति को कारण माना जाए तो भी कुछ लोगों के लिए सन्तोषप्रद हो सकता है। ऐसा ही होना था, इसमें हम क्या कर सकते हैं, किन्तु ऐसी मान्यता वाले लोग इसको रोकने में एवं चिकित्सा करवाने में रस नहीं ले सकते या प्रवृत्त नहीं हो सकते हैं। तीर्थङ्कर महावीर नियतिवाद में नहीं, पुरुषार्थ एवं पराक्रम में विश्वास रखते थे।

पूर्वकृत कर्मों को एक कारण मानने में भी कोई बाधा नहीं है। मनुष्य के द्वारा किये जा रहे प्रकृति एवं पर्यावरण के विनाश का परिणाम है यह कोरोना संकट। मनुष्य अपने भौतिक सुखों के लिए प्रकृति का विनाश करने में लगा है। वह अन्य प्राणियों को जिह्वा लोलुपता के कारण अपना आहार बना रहा है। चीन जैसे देश में कुछ भी खाया जा सकता है वहाँ साँप, बिच्छू, चमगादड़, कॉक्रोच (तिलचट्टा) सभी मनुष्य के आहार के रूप में प्रयुक्त होते हैं। मांसाहार के कारण मनुष्य को यह दुष्परिणाम भोगना पड़ रहा है। इसलिए मनुष्य के पूर्वकृत कर्मों या कार्यों को भी कारण मानने में कोई बाधा नहीं है, किन्तु यह एकमात्र कारण नहीं है। हाँ, यह बहुत बड़ा कारण है।

कोरोना संकट को रोकने में पुरुषार्थ एक कारण है। विभिन्न देश के मुखिया और वहाँ की जनता इस संकट पर विजय पाने के लिए प्रयत्नशील है। पुरुषार्थ के कारण ही अस्पतालों में चिकित्सकों के सहयोग से अनेक रोगी ठीक हो रहे हैं तथा घर लौट रहे हैं। कुछ अपना पुरुषार्थ दिखाकर योगक्रिया कर रहे हैं और प्रतिरोधक शक्ति विकसित कर रहे हैं। इस रोग को फैलाने में कोरोना वायरस यदि जीव है तो उसका पुरुषार्थ भी कार्य कर रहा है। अथवा प्रकृति के अन्य प्राणी मिलकर मनुष्य को यह शिक्षा दे रहे हैं कि तुम प्रकृति के साथ अधिक छेड़छाड़ मत करो।

किसी परिस्थिति के उत्पन्न होने में एक ही नहीं अनेक सहकारीकारण एक साथ कार्य करते हैं। कोरोना से जन्य परिस्थिति के सम्बन्ध में भी यह बात लागू होती

है। इसमें काल, स्वभाव, नियति, पूर्वकृत कर्म एवं पुरुषार्थ सबकी कारणता को स्वीकार किया जा सकता है। कोरोना के कारण अनेक परिस्थितियों का निर्माण हुआ है, यथा-मनुष्य में श्वसन एवं फेफड़े सम्बन्धी रोग का होना, लॉकडाउन का लागू होना, सुरक्षा हेतु मनुष्यों में परस्पर शारीरिक दूरियों का पालन, सरकारों के द्वारा विभिन्न प्रकार की मुस्तैदी, वायरस की जाँचें, क्वारेण्टाइन, विभिन्न प्रयोगशालाओं में वैज्ञानिकों के द्वारा वैक्सीन बनाने का प्रयत्न आदि। इन सब परिस्थितियों के भिन्न-भिन्न कारण भी विद्यमान हैं। जैसे लॉकडाउन का होना सरकारी निर्णय के बिना सम्भव नहीं था, अतः सरकारी निर्णय को इसमें कारण मानना होगा। इसी प्रकार कोरोना वायरस से उत्पन्न रोग से बचाव का एक कारण है लोगों में शारीरिक दूरियों को रखना। मनुष्य दुनिया का सर्वश्रेष्ठ प्राणी है, अतः उसके बचाव के लिए विभिन्न तैयारियाँ करने में सरकारों के निर्णय तथा अधिकारियों एवं कर्मचारियों की तत्परता इस रोग की चिकित्सा एवं नियन्त्रण में सहयोगी बने हैं।

जैनदर्शन में प्रतिपादित 'अनेकान्त' का सिद्धान्त हमें चिन्तन की व्यापक दृष्टि प्रदान करता है। अतः कारण-कार्य के सम्बन्ध में अनेकान्तदृष्टि का उपयोग भी हमें समाधान की दिशा प्रदान करता है। कारणों के भेद की दृष्टि से दो कारण प्रमुख हैं-उपादान और निमित्त। इनमें जो परिस्थिति जिसमें उत्पन्न होती है वह उसका उपादान कारण होता है तथा अन्य सब निमित्त कारण होते हैं। कोरोना वायरस भी एक निमित्त कारण है तथा जिस मनुष्य में रोग उत्पन्न हो रहा है वह उपादान कारण है। यदि कोरोना वायरस रूपी निमित्त कारण को किसी मनुष्य के गले में उपयुक्त भूमि मिल जाए, मनुष्य की प्रतिरोधक शक्ति न्यून हो तो यह वायरस वहाँ पर पनपने एवं प्रभाव दिखाने में सक्षम हो जाता है, अन्यथा यह निष्प्रभावी भी रह सकता है। वायरस की संख्या बढ़ने में वायरस स्वयं उपादान कारण बनता है तथा गले का वातावरण निमित्त कारण बनता है।

## आगम-वाणी

डॉ. धर्मचन्द जैन

मुणी मोणं समायाए धुणे कम्म सरीरगं, पंतं लूहं सेवंति, वीरा सम्मत्तदंसिणो, एस ओहंतरे मुणी, तिण्णे मुत्ते विरए वियाहिए त्ति बेमि।

-आचारांगसूत्र (सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल), प्रथम श्रुतस्कन्ध, पञ्चम अध्ययन, तृतीय उद्देशक, सूत्र 35 अर्थ-मुनि मुनित्व को ग्रहण करके कार्मण शरीर को धुने। प्रान्ताहार एवं रुक्षाहार का सेवन करने वाले वीर पुरुष कर्मविदारण में समर्थ हैं, उक्त गुणों से युक्त सम्यग्दर्शी मुनि संसार को तर जाता है। बन्धन से मुक्त हो जाता है, पापानुष्ठान से विरत हो जाता है, इस प्रकार कहता हूँ।

विवेचन-आचाराङ्गसूत्र में मुनि के आचार का सुन्दर प्रतिपादन हुआ है। मुनि का लक्ष्य संवर के साथ पूर्व सञ्चित कर्मों की निर्जरा करते हुए मुक्ति प्राप्त करना होता है। वह पाँच समिति और पाँच महाव्रतों का पालन करता हुआ संवर की साधना तो करता ही है, स्वाध्याय, ध्यान आदि के माध्यम से कर्मों की निर्जरा भी करता है।

आचाराङ्गसूत्र के प्रस्तुत सूत्र में कर्म-शरीर (कार्मण शरीर) को धुने का उपाय बताते हुए कहा गया है कि मुनि मौन को ग्रहण कर कर्म शरीर को धुने। मौन शब्द का प्राकृत में मूल शब्द 'मोणं' है जो प्राकृत की मुण् धातु से बना है। मुण् का अर्थ जानना या ज्ञान करना होता है। इस तरह 'मोण' ज्ञान का वाचक है और मौन शब्द मुनि के भाव का भी वाचक है, जिससे संयम का ग्रहण होता है। ज्ञान और संयम दोनों कर्म धुने में सहायक हैं। इनके साथ मौन का अर्थ मन, वचन एवं काया के स्तर पर शान्ति का अनुभव भी है, दूसरे शब्दों में इन तीनों की प्रवृत्ति का गोपन है। ज्ञान, संयम एवं मौन (जो वस्तुतः गुप्ति स्वरूप होने से संयम का सूचक है) से स्वाध्याय और ध्यान की साधना फलित होती है। स्वाध्याय एवं ध्यान से कर्म-निर्जरा होती है। इस त्रिविध

मौन साधना से क्रोध, अहंकार, मान एवं लोभ भी शान्त होते हैं, इन्द्रियाँ और मन तो शान्त होते ही हैं।

कर्मशरीर का उल्लेख आचाराङ्ग में होने से यह स्पष्ट हो जाता है कि इसमें कार्मण शरीर का कथन हुआ है और कार्मण शरीर को उसी प्रकार से धुना जा सकता है जिस प्रकार सघन रुई को धुनकर कोमल एवं हल्का किया जाता है। कर्मों को धुने से कर्मों की सघनता शिथिल हो जाती है एवं उनकी निर्जरा आसान हो जाती है।

कर्म शरीर को धुने वाला साधक मुनि विषय-भोगों में अनासक्त होता है। वह आहार भी प्रान्त (नीरस या पर्युषित) एवं रुक्ष करता है, साधु का सरस आहार के प्रति आकर्षण नहीं रहता।

सम्यक्त्वदर्शी वीर पुरुष संसार को तैरने में समर्थ होता है। सम्यक्त्वदर्शी का तात्पर्य है कि जो जैसा है उसको वह वैसा देखता एवं जानता है। जो सम्यक्दर्शी होता है वही मुनिभाव का पालन कर पाता है। इस सूत्र के पूर्ववर्ती सूत्र में कहा गया है-

जं सम्मं ति पासह तं मोणं ति पासह

जं मोणं ति पासह तं सम्मं ति पसाह।।

-आचाराङ्ग 1.5.3.34

जो सम्यक् को देखता है वह मौन को देखता है तथा जो मौन को देखता है वह सम्यक् को देखता है। अर्थात् सम्यक्दर्शी मुनि सत्य को जानकर ज्ञान, संयम, एवं मौन-ध्यान की साधना में आगे बढ़ता है। वही संसार को उत्तीर्ण करता है तथा मुक्त होता है और सभी प्रकार के पापों से विरत हो जाता है।

यहाँ उल्लेखनीय है कि आचाराङ्ग का यह सूत्र 'लोकविचय' नामक दूसरे अध्ययन के छठे उद्देशक में भी आया है। कर्मशरीर को धुने के लिए जब तप किया जाता है तो औदारिक शरीर भी क्षीण होता है।

शेषांश पृष्ठ 61 पर

## जैन धर्म सबका हितकारी

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म. सा.

लोग आरोप लगाते हैं कि जैनधर्म व्यक्ति का स्वार्थ साधता है, समाज-हित की बात नहीं कहता। वह व्यक्ति में स्वार्थीपन की भावना जगाता है। वह हर आदमी को अपनी आत्मा का कल्याण करो, अपना जीवन बनाओ, यह शिक्षा देता है। जैनधर्म समाज-हित की बात नहीं कहता है। लेकिन वस्तुतः ऐसा कहने वाले भाइयों में इस सम्बन्ध का सही ज्ञान नहीं है। वे वास्तविक मूल रूप को नहीं समझ रहे हैं। भगवान महावीर केवल व्यक्ति के व्यक्तिगत जीवन को ऊँचा उठाने की बात ही नहीं कह रहे हैं, अपितु साथ में व्यक्ति का अपना जीवन सुधारने के साथ विश्व-कल्याण का सन्देश भी दे रहे हैं। यहाँ थोड़ा-सा फर्क है। व्यक्ति अपना व्यक्तिगत जीवन निर्मल करता हुआ दूसरों के जीवन को निर्मल बनाता है। दुनिया के कई दूसरे मत, सम्प्रदाय, पार्टियाँ या राजनीतिक टुकड़ियाँ, जहाँ लोक हित, जन उपकार करने के मार्ग में व्यक्ति के व्यक्तिगत जीवन को निर्मल करना भुला देते हैं, वहाँ हमारी जैन परम्परा कहती है कि पहले खुद का खयाल रखो, ऐसा नहीं होगा तो पददलित हो जाओगे। विश्वकल्याण की बात करते जाओ, कहीं ऐसा नहीं हो कि दूसरों के हित की बात करते हुए घर में अन्धेरा ही रहे।

महावीर का कल्याण मार्ग केवल उपदेश के लिए ही नहीं है, स्वयं महावीर इस पर चले हैं। पहले स्वयं उन्होंने अपने जीवन को बनाया और फिर संसार को उपदेश दिया।

संसार को सुधारने के लिए उन्होंने कोई जाति नहीं पकड़ी, कोई प्रान्त नहीं पकड़ा, कोई देश नहीं पकड़ा। उन्होंने किसी पन्थ या सम्प्रदाय के दायरे

को नहीं पकड़ा। लेकिन उन्होंने अपनी आत्म-शुद्धि के साथ-साथ सारे विश्व के प्राणियों को उपदेश दिया। आर्यों में जो जैन कुल में जन्मे थे, पार्श्वनाथ की परम्परा में चल रहे थे उनको तो कल्याण के मार्ग पर चलाया ही, लेकिन जो अनार्य थे उनको भी धर्म के मार्ग पर लाकर आर्य बनाया, धर्मी बनाया, बाल को पण्डित बनाया, जिससे उनका इहलोक और परलोक सुधर गया। महावीर ने स्वयं ऐसा किया है और हमको भी इस तरह चलने का सन्देश दिया है। उसी रास्ते पर चलते हुए हमें पवित्र मंगल कार्य की आराधना करते हुए अपने जीवन को शुद्ध करके व्यक्ति-धर्म और समाज-धर्म दोनों का पालन करना है।

जैन परम्परा नियतिवादी नहीं है, कर्मवादी नहीं है, भाग्यवादी नहीं है। जैन परम्परा भगवन्तवादी भी नहीं है। वह आत्मवादी है, पुरुषार्थवादी है। इसलिए भगवान कहते हैं कि हे मानव! यदि तेरे को कर्मों के बन्धन काटने हैं तो अपने आप पुरुषार्थ करता जा। यदि तू अपने आप जगकर चला तो आवरण दूर हो जाएगा। लेकिन जगकर नहीं चला तो आवरण दूर होने वाला नहीं है।

भूल जाइये आप इस बात को कि जैनधर्म का ठेका अग्रवालों, खण्डेलवालों, ओसवालों, पोरवालों अथवा अन्य जैन कही जाने वाली जातियों ने ही ले रखा है। धर्म की साधना में वस्तुतः कुल का सम्बन्ध नहीं, मन का सम्बन्ध है। हाँ, इस दृष्टि से आप भाग्यशाली हैं कि जैनकुल में उत्पन्न हुए हैं। परम्परागत कुलाचार के फलस्वरूप आप सहज ही अनेक प्रकार के दुर्व्यसनों से, अनेक प्रकार की बुरी प्रवृत्तियों से बच गये हैं।

- 'नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं' ग्रन्थ से साभार

## जीवन-निर्माण की कला : स्वाध्याय

परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म. सा.

आज का विद्यार्थी बिगड़ी हुई मशीन को ठीक कर सकता है, बिगड़ा हुआ स्वास्थ्य ठीक करने का ज्ञान भी उसे है; पर बिगड़े हुए मन को स्वस्थ और शान्त बनाने की कला से वह अनभिज्ञ है। जीवन की विषमता और मन की अस्वस्थता से मुक्ति पाने का मार्ग है 'स्वाध्याय'। स्वाध्याय से ही ब्रह्मानन्द की अनुभूति हो सकती है। 'स्वाध्याय-शिक्षण शिविर' के अवसर पर प्रदत्त पूर्व प्रवचन।

-सम्पादक

### विद्या-कला के आद्य प्रवर्तक भगवान आदिनाथ

मानव समाज को सबल, सशक्त, स्वावलम्बी, सुसंस्कृत और सुसभ्य बनाने के लिए हजारों वर्ष पहले, हजारों ही नहीं, लाखों-करोड़ों वर्ष भी कह दूँ तो अतिशयोक्ति की बात नहीं होगी, क्योंकि जब भोगभूमि से, यौगलिक युग के जीवन से, मानव कर्मभूमि के जीवन में आया तभी से मानव को अपने स्वयं के पैरों पर खड़ा करने के लिए, आत्मनिर्भर बनाने के लिए आदिपुरुष भगवान आदिनाथ ने मानव-समाज को सर्वप्रथम विद्या-अध्ययन के मार्ग में प्रवृत्त किया, अध्ययनशील बनाया। उन्होंने देखा कि जब तक मानव अध्ययनशील नहीं बनेगा तब तक वह अपने जीवन का निर्वाह कैसे करेगा? अपनी रोजी-रोटी का प्रबन्ध कैसे करेगा? अपने परिवार का, अपने समाज और अपने राष्ट्र का विकास कैसे करेगा? अपने देश की प्रगति-उन्नति कैसे करेगा? इसीलिए मानव को अपने पैरों पर खड़ा करने के लिए, स्वावलम्बी बनाने के लिए उन्होंने मानव-समाज को शिक्षण दिया। मानव को स्वावलम्बी बनने का रास्ता बताया। यह सीधी-सी बात है कि अपने आपको अपने पैरों पर किस तरह खड़ा रखा जाए, किस तरह अपने आपको, अपने परिवार को, अपने समाज को, अपने देश को सुरक्षित रखा जाए; जब तक मानव इसके सही रास्ते को ही नहीं समझेगा तब तक कैसे इन सबकी रक्षा करेगा?

इस प्रकार आदिकाल में मानव को स्वावलम्बी बनाने के लिए अध्ययन का क्रम चला। वह अध्ययन

कृषि, गणित, लेखन और शिल्पकला के रूप में प्रस्तुत किया गया। वही अध्ययनक्रम आदिकाल से अब तक विविध कलाओं के रूप में चला आ रहा है। पहले भी चलता था और आज भी चल रहा है। आज भी करोड़ों-अरबों रुपये प्रतिवर्ष खर्च करके राज्य द्वारा अध्ययनक्रम को, शिक्षा व्यवस्था को चलाया जाता है। देश में कितने ही स्कूलों, कॉलेजों, विश्वविद्यालयों के द्वारा अध्ययन कराया जाता है, शिक्षा दी जाती है। राजकीय स्तर पर अध्ययन कराया जाता है, सार्वजनिक संस्थाओं के माध्यम से अध्ययन कराया जाता है और व्यक्तियों की ओर से भी अध्ययन कराया जाता है।

### प्रगति क्यों नहीं ?

आप सोचेंगे कि इस तरह सरकार, समाज और व्यक्तियों की ओर से अध्ययनक्रम बराबर चलता आ रहा है, फिर भी प्रगति क्यों नहीं हो रही है? इस प्रकार की जिज्ञासा होना स्वभाविक है।

मैं आपको बताऊँगा कि अध्ययन का क्रम तो निरन्तर चलता आ रहा है, पर उस अध्ययन में कहाँ क्या कमी रह गई है, जिसके कारण मानव-समाज प्रगति नहीं कर पा रहा है, अपने जीवन का विकास नहीं कर पा रहा है। यह हम सबके लिए एक गहन चिन्तन का विषय है।

### अध्ययन के दो रूप

अध्ययन के दो रूप हैं-एक तो 'अध्याय' और दूसरा 'स्वाध्याय।' पहले प्रकार के अध्ययन में कलाओं की, शिल्प की तथा उन सभी जीवन-निर्वाह करने योग्य उपायों की और तरीकों की शिक्षा दी जाती है जिनकी

शिक्षा प्राप्त कर मानव अपना और अपने कुटुम्ब का भरण-पोषण कर सके। मानव अधिकाधिक धन कमाकर किस प्रकार सम्पन्न बन सके, अपने जीवन को समृद्धिशाली बना सके; आज इस प्रकार का अध्ययनक्रम चल रहा है, इस प्रकार की शिक्षा दी जाती है। केवल इस प्रकार के अध्ययनक्रम से मानव सिर्फ जीवन-निर्वाह की शिक्षा पाकर अपने जीवन का निर्माण नहीं कर पाता। वह जीवन-निर्माण की बजाय केवल जीवन-निर्वाह की ही शिक्षा प्राप्त करता है।

### चिन्ता : केवल जीवन-निर्वाह की शिक्षा की

आज के युग में माता-पिता भी अपने बच्चों को शिक्षण देना प्रारम्भ करते समय उन्हें व्यावहारिक शिक्षण देने की, ऐसे शिल्प और कलाओं का शिक्षण देने की ही चिन्ता करते हैं, जिनका शिक्षण उनके जीवन-निर्वाह के लिए अधिकाधिक उपयोगी हो। वे इसी बात की चिन्ता करते हैं कि उनका बच्चा शिक्षा पाकर रोजी-रोटी कमाने योग्य बने, अधिकाधिक धनोपार्जन करने योग्य शिक्षा प्राप्त कर समाज में, देश में प्रतिष्ठित पद, राजकीय सेवा में उच्च पद प्राप्त कर सके। माता-पिता भी अपने बच्चों के जीवन-निर्वाह की तो चिन्ता करते हैं, पर किस प्रकार के अध्ययन से, किस प्रकार की शिक्षा दिये जाने से इनके जीवन का निर्माण और मानवता का विकास हो सकता है, इस बात की चिन्ता वे नहीं करते। सच पूछा जाए तो इस ओर माता-पिता का प्रायः ध्यान ही नहीं रहता।

बच्चे भी अध्ययनक्रम में यही सोचते हैं कि इस प्रकार के विषय की शिक्षा ली जाए, जिससे जीवन को सरलतापूर्वक अधिकाधिक सम्पन्न बनाया जा सके। साइन्स का शिक्षण लेना चाहिये, जिससे आगे चलकर मैं इन्जीनियर बन सकूँ, कलेक्टर बन सकूँ अथवा अन्य कोई ऐसा प्रतिष्ठित पद प्राप्त कर सकूँ जिससे कि मेरा जीवन-निर्वाह भली-भाँति शान के साथ चल सके।

मैं ऐसी शिक्षा प्राप्त करूँ जिससे अपने जीवन का निर्माण कर सकूँ, मानवता का विकास कर सकूँ, सदाचारी बनूँ, समाज को सदाचार के ढाँचे में ढाल सकूँ

अथवा एक विनम्र समाजसेवी बनकर जीवनभर समाज की सेवा करता रहूँ, सद्गुणाराधन से स्व-पर का कल्याण कर सकूँ। इस प्रकार की चिन्ता वाला बच्चा क्या कहीं खोजने पर भी आज के युग में मिलेगा? आप 100 बच्चों को एकत्रित कर पूछें, तो इस प्रकार की चिन्ता वाला, अपने जीवन-निर्माण की चिन्ता वाला बच्चा मुश्किल से ही मिलेगा और न किसी शिक्षक का ही इस ओर ध्यान रहता है।

संक्षेप में कहूँ तो जीवन-निर्वाह की शिक्षा की ओर आज सबका ध्यान है, जीवन-निर्माण करने वाली शिक्षा की ओर किसी का ध्यान नहीं। मैं इस अध्ययन अथवा अध्याय को, शिक्षणक्रम को 'शिक्षणशाला' की संज्ञा देता हूँ। इसमें अध्ययन या अध्याय हैं, पर स्व नहीं है। इस अध्याय शब्द के पीछे 'स्व' शब्द और बढ़ा दिया तो 'स्वाध्याय शिक्षण-शाला' नाम हो गया।

### दिमाग बड़े, पर दिल छोटे

आज अध्ययनशालाओं की कमी नहीं। मैं समझता हूँ कि बालिकाओं, कन्याओं और महिलाओं के शिक्षण की व्यवस्था भी इधर काफी बढ़ी है। पर एक कमी नज़र आ रही है। जीवन सूना-सूना दिखाई दे रहा है। बाहरी टीप-टाप तो है, पर जीवन भीतर से सूखा और सूना है। दिमाग बड़ा हो गया, पर दिल छोटा हो रहा है। आज पुराने-पिता और पितामहों से उनके बेटे, पोते दिमाग में इतनी विशाल जानकारी रखने वाले मिलेंगे कि उनके पिता और पितामह यदि उनकी बातें सुनकर दंग रह जाते हैं कि बच्चे विज्ञान की, मशीनरी की, कलपुर्जों आदि की कितनी बड़ी जानकारी रखते हैं। घर में बिजली का बल्ब खराब हो गया, स्विच खराब हो गया, बिजली में कोई खराबी हो गयी तो दादा को, पिता को उसे ठीक करना नहीं आता, पर लड़का चट-पट उसे ठीक कर देगा। ट्रांजिस्टर बिगड़ गया, ट्रांजिस्टर आदि आप रख तो लेते हैं, पर उसमें कोई खराबी हो जाए तो उसे ठीक करना आपको नहीं आता, पर लड़का उसे ठीक कर लेता है। नल बिगड़ गया तो आपको ठीक करना नहीं आता, लड़का उसे ठीक कर लेगा। क्योंकि आज का

साइन्स का विद्यार्थी, आज का मैकेनिक बच्चा इन बातों को जानता है, इन बातों का शिक्षण पाया हुआ है। इस प्रकार का शिक्षण पाया हुआ बच्चा, यदि घर में कभी नल-बिजली में कोई खराबी हो जाए तो स्वयं ही खोलकर ठीक कर लेता है। इसी तरह मशीनरी का काम सीखा हुआ लड़का किसी मशीन में कोई कल-पुर्जा खराब हो जाए, किसी तरह की और खराबी आ जाए तो उसको स्वयं ही ठीक कर देता है। कहने का मतलब यह है कि आज का शिक्षित मशीन ठीक कर लेगा, पर बिगड़ा दिमाग ठीक नहीं कर सकता।

जीवन-निर्वाह की शिक्षा पाया हुआ आज का पढ़ा-लिखा युवक बिगड़े हुए नल को ठीक कर सकता है, बिजली में कोई पुर्जा बिगड़ गया हो तो उसको ठीक बैठा सकता है, पर अपना बिगड़ा दिमाग ठीक नहीं कर सकता। दो भाइयों के बीच में झगड़ा हो गया, उनका जो मधुर सम्बन्ध था वह सम्बन्ध बिगड़ गया, तो उस बिगड़े हुए सम्बन्ध को वह नहीं सुधार सकता। पिता और पुत्र के बीच किसी बात को लेकर नाराज़गी हो गई, पिता से रुपया-पैसा अथवा अपना हिस्सा माँगने पर माँग पूरी नहीं हुई तो उस समय मन को कैसे सम्हालना, दिमाग के बिगड़े हुए स्नायुओं को कैसे ठीक करना; वह नहीं जानता।

इसका क्या कारण है? यही कारण है कि उसने अपने जीवन-निर्वाह की कला तो सीख ली, पर जीवन-निर्माण की कला नहीं सीखी, दिमाग के बिगड़े हुए स्नायुओं को स्वस्थ करने की कला नहीं पाई। अध्ययनक्रम में इन शिक्षण शालाओं के शिक्षण में यह एक बड़ी भारी कमी रह गई है। इसीलिए आज का शिक्षित मानव अपना जीवन-निर्वाह तो कर लेता है, पर जीवन-निर्माण, जीवन-विकास की दिशा में आगे नहीं बढ़ पा रहा है।

### सुख की कुञ्जी स्वाध्याय

इस कमी को दूर करने का, इस कमी की पूर्ति का उपाय क्या है? इस कमी की पूर्ति करने का उपाय

भगवान महावीर ने बताया है। उन्होंने कहा- “हे मानव! यदि तू अपने जीवन का निर्माण करना चाहता है, अपने आपको सुखी बनाना चाहता है तो स्वाध्याय कर-सज्जायम्मि रओ सया। सदा स्वाध्याय में रत रहे।”

### स्वाध्याय का विवेचन

स्वाध्याय का मर्म समझने के लिए आप लोग एकाग्रचित हो ध्यानपूर्वक सुनिये। ‘स्वाध्याय’ शब्द का हम पद-विभाग करेंगे तो इसमें दो शब्द पायेंगे। एक तो ‘स्व’ और दूसरा ‘अध्याय’। इस पद विभाग का दो प्रकार से अर्थ किया जाता है। एक तो ‘स्वस्य अध्ययन’ और दूसरा ‘स्वेन अध्ययन’। ‘स्वस्य अध्ययन’ का अर्थ है-अपने आपको अध्ययन करना, यह स्वाध्याय का एक अर्थ है। ‘स्वेन अध्ययन’ का अर्थ है-अपने द्वारा अपना अध्ययन करना अर्थात् स्वयं द्वारा स्वयं का अध्ययन करना अर्थात् अपने द्वारा अपने आपको पढ़ना। यह स्वाध्याय का दूसरा अर्थ हुआ।

स्वाध्याय का एक और तीसरा अर्थ मैं आपके समक्ष रखता हूँ। वह तीसरा अर्थ करते समय ‘स्वाध्याय’ पद का पद-विभाग इस प्रकार करना पड़ेगा-

‘सु’, ‘आङ्’ और ‘अध्याय’। ‘सु’ का मतलब है सुष्ठु अर्थात् सही विधि से, ‘आङ्’ का अर्थ है मर्यादापूर्वक और ‘अध्याय’ का अर्थ है पढ़ना, ज्ञान करना। तो इन तीन शब्दों से बने स्वाध्याय पद का अर्थ हुआ ‘अच्छे ज्ञान का मर्यादापूर्वक ग्रहण करना’ सु अर्थात् अच्छा ज्ञान इसलिए कहा है कि ज्ञान के दो भेद हैं एक तो मिथ्याश्रुत अर्थात् मिथ्याज्ञान और दूसरा सम्यक् श्रुत अर्थात् सम्यग्ज्ञान। सम्यग्ज्ञान में केवल रोजी-रोटी कमाने का शिक्षण ही नहीं, बल्कि जीवन को बनाने का भी यथार्थ शिक्षण होता है।

कोशकार अमरसिंह ने भी ज्ञान और विज्ञान ये दो पृथक् शब्द देकर दोनों का भेद इसी रूप में बतलाया है कि-मोक्षे धीर्ज्ञानमन्यत्र, विज्ञानं शिल्पशास्त्रयोः। अर्थात् जिसके द्वारा व्यक्ति अपने आपको पहिचान कर अपनी फीकी पड़ी हुई कान्ति को, अपनी मन्द पड़ी हुई



ज्योति को विकसित करे वह मुक्ति की ओर बढ़ाने वाली बुद्धि है-ज्ञान। और केवल शब्दज्ञान, कलाशिल्प आदि के टेक्निकल प्रैक्टिकल शिक्षण के द्वारा बाहरी चीजों का उपयोग करना और उनके द्वारा अपनी जीविका चलाना इसको कहा है 'विज्ञान।'

मोक्ष हेतु बन्धन-मुक्ति की भावना जिससे जाग्रत हो, वही वस्तुतः ज्ञान है। इसी को दृष्टि में रखते हुए स्वाध्याय का तीसरा अर्थ किया गया है-सु-आङ्-अध्याय अर्थात् अच्छे ज्ञान का मर्यादापूर्वक अध्ययन। अच्छे ज्ञान का-सम्यग्ज्ञान, सम्यग्दर्शन और सम्यक्चारित्र का-जिससे जीवन में प्रकाश हो, उस ज्ञान को 'आ' मर्यादा से अध्ययन करना अर्थात् पढ़ना।

**अध्ययन से आगे की शिक्षा : स्वाध्याय (अपना ज्ञान)**

यों देखा जाए तो इस धर्म-शिक्षण में, इस स्वाध्याय-शिक्षण में वे प्रौढ़ स्वाध्यायी भी होंगे जिन्होंने अध्ययन किया है, वे युवक भी होंगे जिनका शिक्षण-संस्थाओं में अध्ययन हो चुका है और ऐसे बच्चे भी हैं; जिनका शिक्षण संस्थाओं में अध्ययन चल रहा है, पर स्वाध्याय प्रशिक्षणार्थियों ने जो अध्ययन कर लिया है, उससे आगे का खुलासा, उससे आगे का महत्त्वपूर्ण ज्ञान अब यहाँ इस स्वाध्याय-शिक्षण में, इस धर्म-शिक्षण में मिल रहा है। स्वाध्याय क्या है? अध्ययन से आगे का खुलासा स्वाध्याय है। अध्ययन में इन्होंने सामान्य विषयों की, बाहर के पदार्थों की, व्यवहार की जानकारी की, पर अब यहाँ स्वाध्याय शिक्षण में अपने आपका ज्ञान करना है, आपके अन्दर जो ज्योति छिपी हुई है, उस ज्योति को चमकाना है। इस प्रकार की ज्योति स्वाध्याय के द्वारा अपने अन्दर प्रकट करना है, जिससे आप अपने स्वरूप को पहचान सकें। अपने सामर्थ्य, तेज और शक्ति को पहचानेंगे तो बाहर के जगत् में मन की वृत्तियों का भटकना बन्द हो जायेगा।

यह है स्वाध्याय-शिक्षण का महत्त्वपूर्ण स्वरूप, जो जीवन को अच्छा, सुन्दर बनाने वाली कला सिखाता

है। पुरुषों की कलाएँ बहतर बताई गई है। कहा है-

कला बहतर पुरुष की, उनमें दो सरदार।

एक जीव आजीविका, एक जीव उद्धार॥

बहतर कलाओं में से ऐसी बात चुनना है, जिसमें जीवन का उद्धार करने की क्षमता हो। इसी प्रकार चौदह विद्याएँ बताई गई हैं, उनमें से जीव का विकास करने वाली, आत्मा का उद्धार करने वाली विद्या को चुनना है। एक पद में चौदह विद्याएँ बताई गई हैं। वे चौदह विद्याएँ इस प्रकार हैं-

राग<sup>1</sup> रसायन<sup>2</sup> नृत्य गत<sup>3</sup> नटबाजी<sup>4</sup> वेदंग<sup>5</sup>।

अश्व चढण<sup>6</sup> व्याकरण<sup>7</sup> पुनि, जानत<sup>8</sup> ज्योतिष अंग॥

धनुष बाण<sup>9</sup> रथ<sup>10</sup>, हांकबो, चित्त चोरी<sup>11</sup> ब्रह्म ज्ञान<sup>12</sup>।

जल तिरबो<sup>13</sup> धीरज वचन<sup>14</sup>, ए चौदह विद्यानिधान॥

**प्राचीन और आधुनिक शिक्षा प्रणाली में अन्तर**

पुराने जमाने की शिक्षा पद्धति में पूरा ज्ञान बच्चों को दिलाया जाता था। आज बच्चों को पूरा (पूर्णांग) ज्ञान नहीं दिलाया जाता। आज की शिक्षा प्रणाली में बच्चों को थोड़ा-थोड़ा सभी बातों का बोध कराया जाता है। आज के पढ़ने वाले बच्चों के पढ़ने के विषयों की पुस्तकें ढूँढ़ेंगे तो कोई एक विषय नहीं मिलेगा। पाँच-छह विषयों की किताबें मिलेंगी। उनको हस्तकला की दृष्टि से भी शिक्षण देना आज आवश्यक समझा जाता है। कुछ साइन्स का, कुछ गणित का, कुछ व्याकरण का, कुछ समाजविज्ञान का, कुछ सामान्य विज्ञान आदि-आदि विभिन्न विषयों का ज्ञान कराना जरूरी समझा जाता है। पर आज 100 बच्चों को इकट्ठा कर उनमें से एक-एक विषय का स्वतन्त्र विद्वान् छाँटना चाहें, तो कितने बच्चे मिलेंगे? सम्भवतः एक भी नहीं। प्राचीन काल में बच्चों को पूर्णांग ज्ञान दिया जाता था। सब विद्याओं में पारंगत किया जाता था।

**चित्तचोरी और वित्तचोरी**

उपर्युक्त पद्य में जो चौदह विद्याएँ बताई गई हैं, उनमें तेरह विद्याएँ तो संसार चलाने की, लोक व्यवहार में

सबल-सफल बनने की बताई हैं। पर एक विद्या ब्रह्मज्ञान की आत्मा का उद्धार करने वाली भी बताई गई है।

‘चित्तचोरी और ब्रह्मज्ञान’ ये जो दो चीजें इस पद्य के तृतीय चरण में हैं, वे बड़े ही मर्म की हैं। उस समय शिक्षण प्राप्त करने वाले बालक-बालिकागण किस तरह दूसरे के मन को अपनी ओर आकर्षित करना-यह भी जानते थे। वे चित्तचोरी जानते थे, चित्तचोरी नहीं। चित्तचोरी तो आजकल के छोटे-छोटे बच्चे सिनेमा देखकर, जासूसी उपन्यास पढ़कर और कुसंगति में पड़कर सीख जाते हैं। आज के छोटे-छोटे बच्चे भी चित्तचोरी करते देखे-सुने जाते हैं। दो बच्चे दुनाली लेकर किसी मकान में घुसते हैं। एक पिस्तौल लिये बाहर खड़ा रहता है, दूसरा अन्दर; ताला तोड़ा और रुपया-पैसा जो मिला, उसे लेकर नौ-दो ग्यारह हो गये। कैसे ताले तोड़ना, कैसे दूसरों के माल पर हाथ साफ करना, यह आज के बहुत से बच्चे अच्छी तरह से जानते हैं।

### स्वाध्याय से जीवन-निर्माण

अगर घर में विग्रह हो रहा है, लड़ाई हो रही है तो विग्रह को-लड़ाई को किस प्रकार शान्त करना, इस बात की शिक्षा आज के अध्ययनक्रम में, आज की शिक्षा प्राणाली में, स्कूलों, कॉलेजों अथवा विश्वविद्यालयों में नहीं दी जाती। यह जीवन-निर्माण की, मानव-जीवन को विकसित और सुखी बनाने की शिक्षा स्वाध्याय-शिक्षण में ही दी जा सकती है। अर्थात् शास्त्र के चिन्तन-मनन से ही यह कला आ सकती है।

यदि आप चाहते हैं कि समय-समय पर दिल में आने वाली तपन, काम-क्रोध, अहंकार की उत्तेजना आपको सता नहीं सके। यदि आप चाहते हैं कि हमारा परिवार सन्तुष्ट रहे, हम सन्तुष्ट रहें, सुखी रहें, यदि आप ऐसा संसार बनाना चाहते हैं, जिसमें शान्ति, सन्तोष, सौहार्द, सहिष्णुता और सद्भाव का साम्राज्य हो, कलह, अशान्ति और अविश्वास का लेशमात्र अंश न हो तो आपको अपने बच्चों को ‘स्व’ का अध्ययन

कराना पड़ेगा, जिस ‘स्व’ को समझ लेने के पश्चात् सारी दुनिया फीकी प्रतीत होगी। इस ‘स्व’ तत्त्व को पा लेने के बाद आत्मा स्वस्थ, शान्त और निर्मल होगी।

हम ‘स्व’ के अध्ययन को स्वाध्याय शिक्षण कह सकते हैं। आज समस्त विश्व को स्वाध्याय-शिक्षा की आवश्यकता है। अगर मानव को मानवता से ऊँचा उठाकर देवत्व की ओर और अमरत्व की ओर अग्रसर करना है, इन बालकों को स्वावलम्बी, सदाचारी, सशक्त, सेवाभावी और सुखी बनाना है तो उन्हें स्वाध्याय-शिक्षा देकर स्वाध्यायी बनाना होगा। इन पाँच लक्ष्यों को पूरा करने के लिए अगर कोई साधन है तो स्वाध्याय-शिक्षण है।

### स्वाध्याय-सुधा से अन्तर्हृद को भर दो

हमें स्वाध्याय-शिक्षण में केवल इतने से ही सन्तोष नहीं करना है कि उनसे सामायिक का पाठ, प्रतिक्रमण का पाठ बुलवा दिया जाए। मैं इतने भर से बच्चों के भविष्य का कल्याण नहीं समझता। इन पाठों को कण्ठस्थ करवाकर बुलवाने के साथ-साथ उन पाठों के भावों को भी बच्चों के मन, मस्तिष्क और हृदय में, बच्चों के जीवन में उतारने की आवश्यकता है।

हमारा शिक्षक वर्ग भी, जिसने स्वाध्याय के माध्यम से जीवन का अमृत रस पाया है, वे उस रस को इन बच्चों के अन्तर में, बच्चों के जीवन में प्रवाहित करें। यहाँ अनेक बच्चे और युवक स्वाध्याय शिक्षण के लिए आये हैं। इस स्वाध्याय शिक्षण में सामायिक, प्रतिक्रमण, प्रश्नोत्तर, कविता, शास्त्रीय वाचन, व्याख्यान आदि अनेक विभागों में, कार्यक्रमों में शिक्षण होगा। सामायिक किस ढंग से करना यह एक विभाग में बताया जाएगा। यह पहले कार्यक्रम का विभाग आपको और बच्चों को ध्यान में लेना है।

### दुःखों का मूल : मन की विषमताएँ

जैनधर्म के तत्त्वज्ञान की और साधना की पहली भूमिका ही समत्वभाव को अन्तःहृदय में स्थापित करना है। सम्पूर्ण दुःखों का मूल, समस्त संकटों की जड़

मानव-मन की विषमता है। तन की विषमता नहीं, मन की विषमता है। इधर जो स्वाध्याय-शिक्षण में आये हुए शिक्षार्थी बैठे हैं, इनमें तन की विषमता आपको दिखाई देगी। दूसरी जो निवास की व्यवस्था है, उनमें भी विषमता हो सकती है। हो सकता है कोई एक मञ्जिले मकान में रहता हो, कोई दुमञ्जिले में तो कोई तिमञ्जिले मकान में रहता हो। रहने की भी विषमता हो सकती है। हो सकता है, किसी को रोज मिठाई मिले और किसी को किसी समय केवल चाय के गरम पानी से ही निर्वाह करना पड़े।

भगवान महावीर कहते हैं कि मानव को इन बाहर की विषमताओं के कारण दुःखों का मुकाबला करना पड़ रहा हो, यह बात नहीं है। वास्तव में मानव के दुःखों का मूल भीतरी विषमता है। भीतर की विषमताओं के कारण ही साधन पाकर भी मानव खिन्न-उद्विग्न दिखाई दे रहा है। यदि भीतर की विषमता नहीं हो और अड़ोस-पड़ोस के भाई को आप भाई समझ रहे हों, तो उसको भूखा देखकर उसे कुछ देने के लिए आपका मन स्वतः ही तड़पेगा या उसको आपसे कुछ माँगना पड़ेगा? आपका बच्चा सुबह से यदि भूखा है, या रूठ गया है, तो आप खुद उसे मनाकर, राजी करके खिलाओगे या वह बच्चा आपसे खाने के लिए माँगगा? भूखा तो है बच्चा और तड़प रहा है माता का मन। क्योंकि माता अपने बच्चे को भूखा देखना पसन्द नहीं करती। यदि इस प्रकार की मन की विषमता समाज में नहीं हो तो, क्या किसी को रोटी, मकान और कपड़े की चिन्ता से चिन्तित होना पड़ेगा? नहीं। जब मन की विषमता नहीं होगी तो रूखी-सूखी खाने वाला भी हँसता रहेगा और

हलवा खाने वाला भी हँसता रहेगा, लखपति भी हँसता रहेगा और गरीब भी हँसता रहेगा।

### विषमताओं को मिटाने का उपाय

प्रभु महावीर ने मानव मन की विषमता को मिटाने का उपाय सामायिक को बताते हुए फरमाया-“हे मानवों! हिंसा, झूठ, चोरी, कुशील और परिग्रह, इन सब दोषों से मन को मोड़कर एक घण्टे के लिए समता-साधना करो, अभ्यास करो, अपने भीतर जो विषमताएँ हैं, उन पर काबू पाओ और इस तरह अभ्यास करते-करते मन की विषमताओं को मिटा लो, सभी प्रकार की विषमताओं पर कण्ट्रोल करो। इस प्रकार का जो अभ्यास है, उसी का नाम सामायिक है।

इसीलिये सामायिक का कार्यक्रम सबसे पहले रखा गया है। हमारे इस स्वाध्याय-शिक्षण में पहला कार्यक्रम है-सामायिक। अध्यापक और बालक इस बात को ध्यान में रखें कि केवल पाठ रटकर ही सन्तोष नहीं करना है। इन बच्चों के मन में, मस्तिष्क में, हृदय में इन पाठों के भावों को भरना है। चार दिनों का कार्यक्रम है, इसमें बच्चे भी बड़े हर्ष और उल्लास के साथ आये हैं। माता-पिता ने भी इन अवकाश के दिनों में चल रहे इस कार्यक्रम में अपने बच्चों को स्वाध्याय का शिक्षण दिलाने में बड़ी दिलचस्पी और उत्साह दिखाया है। छोटे बच्चे और बच्चियाँ सदा नियमित रूप से स्वाध्याय की शिक्षा प्राप्त कर सकें, धार्मिक शिक्षण में आगे बढ़ते रहे, इस लक्ष्य को दृष्टिगत रखते हुए स्थानीय संघ ने स्थायी स्वाध्यायशाला की भी स्थापन की है। यह सब प्रमोद का विषय है।

### Guiding Quotes

Jagrit Jain

- All unhappiness is caused by comparison.
- Whatever begins in anger, ends in shame.
  - Common people do not pray, they only beg.
  - When you lose all, you discover the self.
  - A bad workman, always flames the tools.

-17/729, CHB, Jodhpur-342008

## चातुर्मास का महत्त्व

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा.

महावीर भवन, लाखन कोटड़ी, अजमेर के वर्षावास में 29 जुलाई, 1996 को फरमाया गया यह प्रवचन श्री सौभाग्यमलजी जैन, अलीगढ़-रामपुरा द्वारा संकलित एवं संशोधित किया गया है। यहाँ चातुर्मास शब्द वर्षावास का द्योतक है, पाँच माह का वर्षावास भी लोकव्यहार में चातुर्मास कह दिया जाता है।

-सम्पादक

हम और आप चातुर्मास के परम पुनीत पावन प्रसंग से लाभान्वित हो रहे हैं। चातुर्मास, साधनों का सदुपयोग कर साधना के मार्ग पर चरण बढ़ाने का सन्देश लेकर आया है। हर पंथ, हरेक परम्परा के सन्त, लोकमान्यता, धर्म और दर्शन चातुर्मास की प्रमुखता, पवित्रता और प्रगतिशीलता को मान्यता देते हैं।

### जल की महत्ता

जीवन सन्दर्भ को लेकर प्रमुखता का कारण 'जल' रहा है, क्योंकि-जल जीवन है। एकेन्द्रिय से लेकर पञ्चेन्द्रिय तक के जितने भी प्राणी हैं, उन सबका जीवनाधार जल है। जहाँ जल है, वहाँ विकास है। जहाँ जल नहीं है, वहाँ सब तरह से हास है। प्राचीन पहेलियों में एक पृच्छा की जाती थी कि बारह में से चार निकाल दिए जाएँ तो कितने बचे? सामान्य रूप से इसका उत्तर आठ ध्यान में आता है। लेकिन जब प्रश्न के भाव की दृष्टि से समाधान किया गया तो उत्तर मिला कि बारह में से चार निकाल देने पर कुछ नहीं बचता है। भारतवर्ष, रूस, फ्रांस आदि देशों की भूमि का मुख्य आधार जल है। जल नहीं तो अन्न नहीं है, जीवन नहीं है। जल के अभाव ने ही थली प्रान्त के लोगों को अपनी जन्मभूमि छोड़ने के लिए मजबूर कर दिया। पहले मारवाड़ के हर क्षेत्र और छोटे-छोटे गाँव में सैकड़ों की संख्या में महाजन मिलते थे। जब वहाँ चातुर्मास होता था तो बड़ी संख्या में आराधना होती थी। वर्तमान में नाममात्र के महाजन भी नहीं मिलते हैं। किशनगढ़ और मदनगंज में रहते हुए एक भाई का आना हुआ। पूछने का प्रसंग आया तो उसने कहा कि महाराज! मारवाड़ में हम कालू

के हैं। अब कालू कहाँ है और हमारा मकान कहाँ है, यह भी मालूम नहीं है। पीढ़ियाँ बीत गईं। अनेक स्थानों पर हवेलियाँ और मकान बड़े-बड़े हैं, धन की कोई कमी नहीं है, लेकिन जल नहीं है। इसलिए लोग अपने मकान, दुकान और नगर को छोड़कर दूसरे प्रदेशों में जाकर बस रहे हैं।

शास्त्रों में नगर के वर्णन मिलते हैं। पूछा गया कि ग्राम, नगर की शोभा किसमें है? तो उत्तर दिया गया कि-'नगरी सोहंती जलमूलवृक्षा।' जहाँ जल, ज्ञान और सम्पत्ति हैं, वहाँ नगर की शोभा है। इसलिए प्रमुखता से प्रत्येक प्राणी के जीवन का आधार जल है। चातुर्मास में जल की प्राप्ति होती है, इसलिए प्रत्येक परम्परा चातुर्मास को महत्त्व देती है।

उष्णता भटकाती है, शीतलता अटकाती है और आर्द्रता प्रवाहमान करती है। परमाणु में चार स्पर्श कहे गये हैं। जब-जब उष्ण परमाणु पुद्गल बढ़ते हैं, वे गतिशील बनते हैं। और इतने गतिशील बनते हैं कि एक समय में अधोलोक से ऊर्ध्वलोक में चले जाते हैं। उष्णता के कारण गतिशीलता के साथ ही विस्फोटक शक्ति भी पैदा हो जाती है। शीतलता से अकड़न की स्थिति आती है। जल जीवन में प्रवाह पैदा करता है। वीतरागवाणी रूपी जल आत्मा को आगे बढ़ाने की प्रेरणा देता है। यह प्रवाह विकास की ओर बढ़ना चाहिये।

### आत्मा का चहुँमुखी विकास

आत्मा के चहुँमुखी विकास के लिए सभी परम्पराओं के निर्ग्रन्थ चार माह के लिए एक ही स्थान पर

स्थिरवास करके साधना करते हैं। उनकी साधना का मुख्य हेतु दया और अहिंसा की आराधना है। इस आराधना के लिए द्रव्य रूप में गमनागमन का निषेध किया जाता है। भगवान महावीर ने अपने अन्तिम वर्षाकाल में श्रमण और श्रावक के लिए जीवों की यतना तथा धर्म की साधना का मंगल सन्देश दिया।

जीव की यतना कर लीजे रे, जीव की यतना कर लीजे।

आयो वर्षाकाल, धर्म की करणी कर लीजे।।

मुनिवर तज संचार, काल वर्षा में स्थिर रहते।

उत्तम श्रावक धर्मी भी नहीं, बिन मतलब भमते-रे।।

जीव की यतना कर लीज रे

दान, शील, तप, भाव आराधो, विमल भाव धरके।

'गजमुनि' सत्य समझ कर सेवा, प्राणी सब जग के-रे ।।

जीव की यतना कर लीजे रे

वर्षावास बाहर में संकोच और भीतर में विस्तार करने का समय है। वर्तमान में वर्षाकाल में बाहर में भटकना, अकारण घूमना, पिकनिक गोठ आदि बढ़ गये हैं, जो असंख्य जीवों की विराधना का कारण बन रहे हैं। यह समय बाहर भटकने के लिए नहीं है, अन्तर्यात्रा करने के लिए है। वर्षाकाल में सभी अपनी-अपनी परम्परा का निर्वहन करते हैं। एक परम्परा के अनुसार आषाढ़ शुक्ल एकादशी को देवों को शयन करा दिया जाता है। इसलिए इसका नाम उन्होंने देवशयनी रखा है। आषाढ़ शुक्ल एकादशी से कार्तिक शुक्ल एकम तक विवाह-शादी के कार्य निषिद्ध रहते हैं। ग्रन्थों के अनुसार चातुर्मास काल में लड़ाई-झगड़े, युद्ध आदि भी वर्जित रहते थे। इसे ज्योतिषीय कारणों से मानें अथवा समाज की व्यवस्था के रूप में, चातुर्मास काल में पूरा समय आत्म-साधना के लिए समर्पित होना चाहिये। इस परम्परा को आज भी अधिकांशतः निभाया जा रहा है।

चातुर्मास में जितना गमनागमन कम होगा, संसार के कार्य जितने कम होंगे, उतनी ही विराधना कम होगी। इसलिए एक-एक कदम देखकर रखने की जरूरत है। वर्षा रुकने पर आप गली, मार्ग या चौराहे पर निकल

जाइये, आपको सैकड़ों तरह के जीव-जन्तु, कीड़े-मकोड़े आदि प्राणी देखने को मिलेंगे। यदि यतना नहीं रखी तो उन जीवों की विराधना होगी। इसलिए जीवों की जितनी रक्षा हो, उतना ही अच्छा है। जो लोग जितने ज़्यादा अमीर हैं, उतनी ही ज़्यादा हिंसा के भागीदार बन रहे हैं। घर में धमाधम कदम उठाकर चल देंगे। घर से स्थानक और सब्जीमण्डी तक जायेंगे तो बिना साधन नहीं जायेंगे। वे बिना साधन घर से बाहर ही नहीं निकल पाते हैं तो जीवों को कैसे बचाएँगे। पैदल चलने वाले व्यक्ति यदि रास्ते में जीवों की पंक्ति निकल आए तो अपने कदम बचाकर रखेंगे। परन्तु वाहन वाले, जीवों को नहीं बचा सकते हैं।

वर्षा समाप्त होने के बाद जीव बाहर निकल आते हैं। ऐसे समय में जो बिना काम गमनागमन करते हैं, वे हिंसा के भागीदार बनते हैं।

**सन्तों के साथ श्रावकों के लिए भी चातुर्मास**

यह चौमासा केवल सन्तों के लिए ही नहीं है, अपितु श्रावकों के लिए भी है। सत्य और शील पर श्रद्धा रखने वाले सम्यग्दृष्टि के लिए भी है। वर्षाकाल में आवागमन करना जीवों की विराधना का कारण है। इस समय आवागमन से बचकर पौषध, तपस्या आदि क्रियाओं के माध्यम से जीवदया का लक्ष्य होना चाहिये। इसके अलावा वर्षाकाल में व्यापारिक गतिविधियाँ भी कम होती हैं। आखातीज की तरह नहीं होती हैं। फलस्वरूप श्रावक भी धर्म की कमाई करते हैं, तो यह समय भटकने का नहीं है।

मैंने आचार्य भगवन्त (पूज्य श्री हस्तीमलजी म.सा.) के चरणों में रहते हुए अनेक ऐसे धर्मनिष्ठ परिवारों को देखा है, जो चौमासे में अपना सब सांसारिक कार्य छोड़कर आचार्यश्री की सेवा में उपस्थित होकर सन्तों की तरह संवर में बैठने की कोशिश करते हैं। सतारा, औरंगाबाद, धूलिया आदि न जाने कहाँ-कहाँ से श्रावक, परिवार सहित आते और सन्तों की सेवा के साथ धर्म की आराधना करते थे। हम

जोधपुर से विहार करके बावड़ी गये। वहाँ घरों की संख्या बहुत कम थी। लगभग बीस-पच्चीस घर होंगे। जब उन्हें सन्तों के आगमन का समाचार मिला तो संघ मन्त्री ने दर्शन करके कहा- “भगवन्! जब तक यहाँ सन्त रहेंगे, तब तक दुकानें नहीं खुलेंगी। मन्त्री की प्रेरणा से, चातुर्मास अथवा पर्युषण का अवसर नहीं होने के बावजूद धर्म की अच्छी आराधना हुई। बीस घरों के बीस श्रावक और श्राविकाएँ रोज मिलते। सामान्य चतुर्दशी का मौका आया तो लोगों ने दयाव्रत की आराधना कर ली। पाँच दिन के लिए गये थे और इक्कीस दिनों तक वहाँ रहे और इक्कीस दिनों तक लोगों ने वहाँ दुकानें नहीं खोली।

#### चातुर्मास में निषिद्ध

आज लोक व्यवहार ऐसा हो गया कि आदमी सहजता में काम करके नहीं चल रहा है। पहले चौमासे में शादी-विवाह नहीं होते थे, युद्ध की विभीषिकाएँ भी नहीं होती थीं। लेकिन आजकल वर्जनीय कार्य भी हो रहे हैं। पहले कुछ नीतियाँ थीं। युद्ध के भी नियम होते थे। प्राचीन इतिहास को देखो तो मालूम होगा कि भाले वाले, भाले वालों के साथ; तीर वाले, तीर वालों के साथ; हाथी-घोड़े वाले, हाथी-घोड़े वालों के साथ लड़ाई करते थे। वर्तमान में युद्ध तोप और बन्दूक से होता है। सुनते हैं कि आजकल सोये हुए लोगों पर बम फेंक दिये जाते हैं। दुकान पर जाने वाले को, राहगीर को मार दिया जाता है। मर्यादा और नैतिकता के मानदण्ड ही नहीं रहे। पहले सौ तरह के अपराध करने वाला भी यदि मुँह में तिनका धर लेता तो उसे माफ कर दिया जाता था। लेकिन आजकल काल-मर्यादा और परम्पराओं का आदर कम दिखाई देता है।

#### तपस्या की अनुकूलता

चातुर्मास काल के सन्दर्भ में एक बात और है कि इस समय जठराग्नि मन्द होती है यानी पाचन शक्ति कमज़ोर होती है। गर्मी में कोई तपाराधना करना चाहे तो कठिनाई आती है। लेकिन चातुर्मास-काल में पाचन

शक्ति कम होने से बच्चे, बूढ़े, बीमार, स्वस्थ कोई भी तप करना चाहें तो सहज कर सकते हैं। जब शरीर में पाचन की तेजी होती है तो भूख बहुत लगती है। जब गर्मी की उष्णता होती है तो पानी ज़्यादा चाहिये। गर्मी में कभी-कभी निद्रा आने लग जाती है, लेकिन वर्षावास में ऐसा नहीं होता है। इसलिए चौमासे का यह पवित्र समय ऐसा है कि तप के साथ ज्ञान की आराधना करनी चाहिये।

#### कषाय-विजय के साथ करणीय कार्य

वर्षावास में क्या करना चाहिये, इस सम्बन्ध में आचार्य भगवन्त (पूज्य श्री हस्तीमलजी म.सा.) ने लावणी की तर्ज में फरमाया-

चार कषायों के बन्धन तोड़ो,

विकृत कचरे से मुख मोड़,

नाता मोक्ष से तुम जोड़ो।

करके दया-धर्म आराधन, शिव सुख पावना रे....||1||

चौदस चौमासे की आई,

करलो धर्म-ध्यान सुखदाई,

जो है श्रेष्ठ जीव मन भाई॥

तप-जप की लड़ी लगाकर, कर्म खपावना रे.....||2||

आचार्य भगवन्त ने फरमाया कि ये चार महीने चार कषाय को घटाने के लिए हैं। चार संज्ञाओं से दूर हटने के लिए हैं। स्त्रीकथा, भक्तकथा, राजकथा और देशकथा; इन चार विकथाओं से हटने के लिए और चार धर्मकथाओं से जुड़ने के लिए और चार मंगल की आराधना करने के लिए हैं। मोक्ष के चार मार्ग हैं-ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप। चातुर्मास में इन चारों की यथा शक्ति आराधना करनी चाहिये। ये चार महीने खंती, मुत्ती, अज्जवे, मद्दे की आराधना के हैं। इन आराधनाओं से क्षमाभाव बढ़ेगा, सरलता आयेगी और तन-मन की तपन कम होगी। उष्णता घटेगी तो वीतराग वाणी का अमृतपान करने में आनन्द आयेगा।

आप अपने क्रोध, मान, माया और लोभ को काबू में कीजिये। आग में ईन्धन डालने से आग बढ़ती है,



फैलती है। इसके विपरीत पानी से आग बुझ जाती है। तो यह अवसर कषायों के ताप को घटाने का है। यदि अभी-भी अन्दर का ताप कम नहीं होगा तो फिर कब कम होगा? चार कषायों को घटाइये और चार गुणों को बढ़ाइये। ये चार महीने बड़े सौभाग्य से मिले हैं। अपने शरीर को अकारण भटकाइये मत और संचरण बन्द कीजिये। आज से तीर्थङ्कर भगवान की आज्ञा में विचरण करने वाले; महाव्रत, समिति, गुप्ति की आराधना करने वाले जितने भी साधु-साध्वी हैं, वे सब आज के प्रतिक्रमण के बाद एक स्थान पर प्रवास करेंगे। इस दौरान ढ़ाई कोस यानी पाँच मील के सीमा क्षेत्र में आवश्यक कार्यों के लिए उनका आना-जाना रहेगा। सीमित क्षेत्र में गमनागमन भी अत्यन्त यतना पूर्वक किया जाएगा। क्योंकि वर्षाकाल में जीवोत्पत्ति बहुत बढ़ जाती है।

#### यतनापूर्वक जीवन रक्षण

श्रमण-श्रमणियों को ही नहीं, गृहस्थवर्ग को भी जीवों की यतना करनी चाहिये। वर्षाकाल में होने वाली लीलन-फूलन से बचकर चलना चाहिये। ऐसी लीलन-फूलन हमारे आसपास, घर की छतों पर देखी जा सकती है। पुराने श्रावक छोटे-छोटे जीवों की रक्षा के प्रति भी बहुत सजग रहते थे। रामपुरा के श्रावक थे श्री

केसरीमलजी मूथा। वे ऐसे श्रावक थे, जो बारह महीने धर्मस्थान में रहते थे और साधना करते थे। जीवों की यतना के प्रति वे बहुत सजग थे। लेकिन आजकल तो पञ्चेन्द्रिय जीवों के प्रति दयाभाव में भी अभाव नज़र आता है।

#### जागने का अवसर

चातुर्मास का यह पावन अवसर जागने और जगाने के लिए आया है। आप सुनने के लिए ही नहीं सुनें, लोकव्यवहार निभाने के लिए ही नहीं सुनें; अपितु आराधना करने के लिए सुनें, सुनकर गुनें और आचरण के पथ पर चलने का पुरुषार्थ करें। यदि इन दिनों में भी आस्रव नहीं छूटेंगे; संवर और सामायिक की आराधनाएँ नहीं होंगी तो फिर कब होंगी?

बन्धुओं! आप सारे आरम्भ-समारम्भ छोड़कर यहाँ उपस्थित हो रहे हैं तो एक कदम और आगे बढ़ाते हुए संवर और सामायिक में भी आगे बढ़िये। प्रकृति ने तो ठण्डक कर दी है, परन्तु आप ममता छोड़कर समता की ठण्डक कब लायेंगे? जब लायेंगे तो समझिये कि आपके लिए सोने का सूरज उगा है। यह चातुर्मास सबको कुछ न कुछ करने का सन्देश दे रहा है। जो धर्म की उपासना में लगेंगे, वे आगे बढ़ेंगे।

### साधना का महत्त्व

#### श्रीमती कमला सिंघवी

जीवन में साधना की उपयोगिता है। साधना जीव को शिव बनाती है, साधक को साध्य तक पहुँचाती है। अपनी समस्त शक्तियों को विकास की दिशा में सुनियोजित कर देना ही साधना है। किसी भी साधना की सफलता के लिए व्यक्ति की पूर्ण एकाग्रता और समर्पण आवश्यक है। इसके द्वारा ही शक्ति का संवर्धन और संयोजन होता है। जैसे एक मूर्तिकार पत्थर से मूर्ति बना लेता है। वह छैनी और हथौड़ा लेकर पत्थर का व्यर्थ भाग हटाता है तो पत्थर में रही हुई मूर्ति स्वयं प्रकट हो जाती है।

इसी तरह आत्मा के भीतर भी 'परमात्मा' हैं। सिर्फ संयम रूपी छैनी और हथौड़े से व्यर्थ की परतें हटानी है। स्वाध्याय, ध्यान, वैयावृत्त्य, मौन भी साधना ही है इनके साधन से कर्म की महान् निर्जरा होती है।

पारस पत्थर की भाँति साधना जीवन रूपी लोहे को मूल्यवान् स्वर्ण बना देती है। अल्प समय की साधना से भी साधक साध्य को प्राप्त करता है। साधना ही सिद्धि तक पहुँचाती है। इसमें स्वयं को साधा जाता है।

-पूर्व जैन अध्यापिका, दत्तमड्डी गल्ली,  
भड़गाँव (महाराष्ट्र)

## प्रदर्शन नहीं आत्मदर्शन करें

श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा.

आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के सुशिष्य श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा. ने 12 जनवरी, 2020 को जैन मन्दिर, अजीत कॉलोनी, जोधपुर में प्रवचन फरमाया, जिसका संकलन जिनवाणी के सह-सम्पादक श्री नीरतनमलजी मेहता, जोधपुर ने किया है।

-सम्पादक

### धर्मानुरागी बन्धुओं!

खींच लाती भावना भगवान को,  
खींचता ज्यों धर्म आस्थावान को।  
वीर प्रभु मुड़कर अगर आते नहीं,  
कौन लेता चन्दना के दान को॥

एक नया-नया अफसर बनकर ऑफिस में पहुँचा।  
अफसर बनने का उसे अभिमान था तथा वह प्रारम्भ से  
अपना रूतबा जमाना चाहता था। होता है ऐसा। आपके  
घर में भी जब नई-नई वधू आती है तो शुरू से अपना  
रूतबा जमाने के लिए क्या-कुछ नहीं करती।

रूतबा जमाना क्या? मतलब, अपना प्रभाव  
जमाना। अपने आपको वैसा दिखाना कि मैं सब-कुछ  
जानती हूँ। वह एक तरह से प्रदर्शन है। प्रदर्शन नहीं होना  
चाहिए। होना चाहिए वास्तविक सत्य।

मुझे एक घटना स्मृति में आ रही है। किसी भाई  
की नई शादी हुई। दोस्तों ने कहा- 'तुम्हें अपनी पत्नी को  
शुरु से दबाकर रखना चाहिए।'

उसने पूछा- 'दबाना कैसे? दबाने के लिए क्या  
करना होगा?'

दोस्तों ने कहा- 'दबाने के लिए तुम्हें धमकी देनी  
होगी। तू बात-बात में पत्नी को धमकी देते रहना।  
धमकी देते समय पीछे से बोलना-नहीं किया तो.....।'

सर्दी का समय था। सुबह-सुबह नहाने के लिए  
गर्म पानी चाहिए। तुम पत्नी से कहना-पानी गर्म कर दो  
नहीं तो.....।

पत्नी ने एक दिन सुना। दूसरे दिन भी सुना। तीसरे  
दिन भी वही सुनने को मिला।

पत्नी ने कहा-गर्म पानी नहीं किया तो क्या  
करोगे?

पति बोला- 'मैं ठण्डे पानी से नहा लूँगा।'

आप में से बहुतों की यही स्थिति है। आप  
दिखावा खूब करते हैं। जो भी दिखावा करते हैं वे  
भटकते हैं।

हाँ, तो हमारी बात चल रही थी-वह नया-नया  
अफसर बनकर काम करने बैठ गया। इतने में एक  
आदमी आया और उसने पूछा- 'सर, क्या मैं अन्दर आ  
सकता हूँ?' वह अफसर जवाब देने के बजाय करीब  
आधे घण्टे तक फोन पर बातें करता रहा। उसने आगत  
आदमी से कहा- 'मैं सी.एम. से बात कर रहा था, हाँ  
तुम बोलो-क्यों आए हो?'

आगत आदमी बोला- 'मैं तो फोन का कनेक्शन  
करने आया हूँ ताकि आपका फोन चालू हो जाए।'

यह तो एक दृष्टान्त है, पर भगवान कह रहे हैं-  
प्रदर्शन मत करो, करना है तो आत्म-दर्शन करो।

आत्म-दर्शन करने वाला भगवान को बुलाता है।  
आपको भी यदि परमात्मा को बुलाना है तो भक्ति और  
श्रद्धा के साथ बुलाना होगा। हर व्यक्ति में यह चाह जगे  
कि मुझे भगवान के दर्शन करने हैं। आपने कई मेले देखे  
हैं, कई खेल देखे हैं। जोधपुर में आपने उम्मेद भवन  
पैलेस देखा है, मेहरानगढ़ देखा है, पर क्या कभी  
भगवान भी देखा है?

आपने पदार्थों का खूब परिचय कर लिया,  
परमात्मा का परिचय किया या नहीं? आप समकित के  
67 बोल बोलते हैं उसमें आता है-पहले बोले श्रद्धान

चार। आपने पदार्थों का इतना परिचय कर लिया कि बुद्धि ऑवर-लोड हो गई, अब पदार्थ के बजाय परमार्थ का परिचय करना है। परम अर्थ अर्थात् तत्त्वार्थ समझ में आया तो व्यक्ति परमात्मा से जुड़ेगा, पर वह पदार्थों में उलझकर रह गया।

आप पुण्यशाली हैं कि आप व्यस्त होते हुए भी यहाँ जिनवाणी श्रवण करने के लिए आए हैं। आपने जरूर सोचा होगा-महाराज आए हुए हैं, चलो एक-दो दिन प्रवचन सुन लेते हैं। रोज-रोज तो आना नहीं होता। रोज-रोज आना नहीं होता इसमें बड़ा कारण है पुण्य के जोर की कमी। आप यहाँ आए इसलिए आप साधुवाद के पात्र हैं।

वीतराग-वाणी सुनने वाला आत्म-दर्शन की ओर बढ़ता है। अभी-अभी आप श्री यशवन्तमुनिजी महाराज से सुन गए-आत्मदर्शन ही परमात्म-दर्शन है। आत्म-दर्शन में समय लगता है। अभी समय सही चल रहा है। सुनने, देखने और करने के लिए समय ठीक चल रहा है। संसार में घड़ी ठीक करने वाले तो खूब मिल जाएँगे पर समय को ठीक करने वाला और कोई नहीं है। मात्र स्वयं के कर्म ही समय को ठीक कर सकते हैं।

समय सही चल रहा है तो आप-हम परमात्मा की भक्ति करें, पूरी शक्ति से भक्ति करें। भक्ति हो वह भी अनुभूति के साथ हो।

समय की बात चल रही है तो ध्यान देने की बात है कि समय खराब हो तो अपने भी पराए हो जाते हैं और समय सही हो तो पराए भी अपने बनने को तैयार रहते हैं। अमुक कौन? तो जवाब आता है-वह तो मेरे मामा और मामा का बेटा है। दूर का रिश्ता नज़दीक का बन जाता है और समय खराब हो तो नज़दीक का रिश्ता भी इतना दूर का हो जाता है कि पहचानना मुश्किल होता है।

समय ठीक करने वाला कौन? समय ठीक करना हो तो इसके लिए परमात्मा की तो भक्ति हो और स्वयं की अनुभूति हो। मुझे मेरा समय अच्छा करना है तो

परमात्मा के दर्शन करने ही हैं। परमात्मा के दर्शन कैसे? आपको पावटा में 9 जनवरी को निवेदन किया कि दो बातें होंगी तो प्रभु दर्शन हो जायेंगे। वे दो बातें कौनसी?

आँख में हो आँसू, होठों पर हो नाम  
वहीं आयेंगे भगवान्।

करो भरोसा बन जायेंगे, बिगड़े सारे काम।।

एक-आँख में आँसू हों और दूसरा होठों पर नाम हो। आपकी जितनी-जितनी श्रद्धा होगी उतने-उतने भगवान आपके नज़दीक होंगे। क्यों? तो नाभि की आवाज़ नभ तक जाती है।

आप गाते तो कई हैं, लेकिन एक गाना गले से होता है तो एक नाभि से। गले की आवाज़ कान तक पहुँचती है तो नाभि की आवाज़ प्राणों तक जाती है। आपने एस. सुब्बालक्ष्मी जो तमिल गायिका है, उसका गीत सुना होगा। वह भजन गाती है। उसके भक्ति गीत पूरे ऑडिटोरियम में सब ध्यान से सुनते हैं।

समय ठीक करने वाला स्वयं मैं हूँ? मेरे कर्म, मेरे अनुभव समय को सही करेंगे। समय सही है तो भगवान के दर्शन हैं। भगवान के दर्शन करने के लिए आँख में आँसू हों। आँसू भी दो तरह के होते हैं। एक हैं दुःख के आँसू और एक है प्रसन्नता के आँसू। भगवान के दर्शन करने हैं तो आँख में आँसू और होठों पर नाम होना चाहिए।

आज कई घरों में गोचरी जाते हैं तो हम देखते हैं। मैं बहिन को श्राविका तो नहीं कहता। हाँ, वह महिला जरूर है जो मोबाइल पर फुल आवाज़ में गाना सुनते-सुनते खाना बनाती है। एक तरफ गाना चल रहा है तो एक तरफ वह खाना भी बनाती है। आज तो कई लड़कियाँ तो कान में इयरफोन लगाकर गाने सुनती हैं। वे घर का काम भले ही वह झाड़ू-पोंचे का है, तो भी काम करते-करते इयरफोन से सुनती जाती हैं। पुराने जमाने में घर-घर में बहिनें घड़ी पीसती-पीसती राम-नाम की धुन बोला करती थीं।

बन्दे भव सागर तिर जाएगा,  
मुख से अरिहन्त-अरिहन्त गाए जा।

संसार-सागर को तिरना है तो भगवान को भजना होगा। जो भी भगवान को भजेगा, वह भवसागर पार करेगा। पर आपको ध्यान रखना है कि प्रदर्शन नहीं हो। प्रदर्शन नहीं होगा तो आत्म-दर्शन होंगे ही होंगे। नहीं तो 'ताकत चवन्नी की खर्चा एक रुपये का' वाली कहावत रह जाएगी।

आज आदमी प्रदर्शन का शौकीन बनता जा रहा है। वह घर से भले ही राबड़ी खाकर आया है तो भी मूच्छों पर दो-चार चावल लगाकर यह बताने की कोशिश करता है कि मानो वह खीर खाकर आया है। आज आदमी अपने-आपको बड़ा दिखाना चाहता है, पर ध्यान रखना-प्रदर्शन केवल दिखावा है। आत्म-दर्शन कैसे होगा? कवि के शब्दों में कहूँ-

खींच लाती भावना भगवान को,  
खींचता ज्यों धर्म आस्थावान को।  
भावना का मान हो, सम्मान हो,  
वस्तु मत देखो, न देखो स्थान को॥  
भक्त से भगवान दूर नहीं हैं। श्रद्धा-भक्ति से

स्मरण करने पर भगवान दौड़े-दौड़े चले आएँगे। श्रद्धा की ज्योति जल गई तो घर बैठे भगवान के दर्शन हो जाएँगे।

आप सबकी ऐसी भावना जगे। आपकी आँखों में आँसू हों और होठों पर नाम हो तो भगवान आपसे दूर नहीं रह सकते। हम आपके घरों में गोचरी जाते हैं, कहते हैं-श्राविकाजी बहराओ तो उनका जवाब होता है- "महाराज! आज मेरी पुण्यवानी खिली है जो आप पधारे हैं।" आप भगवान को हाज़िर करने के लिए नित्य आगे बढ़ें। आपने कई बार सुना है कि एक नमस्कार मन्त्र यदि श्रद्धा-भक्ति से बोला जाए तो करोड़ों भव के कर्म कट सकते हैं।

आपमें से कई हैं जिनके मुँह से भगवान का नाम कम निकलता है। आप यदि चतुर्भुज का गुलाबजामुन मुँह में ले जाते हैं तो भगवान के नाम की याद कैसे आएगी? आपको हरदम-हरक्षण भगवान का जाप करना है। जहाँ जाप है, वहाँ पाप नहीं। आप प्रदर्शन से हटकर आत्म-दर्शन की तैयारी में आगे बढ़ें। त्याग-तप के साथ जिनवाणी श्रवण का लाभ लें।

इन्हीं शुभ भावों के साथ....

### अणगारों को करते नमन

(तर्ज :: ऐ मालिक तेरे बन्दे हम...)

श्री सुशील चाणोदिया

अणगारों को करते नमन, जिनवचनों में जिनके चरण।  
भगवान भजे, पापों को तजे, नित धर्म मे करते रमण।  
कोई तीखे वचन जो कहे, मुनि खन्ति शरण में रहे।  
पापों से भरे, कोई क्रोध करे, हर कष्ट खुशी से सहे।  
उपशान्त है क्षमा श्रमण,  
करते जो आतम का दमन॥ भगवान भजे.....  
अहो कैसे वे निर्लोभ हैं, किञ्चित् भी नहीं लोभ है।  
भोजन न मिले, कपड़े न सिले, पर मन में नहीं क्षोभ है।  
रोगों से भरा हो जो तन, निर्लेप रहे आत्मन॥ भगवान भजे..

निष्कपट जो मतिमान हैं, अमायी ऋजुभान हैं।

जो तथारूप हैं, जो जगत भूप हैं,

सरलता की जो म्यान हैं।

आर्जव की सुरभित पवन,

है धर्म का वो हो सदन॥भगवान भजे.....

आचार में है नम्रता, नहीं गर्व का कोई पता।

जो विनयवान् हैं, लोक के त्राण हैं,

व्यवहार में है लघुता।

सुर-असुरों से पूजित चरण,

पर अभिमान की न किरण॥भगवान भजे.....

-3-6-20, हिमायतनगर,

हैदराबाद-500029 (तेलंगाना)

## नैतिकता, प्रामाणिकता और निपुणता के कुछ जीवन्त प्रसङ्ग

श्री पी. शिखरमल सुराणा

जैन रत्नसंघ फोरम ऑफ प्रोफेशनल्स की ओर से 31 मई, 2020 को आयोजित वेबिनार में 'नैतिकता, प्रामाणिकता और निपुणता' विषय पर मुख्यवक्ता के रूप में रत्नसंघ के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री पी. शिखरमलजी सुराणा द्वारा व्यक्त किये गये विचारों का सम्पादन साहित्यकार डॉ. दिलीप धींग ने किया है।

-सम्पादक

पूज्य आचार्य श्री हस्तीमलजी म.सा. का दीक्षा शताब्दी वर्ष गतिमान है। वे एक विरले सन्त एवं अति विरले आचार्य थे। ऐसे महान मुनिराज और आचार्य कई शताब्दियों में कभी-कभी ही जन्म लेते हैं। यह हमारा सौभाग्य रहा कि हम आचार्य हस्ती के युग में जन्मे तथा हमें उनके प्रत्यक्ष दर्शन, वन्दन करने एवं उनके मंगल वचनों को श्रवण करने का सौभाग्य मिला।

उनकी विलक्षणता का एक उदाहरण देना चाहूँगा। पिछले हजार वर्षों में अनेक साधु-सम्मेलन हुए। उन सम्मेलनों में यह महसूस किया गया था कि जैन धर्म के इतिहास-ग्रन्थ की कमी है। प्रायः सभी सम्मेलनों में यह निर्णय लिया गया था कि जैन धर्म के प्रामाणिक इतिहास के लेखन का कार्य होना चाहिये। लेकिन इस सुमेरु पर्वत जैसे विशाल कार्य का बीड़ा किसी ने नहीं उठाया। अन्ततः आचार्य श्री हस्तीमलजी म.सा. ने यह अति दुष्कर कार्य करने का संकल्प किया। इस कार्य को सही, समग्र और शोधपरक दृष्टि से सम्पन्न करने के लिए उन्होंने बीस वर्षों तक अथक परिश्रम किया। उनके विहार भी इतिहास लेखन के लक्ष्य को लेकर हुआ करते थे। इस लक्ष्य के लिए उन्होंने सैकड़ों ग्रन्थालयों के हजारों ग्रन्थों का स्वाध्याय किया। उनका परिश्रम सार्थक हुआ। उन्होंने आरम्भ से अन्त तक कुल 3600 पृष्ठों का 'जैन धर्म का मौलिक इतिहास' लिखा, जो चार भागों में सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर से प्रकाशित है। आचार्यश्री का यह ऐतिहासिक कार्य न सिर्फ जिनशासन, अपितु भारतीय इतिहास परम्परा के लिए भी

एक अद्वितीय अवदान है।

'जैन धर्म का मौलिक इतिहास' (भाग 1 से 4) का संक्षिप्तीकरण भी हुआ है। कवि डॉ. दिलीप धींग द्वारा सम्पादित संक्षिप्त संस्करण के चारों भागों का अंग्रेजी और गुजराती में अनुवाद भी हुआ है। पूज्य आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म. सा. ने मेरी धर्मपत्नी श्रीमती लीलावती सुराणा को एवं मुझे 'जैन धर्म का मौलिक इतिहास' के संक्षिप्तीकरण एवं इसके अंग्रेजी और गुजराती अनुवाद की मंगल प्रेरणा दी थी। यह कार्य हमें करने और करवाने का सौभाग्य मिला। एतदर्थ मैं पूज्य आचार्यप्रवर के प्रति अपनी हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करता हूँ।

### आचार्य हस्ती के विचार

अब मैं मुख्य विषय पर आता हूँ। विषय है- नैतिकता, प्रामाणिकता, निपुणता। गुरुदेव आचार्य हस्ती को ये तीनों शब्द बहुत पसन्द थे। उन्होंने अपने प्रवचनों, गीतों, भजनों और प्रार्थनाओं में भी इन शब्दों का प्रसंगानुसार उपयोग किया है। उनका सन्देश है कि व्यक्ति अपने जीवन में नैतिक, प्रामाणिक और निपुण रहकर सफलता और सुयश के शिखर छू सकता है। 'नमो पुरिसवरगन्धहत्थीणं' ग्रन्थ के पृष्ठांक 422 पर आचार्यश्री के 'प्रामाणिकता' विषयक सुवचन दिये गये हैं। आचार्यश्री फरमाते हैं कि व्यापार के क्षेत्र में भी वही सफलता प्राप्त करता है, जो नीति और धर्म के नियमों का ठीक तरह से निर्वाह करता है। श्रावक धर्म में अप्रामाणिकता और अनैतिकता का कोई स्थान नहीं है।

व्यापार केवल धन-सञ्चय का ही उपाय नहीं है। प्रजा की आवश्यकताओं की पूर्ति करना अर्थात् जहाँ जीवनोपयोगी वस्तुएँ सुलभ नहीं हैं, उन्हें सुलभ कर देना व्यापारी की समाजसेवा है, किन्तु वह सेवा तभी सेवा कहलाती है जब व्यापारी अनैतिकता का आश्रय न ले। वह एकमात्र अपने स्वार्थ से प्रेरित होकर अनुचित एवं अत्यधिक लाभ (Unreasonable & Exorbitant Profit) न उठाए।

आचार्य हस्ती अपने काव्य में स्वयं के लिए 'गजमुनि' भी लिखते थे। इस तरह वे 'गजमुनि' और 'गजेन्द्रगणि' के नाम से भी जाने जाते थे। आज के विषय के सम्बन्ध में उनके द्वारा रचित गीतों एवं प्रार्थनाओं की कुछ पंक्तियाँ गाने-गुनगुनाने योग्य हैं-

1. "कहता 'गजमुनि' बारम्बार, कर लो प्रामाणिक व्यवहार।"
2. "निर्व्यसनी हो, प्रामाणिक हो, धोखा न किसी जन के संग हो।"
3. "न्याय नीतिमय धन्धा चावें, प्रामाणिकता को अपनावें, सब धर्मों का सार।।  
हिंसा झूठ न मन में भावे, सब सबको आदर से चावें, होवे न मन में खार।।  
सादा जीवन जीएँ सभी जन, पश्चिम की नहीं चाल चले जन, सदाचार से प्यार।।  
धर्म प्राण यह देश हमारा, धर्म नीति आधार, सब धर्मों का सार।।"
4. "नर भव सफल करन हित सम, करें शुद्ध आचार, ज्ञान धर्म में लगे रहें हम, उज्ज्वल हो व्यवहार।।"  
वस्तुतः आचार्य हस्ती के चुम्बकीय व्यक्तित्व, साधनामय वचनों और प्रवचनों से अनुप्रेरित होकर अनेक व्यक्तियों ने अपने जीवन को न्याय-नीति के मार्ग पर अग्रसर किया।

#### तीन कानून

तीन तरह के कानून या नियम होते हैं-(1) सरकारी कानून, (2) जिनशासन का कानून, जैसे

अहिंसा, सत्य, अचौर्य आदि अणुब्रतों की व्यवस्था, एवं (3) कुदरत का कानून यानी प्रकृति और पर्यावरण के नियम। ये तीनों प्रकार के कानून अन्तःसम्बन्धित हैं। जो व्यक्ति इन तीनों कानूनों का विवेक के साथ पालन करता है, वह नैतिकता और प्रामाणिकता के साथ निपुणता अर्जित कर लेता है। ऐसा व्यक्ति स्व और पर, सबका कल्याण करता है।

कुछ लोगों की यह धारणा हो सकती है कि मौजूदा वक्त में नैतिकता, प्रामाणिकता व निपुणता को जीना और इन मूल्यों को जीकर जीवन में सफल होना सम्भव नहीं है। लेकिन यह धारणा ठीक नहीं है। ऐसे अनेक प्रेरणादायी उदाहरण हैं, जो यह सिद्ध करते हैं कि नैतिकता, प्रामाणिकता व निपुणता के साथ अधिक सफल, अधिक सुखी, अधिक सन्तुष्ट और अधिक सुकून वाला जीवन आसानी से जिया जा सकता है। ऐसे ही कुछ जीवन्त और सच्चे उदाहरण आपके समक्ष रखना चाहता हूँ।

#### लाल बहादुर शास्त्री

श्री लाल बहादुर शास्त्रीजी जब रेलमन्त्री थे, तब एक रेल दुर्घटना हो गयी थी। उस दुर्घटना में कुछ लोगों की जान भी चली गई थी। इस घटना से शास्त्रीजी बहुत व्यथित हो गये। उन्होंने इस हादसे को अपनी नैतिक जिम्मेदारी मानकर रेलमन्त्री के पद से त्यागपत्र दे दिया। तत्कालीन प्रधानमन्त्री पण्डित जवाहरलालजी नेहरू के आग्रह पर भी उन्होंने इस्तीफा वापस नहीं लिया। बात यहीं तक नहीं, शास्त्रीजी ने त्यागपत्र के साथ ही अपनी सरकारी कार लौटा दी तथा अपने घर जाने के लिए पैदल ही बस स्टैण्ड पहुँच गये।

पण्डित नेहरूजी के निधन के बाद लाल बहादुर शास्त्रीजी भारत के दूसरे प्रधानमन्त्री बने। मात्र डेढ़ वर्ष के कार्यकाल में उन्होंने पूरे विश्व में भारत का गौरव बढ़ा दिया। रूस में शास्त्रीजी का अचानक असामयिक निधन हो गया। उनके स्वर्गस्थ होने के बाद सबको यह जानकर आश्चर्य हुआ कि न तो उनका स्वयं का कोई मकान था और न ही कोई बैंक बैलेंस। वस्तुतः शास्त्रीजी ने



राजनीति जैसे क्षेत्र में भी नैतिकता, प्रामाणिकता और निपुणता का उत्तम आदर्श प्रस्तुत किया।

### गोविन्द स्वामीनाथन

मैं कुछ ऐसे सफल लोगों के बारे में भी बताना चाहूँगा, जिनसे मेरा व्यक्तिगत सम्पर्क हुआ। उनमें से एक हैं—श्री गोविन्द स्वामीनाथन। गोविन्द स्वामीनाथन मद्रास उच्च न्यायालय के वरिष्ठ अधिवक्ता और महाधिवक्ता (Senior Advocate and Advocate General of Madras) रहे। यह काफी पुरानी बात है, जब आयकर की दर बहुत ज़्यादा हुआ करती थी तथा नकद व्यवहार भी खूब चलता था। ऐसे वक्त में भी गोविन्द स्वामीनाथन के अपने सिद्धान्त थे—(1) वे अपनी फीस कभी नकद के रूप में स्वीकार नहीं करते थे। (2) वे अपनी फीस दो बराबर के चेक में लेते थे।

पचास प्रतिशत फीस का एक चेक अलग खाते में जमा करवाते थे। उन्हें जब भी आयकर भरना होता तो वे उस खाते से ही अपना आयकर चुकाते थे। पचास प्रतिशत का दूसरा चेक स्वयं के उपयोग के लिए होता था, जिसे वे दूसरे खाते में जमा करवाते थे। कोई नीतिवान, प्रामाणिक और निपुण व्यक्ति ही इतनी ईमानदारी से अपना कर-दायित्व निभा सकता है।

### न्यायाधीश सत्यदेव

मद्रास उच्च न्यायालय के न्यायाधीश सत्यदेव ने अपने नाम के अनुरूप ही निपुणता के साथ न्याय और सत्य को जीने का आदर्श उपस्थित किया था। जिस दिन उनकी सूची में जितने मुकदमे (केस) आते थे, वे उन सभी मुकदमों का घर पर ही अध्ययन करके जाते थे तथा अपनी सूची के सारे मुकदमों को निपटाकर ही घर लौटते थे। एक बार अदालत में वे मुकदमे निपटा रहे थे। तभी चपरासी आया और एक पर्ची देकर चला गया। उन्होंने पर्ची में लिखा सन्देश पढ़ा। कुछ क्षण शान्त रहे। पर्ची को जेब में रखा और वापस केस की सुनवाई करने लगे। अदालत का समय पूरा होते ही वे उठकर चल दिये। बाद में पता चला कि उस पर्ची में उनकी बीमार माँ के देहान्त की दुःखद सूचना थी। उनकी कर्तव्यनिष्ठा आश्चर्यजनक थी।

उनके इकलौते पुत्र की शादी भी सादगी की एक मिसाल थी। वर और वधू, दोनों पक्षों की ओर से केवल पचास-पचास व्यक्तियों को निमन्त्रित किया गया। पुत्र के विवाह समारोह के दिन उन्होंने सिर्फ आधे दिन का अवकाश लिया और दिन के भोजन (लंच) के बाद वे अपना कर्तव्य निभाने अदालत पहुँच गये। जिस दिन वे सेवानिवृत्त हुए, उसी दिन उन्होंने सरकारी बंगला और गाड़ी लौटा दीं।

### पद्मभूषण डी.आर. मेहता, पद्मश्री वी.आर. मेहता

भारतीय प्रशासनिक सेवा के यशस्वी अधिकारी पद्मभूषण श्री देवेन्द्रराजजी मेहता के जीवन को नैतिकता, प्रामाणिकता और निपुणता का त्रिवेणी संगम कहा जा सकता है। किसी के सहयोग या गॉडफादर के बगैर ही वे अपनी योग्यता के बलबूते पर आगे बढ़ते गये। भारतीय रिजर्व बैंक के उप-गवर्नर तथा भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड (सेबी) के अध्यक्ष (चैयरमैन) जैसे अनेक शीर्ष प्रभावशाली पदों पर रहे। वे चाहते तो खूब पैसा बना सकते थे, लेकिन उन्होंने कभी किसी प्रलोभन में कार्य नहीं किया। किसी भी प्रकार के भय और पक्षपात के बगैर (Without fear & favour) उन्होंने अपना कर्तव्य निभाया और उज्ज्वल प्रतिष्ठा अर्जित की।

पीड़ित मानवता की सेवार्थ मेहताजी ने भगवान महावीर विकलांग सहायता समिति की स्थापना की। विगत 45 वर्षों से यह समिति विकलांग भाई-बहिनों को कृत्रिम हाथ-पैर मुहैया करवा रही है। समिति उन्हें आत्मनिर्भर और आत्मविश्वासी बना रही है। विश्व में विकलांग भी बहुत बड़ी संख्या में हैं। यह समिति अब तक करीब 10 लाख विकलांगों की निःशुल्क सेवा कर चुकी है। यह गौरवपूर्ण तथ्य है कि दुनिया की सभी सरकारें एवं संस्थाएँ जितने विकलांगों की सेवा करती हैं, उनसे कई ज़्यादा विकलांगों की सेवा भगवान महावीर विकलांग सहायता समिति करती है। समिति की सेवाएँ सिर्फ भारत तक ही सीमित नहीं हैं, अपितु इसकी सेवाओं का विस्तार श्रीलंका, पाकिस्तान, ईरान,

इराक, अफगानिस्तान आदि एवं अफ्रीका महाद्वीप के अनेक देशों तक फैला हुआ है। समिति की वैश्विक सेवाओं से दुनियाभर में भगवान महावीर का नाम हुआ है और जैन समाज की सेवाधर्मिता को पहचान मिली है।

समिति का करीब बीस करोड़ का वार्षिक खर्च है, जो दुनिया के कोने-कोने से दान के रूप में आता है। सहयोग के रूप में प्राप्त एक-एक पैसे का सही सदुपयोग किया जाता है। इसीलिए लोग समिति को मुक्तहस्त से दान करते हैं। लोगों को मेहताजी के नीतिमय और प्रामाणिक जीवन पर विश्वास है। उन्होंने समिति के लिए प्राप्त सहायता के एक पैसे का भी कभी स्वयं के लिए उपयोग नहीं किया। आज अस्सी के पार उम्र होने के बावजूद वे सादगी और सेवा का जीवन जीते हैं। वे स्वयं के लिए बिना एसी वाली साधारण मारुति-800 का उपयोग करते हैं और प्रतिदिन बारह घण्टे सेवा के लिए समर्पित करते हैं।

इसी प्रकार उनके भ्राता पद्मश्री वीरेन्द्रराजजी मेहता (दिल्ली) ने भी भगवान महावीर विकलांग सहायता समिति का कार्य निष्ठा से सम्भाला है। सेवानिवृत्ति से पूर्व उनकी अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर सेवाएँ जारी थीं तो सेवानिवृत्ति के बाद भी उन्होंने नैतिकता, प्रामाणिकता और निपुणता का परिचय दिया है। यह संयोग भी जैन समाज के लिए गौरवपूर्ण है कि दोनों भ्रातावर 'पद्म' अलङ्करण से अलङ्कृत हैं।

श्री डी.आर. मेहताजी के द्वारा स्थापित प्राकृत भारती अकादमी भी प्राकृत भाषा और जैनविद्या का गौरवशाली संस्थान है और इसकी गौरवशाली उपलब्धियाँ हैं। यहाँ साम्प्रदायिक भेदभाव नहीं है। यह मेहताजी की नैतिकता, प्रामाणिकता और निपुणता का ही सुफल है कि उन पर और उनके सेवाकार्यों पर लोग विश्वास करते हैं। विश्वास की इस बुनियाद पर ही उन्होंने सेवा और सफलता के कीर्तिमान स्थापित किये हैं।

**न्यायाधिपति आर.एम. लोढ़ा**

भारत के मुख्य न्यायाधीश (सीजेआई) रहे श्री राजेन्द्रमलजी लोढ़ा के जीवन को भी नैतिकता का

दीपस्तम्भ कह सकते हैं। प्रायः यह देखा जाता है कि जब भी कोई सीजेआई सेवानिवृत्त होता है तो सेवानिवृत्ति के साथ ही उसे कोई न कोई महत्त्वपूर्ण पद दे दिया जाता है। जैसे, किसी को किसी राष्ट्रीय आयोग का अध्यक्ष बना दिया जाता है तो किसी को किसी राज्य का राज्यपाल अथवा राज्यसभा का सदस्य बना दिया जाता है। लेकिन लोढ़ाजी की बात सबसे अलग रही। वे पहले ऐसे सीजेआई हैं, जिन्होंने मुख्य न्यायाधीश बनते ही यह घोषणा कर दी थी कि वे सेवानिवृत्ति के उपरान्त कोई पद स्वीकार नहीं करेंगे। न्यायाधीश रहते हुए वे अपनी मर्यादा में रहे, ऊँचे से ऊँचे ओहदे वालों के लिए भी पहुँच से परे (Unapproachable) बने रहे। न्याय और निष्पक्षता के साथ उन्होंने कभी कोई समझौता नहीं किया। उनकी नैतिकता, प्रामाणिकता और निपुणता न्याय जगत् के लिए प्रेरणा का विषय है।

**सी. एम. बच्छावत**

जब भी कहीं सरकार बदलती है, तब नई सरकार अपने चहेते प्रशासनिक अधिकारियों और अफसरों को शीर्ष मुख्य पदों (Top Key Posts) पर नियुक्त करती है। लेकिन पश्चिम बंगाल में एक प्रशासनिक अधिकारी के बारे में एक आश्चर्यकारी अपवाद हुआ। वे वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी हैं—श्री चंचलमल बच्छावत। उन्होंने 25 वर्षों तक मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी के शासन में उच्च प्रशासनिक पदों पर कार्य किया। उसके बाद जब ममता बनर्जी की सरकार आई तब ममताजी ने स्वयं उनको बुलाकर कहा कि आपको अपने पद पर रहते हुए मेरी सरकार का भी मार्गदर्शन करना है, हमें आपकी जरूरत है। ममताजी भी इनके कार्य से बेहद प्रसन्न हुईं। फलस्वरूप सरकार ने बच्छावतजी को पश्चिम बंगाल कर-प्राधिकरण में सदस्यता देकर उन्हें जज बना दिया तो इनकी सेवानिवृत्ति की आयु सीमा भी बढ़ गई। सच ही है कि जिसमें उच्च कोटि की नैतिकता, प्रामाणिकता और निपुणता होती है, वह सब समय, सब जगह और सबके द्वारा पूजा जाता है।

### वास्तुकार सरदारजी

जब मैंने चैन्नई में अपना पहला मकान बनाया था, तब मैंने सिक्ख समुदाय के एक युवा वास्तुकार (सरदारजी) को नियुक्त किया। वास्तुकार (आर्किटेक्ट) सरदारजी योग्य और सज्जन थे, अतः मुझे प्रिय थे। उसके बाद हमने मिलकर एक अनुभवी ठेकेदार (कॉन्ट्रैक्टर) को नियुक्त कर दिया। ठेकेदार ने सरदारजी को येन-केन-प्रकारेण दुष्प्रभावित करना चाहा, लेकिन सरदारजी उस से मस नहीं हुए। आखिर ठेकेदार को रास्ते पर आना पड़ा। उसे न्याय-नीति से गुणवत्ता के साथ सारा कार्य करना पड़ा। मैं उस युवा वास्तुकार की नैतिकता, प्रामाणिकता और निपुणता से बहुत प्रभावित हुआ। उनसे हमारी अच्छी मित्रता हो गई।

पच्चीस वर्ष बाद एक दिन वे मेरे घर आये। वे उनकी पुत्री की शादी की पत्रिका देकर बोले कि आपको पूरे परिवार के साथ शादी में आना है। मैंने कहा- “आपके यहाँ तो वैवाहिक भोज में शराब उड़ेगी, मांसाहार होगा! अतः मैं नहीं आ सकता। माफी चाहता हूँ।”

सरदारजी दो घण्टे बैठे रहे और आने के लिए मनुहार करते रहे। मैं अपनी मजबूरी बताकर माफी माँगता रहा। आखिर वे बोले- “ठीक है, न शराब होगी, न मांसाहारी भोजन, तब तो आप आयेंगे न!” मैं बोला- “ऐसा है तो हम सब जरूर आयेंगे।”

हम गये। पूरा वैवाहिक भोज पूर्ण रूप से शुद्ध शाकाहारी था। सरदारजी अपने वचन और सिद्धान्त के पक्के निकले। उन्होंने सम्बन्ध निभाने के लिए हमारी श्रेष्ठ निरामिष परम्परा का सम्मान किया एवं नैतिकता और प्रामाणिकता का परिचय दिया।

### डॉ. अलगप्पन

एक बार मेरा छोटा पोता देवकार्तिक स्कूल में खेलते-खेलते गिर गया। उससे उसके हाथ की हड्डी टूट गई। हम उसे एक अस्थि-चिकित्सक के पास ले गये। वह बोला, बच्चे को भर्ती करवा दीजिये। सर्जरी करके हड्डी जोड़नी पड़ेगी। हमने देवकार्तिक को भर्ती नहीं करवाया। हम उसे दूसरे चिकित्सक के पास ले गये। उस

दूसरे चिकित्सक ने भी यही बात कही। हम उससे भी सहमत नहीं हुए। वहाँ से लौट गये और एक अन्य अनुभवी अस्थि सर्जन डॉ. अलगप्पन के पास उसे ले गये। डॉ. अलगप्पन ने हमसे कहा- “बच्चे को पाँच मिनट मेरे कमरे में रहने दो, आप बाहर बैठो और बच्चा अगर रोये, चिल्लाए तो भी घबराना मत।”

डॉ. अलगप्पन की बात पर हमें विश्वास हुआ। डॉ. अलगप्पन और उनकी टीम ने मिलकर बच्चे की हड्डी को खींचकर जोड़ दिया, दवा लगाकर प्लास्टर बाँध दिया और कहा तीन हफ्ते बाद आना। हम तीन हफ्ते बाद गये। हड्डी पूरी तरह सही जुड़ गई थी, बिना सर्जरी के। डॉक्टर ने अपनी निपुणता के साथ ही नैतिकता और प्रामाणिकता का जो उदाहरण पेश किया। वर्तमान समय में ऐसा बहुत कम देखने को मिलता है।

### डॉ. गोपीचन्द जैन

लगभग पचास वर्ष पहले डॉ. गोपीचन्द जैन हमारे पारिवारिक चिकित्सक थे। डॉ. जैन के कुछ सिद्धान्त थे-

1. उनके वहाँ मरीजों की भीड़ लगती थी, इसलिए सबको टोकन दिया जाता था। टोकन के क्रम के अनुसार ही वे सबको देखते थे। एक दिन उनके करोड़पति ससुरजी आ गये, लेकिन उनको भी टोकन के अनुसार कतार में खड़ा होना पड़ा।
2. डॉ. जैन एक बार की बीमारी के लिए एक बार ही शुल्क (फीस) लेते थे, दुबारा नहीं।
3. वे अपने मरीजों को हल्की दवाई (लो डोज़) ही देते थे। पीने की दवाई का कॉम्पोजिशन (मिश्रण) लिखकर देते थे, जिसे केमिस्ट बनाकर देता था।
4. उनकी फीस सिर्फ दो रुपये थी।

वस्तुतः डॉ. जैन ने अपनी नैतिकता, प्रामाणिकता और निपुणता से अपने प्रोफेशन को ही जनसेवा का मिशन बना लिया। उन्होंने लोगों के हृदय में स्थान बनाया और पुण्य की असली कमाई की।

### वी. जगदीशन (सीए)

चार्टर्ड एकाउण्टेण्ट श्री वी. जगदीशन के सिद्धान्त

किसी भी पेशेवर के लिए प्रेरणादायी हैं। उनकी व्यावसायिक नीतियाँ और विशेषताएँ इस प्रकार थीं—

1. आयकर विभाग में उन्होंने कभी किसी को एक पैसा भी नहीं खिलाया। उनकी पैठ इतनी थी कि कोई भी उनसे एक पैसा भी माँगने की हिम्मत नहीं करता था।
2. आयकर कानून और अंकेक्षण (ऑडिट) में इतने निपुण थे कि विभाग में सभी उनकी इज्जत करते थे।
3. वे वाजिब फीस में बढ़िया कार्य करते थे।

अपनी नैतिकता, प्रामाणिकता और निपुणता के बल पर जगदीशन ने सीए प्रोफेशन के क्षेत्र में खासी प्रतिष्ठा अर्जित की।

### वीरचन्द राघवजी गाँधी

रत्नसंघ के जैन प्रोफेशनल फोरम से यह कार्यक्रम हो रहा है। अतः यहाँ मैं दो ऐसे जैन प्रोफेशनल्स के बारे में बताना चाहूँगा, जिनसे सबको प्रेरणा लेनी चाहिए। पहले हैं—श्री वीरचन्द राघवजी गाँधी। वे वकील थे, बैरिस्टर थे। महात्मा गाँधी ने अपनी आत्मकथा में तथा स्वामी विवेकानन्द ने एक पत्र में भी वीरचन्दजी की प्रशंसा की है। वीरचन्दजी के महान् कार्यों और विशेषताओं को निम्नलिखित बिन्दुओं के माध्यम से समझा जा सकता है—

- सन् 1884 में वीरचन्दजी बॉम्बे (मुम्बई) से जैन समाज के पहले वकील बने। शायद वे पूरे भारतवर्ष में जैन समाज के पहले वकील थे। उन्होंने बॉम्बे में ही अपनी वकालत शुरू की।
- वे भारत की और विदेशी चौदह भाषाओं के जानकार थे। उन्होंने नौ वर्ष तक वकालत की।
- सन् 1891 की बात है। उस समय जैनों के पवित्र तीर्थस्थल सम्मेल शिखर पहाड़ के नजदीक सरकार ने एक कत्लखाना खोला। कत्लखाने के विरोध के लिए वीरचन्दजी कलकत्ता (कोलकाता) गये। वे छह महीने वहाँ रहे। कत्लखाने के विरोध में उन्होंने

कलकत्ता उच्च न्यायालय में मुकदमा लड़ा। अहिंसा की जीत हुई और सरकार को वह कत्लखाना बन्द करना पड़ा।

- सन् 1893 में शिकागो (यूएसए) में प्रथम विश्व धर्म संसद (World Parliament of Religions) का आयोजन हुआ था, जिसमें विश्वभर के सभी धर्मों के प्रतिनिधि सम्मिलित हुए। भारत से हिन्दू धर्म का प्रतिनिधित्व स्वामी विवेकानन्द ने किया, यह सब जानते हैं। लेकिन यह कम लोग ही जानते हैं कि जैनधर्म का प्रतिनिधित्व श्री वीरचन्द राघवजी गाँधी ने किया था। उन्हें आचार्य श्री विजयानन्दसूरि ने अपना प्रतिनिधि बनाकर भेजा था।
- वीरचन्दजी के प्रभावी व्याख्यान से धर्म संसद के 3,000 श्रोता मन्त्रमुग्ध हो गये। इस पर उन्हें अमेरिका, इंग्लैण्ड, फ्रांस और जर्मनी के कई शहरों में व्याख्यान देने के लिए आमन्त्रण दिया गया, जिसे उन्होंने स्वीकार किया।
- अपने व्याख्यानों से उन्हें स्वर्णपदक और मानदेय मिला। उससे उन्होंने फीस भरकर लन्दन में एक वर्ष तक रहकर बैरिस्टर की पढ़ाई भी पूरी की। इस दौरान वे स्थान-स्थान पर व्याख्यान भी देते रहे।
- वीरचन्दजी ने भारत आकर स्वतन्त्रता संग्राम में भी भाग लिया। 1895 में पूना में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का जो सत्र (सेशन) हुआ था, उसमें उन्होंने बॉम्बे प्रोविस (प्रान्त) का प्रतिनिधित्व किया।
- उसके बाद वीरचन्दजी फिर अमेरिका आमन्त्रित किये गये। 1896-97 में भारत में भयंकर अकाल पड़ा। यह समाचार मिलने पर उन्होंने वहाँ पैसे इकट्ठे किये तथा एक बड़ा जहाज अनाज से भरकर भारत भेजा। 1899 में फिर वे अमेरिका और यूरोप आमन्त्रित किये गये।
- जैनधर्म और भारतीय संस्कृति पर उन्होंने कुल 535 व्याख्यान दिये। कई अमेरिकी समाचार पत्रों में उनके व्याख्यानों के सारांश छपे, जिनकी खूब

सराहना हुई।

- वीरचन्दजी के सम्पर्क और सत्संग से कई विदेशियों ने जैनधर्म अपनाया। उनमें से एक हरबर्ट वारेन ने 'जैनिज्म' नामक एक पुस्तक लिखी, जिसमें उनके व्याख्यानों के प्रभाव को भी बताया गया है।
- उस समय भी जैन समाज में संकीर्णताएँ थीं। वीरचन्दजी द्वारा समुद्र पार करके विदेश जाने के लिए उनको समाज से बहिष्कृत कर दिया। इस पर स्वामी विवेकानन्द ने जूनागढ़ के दीवान को पत्र लिखा। उस पत्र में उन्होंने वीरचन्दजी गाँधी की अमेरिका में किये गये कार्यों की प्रशंसा की।
- सन् 1901 में मात्र 37 वर्ष की उम्र में वीरचन्दजी का देहान्त हो गया। एक अकेले वीरचन्दजी ने विदेशों में, विदेशी भाषाओं में, जितना प्रचार प्रसार जैनधर्म का किया, उतना किसी ने नहीं किया। यह भी आश्चर्यजनक है कि उन्होंने समाज के विशेष सहयोग के बिना, अपने बलबूते पर इतनी अल्प अवधि में इतना विपुल कार्य किया।
- एक सदी बाद सन् 1993 में शिकागो (यूएसए) में द्वितीय विश्व धर्म संसद का आयोजन हुआ। उसमें वीरचन्दजी गाँधी के 1893 में दिये गये व्याख्यान की प्रशंसा की गई तथा शिकागो में उनकी एक प्रतिमा स्थापित की गई।

बहुमुखी व्यक्तित्व और कृतित्व के धनी वीरचन्द राघवजी गाँधी ने अपनी नैतिकता, प्रामाणिकता और निपुणता से अनेक कीर्तिमान स्थापित किये। उनके निधन के 120 वर्ष व्यतीत होने के बाद आज भी उनके जैसे मनीषियों की कमी बहुत महसूस होती है।

#### हाजी हफीजुर रहमान

हमारे एक क्लार्क मित्र थे—जनाब हफीजुर रहमान। उनका काफी लम्बा—चौड़ा काम—धन्धा था। वे कई कम्पनियों और कारखानों के मालिक और बहुत बड़े निर्यातक थे। वे इस्लाम धर्म के अनुयायी थे, सो हज के लिए मक्का मदीना गये। मुसलमानों के लिए यह

पवित्र तीर्थयात्रा मानी जाती है।

हज से लौटते ही रहमान साहब मुझसे मिलने आये। बोले—“आपसे एक महत्त्वपूर्ण सलाह करनी है। मैं हज करके अल्लाह के यहाँ होकर आया हूँ। मेरा मन बड़ा बेचैन है। व्यवसाय करते हुए मैंने आज तक आयकर, बिक्रीकर, उत्पाद एवं सीमाशुल्क आदि की अनेक चोरियाँ की हैं। कई गलत रिटर्न फाइल किये और दस्तावेज़ भी बनाए हैं। अब मैं सम्बन्धित विभागों को पत्र लिखकर अपने करापवंचन की गलतियाँ स्वीकार करना चाहता हूँ।”

मैंने उनको बहुत समझाया कि ऐसा करने से आप पूरे के पूरे फँस जायेंगे, आपकी सारी सम्पत्तियाँ सरकार ले लेगी तथा आपको जेल भी हो सकती है। इस पर रहमान साहब बोले—“मुझे सब मालूम है। मैं इन स्थितियों का सामना करने के लिए तैयार हूँ।” उन्होंने आगे कहा—“अगर मैं अपनी चोरियाँ एवं गलतियाँ स्वीकार नहीं करूँगा तो मैं अल्लाह को मुँह दिखाने लायक नहीं रहूँगा।”

वे अपनी गलतियों को स्वीकार करने की ठान ही चुके थे। अतः उन्होंने वैसा ही किया। उन्होंने सभी सम्बन्धित सरकारी विभागों को पत्र लिखे, जिनमें यह विवरण दिया कि किस वर्ष में कितना करापवंचन किया था और कितने गलत विवरण प्रस्तुत किये थे। किसी सरकारी दफ्तर में कभी किसी ने इस प्रकार का पत्र नहीं देखा था। अफसर उस अभूतपूर्व पत्र को देखकर हैरान हो गये। लेकिन पत्रानुसार उन्हें अपनी ड्यूटी करनी थी, कार्यवाही करनी थी। अधिकारियों ने अपनी टीम के साथ रहमान साहब के ठिकानों पर छापा मारा। रहमान साहब तो इसके लिए तैयार ही थे, आत्म-समर्पित थे।

अधिकारी बोले—“ऐसा सच्चा व्यवसायी हमने कभी नहीं देखा। इसलिए आपकी सच्चाई को ध्यान में रखते हुए आप पर फौज़दारी मुकदमा (क्रिमिनल केस) नहीं करेंगे तथा जिस बंगले में आप रह रहे हैं, उसको छोड़ देंगे। उसके अलावा आपकी सारी जमीन-जायदाद, फैक्ट्रियाँ, कार्यालय आदि सब कुछ

अधिगृहीत कर लेंगे। अधिगृहीत सम्पत्तियाँ सार्वजनिक नीलामी में बेचकर, उनसे प्राप्त धन को अपवंचित करों में समायोजित कर लेंगे।”

रहमान साहब ने इसके लिए अपनी स्वीकृति दी और सहयोग भी दिया। वैसा ही किया गया। नब्बे से ऊपर की उम्र तक वे जिए और शान्ति और सन्तोष के साथ जिए। देर से ही सही, उन्होंने नैतिकता, प्रामाणिकता और निपुणता का आश्चर्यजनक आदर्श उपस्थित किया।

### के. जैनुद्दीन

हमारे एक क्लार्क मित्र हैं—जनाब के. जैनुद्दीन। उनका निर्यात का व्यापार था। व्यापार में उन्होंने उधार दे दिया। उधारी की वसूली नहीं हो पाई। वे तकलीफ में पड़ गये। ऊपर से उन्हें गिरफ्तार करने के लिए प्रवर्तन निदेशालय (Enforcement Directorate) उनके पीछे पड़ गया। वे मेरे पास आये। बोले, मुझे बचा लीजिये। मैं खर्च के पैसे दे सकता हूँ, पर फीस बाद में दूँगा। हमने उनका काम कर दिया। इस कार्य को करने में हमें पूरा एक महीना लगा। प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने उनके विरुद्ध फौजदारी मुकदमा नहीं किया। वे बच गये।

हमारी फीस नहीं दे पाने का उन्हें बहुत दुःख था। उन्होंने एक तरकीब सोची। वे मुझे प्रत्यक्ष रूप में फीस नहीं दे पा रहे थे, लेकिन परोक्ष रूप से वे मेरे लिए कुछ करना चाह रहे थे। उन्होंने अपनी मेहनत और चतुराई से मुझे चैन्नई के तुरन्त बाहर एक बड़ी जमीन थोड़े कम दाम में, मेरी इच्छा नहीं होते हुए भी दिलवा दी। कुछ वर्षों बाद वह जमीन चैन्नई महानगर का भाग बन गई। आज उस जमीन की कीमत सैकड़ों गुना बढ़ गई है। इस तरह नैतिकता, प्रामाणिकता और निपुणता से उन्होंने परोक्ष रूप में मेरा ऋण उतारकर अपने आपको हल्का महसूस किया।

### दीपचन्द गार्डी

मई-2008 में मुम्बई में रत्नसंघ में चार दीक्षाएँ हुई थीं। प्रसिद्ध दानवीर श्री दीपचन्द गार्डी उस दीक्षा

महोत्सव में मुख्य अतिथि के रूप में पधारे थे। वे अपने भाषण में बोले थे कि मेरी भावना हो रही है कि आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के पास मैं भी दीक्षा ले लूँ, पर मुझ जैसे 93 वर्ष के इस बूढ़े को कौन दीक्षा देगा? मैं गार्डीजी के जीवन की कुछ रोचक एवं प्रेरक झलकियाँ बताना चाहता हूँ—

- ◆ गार्डीजी गुजरात के एक गाँव में गरीब परिवार में जन्मे। बचपन में ही उनके माता का निधन हो गया, इस कारण उन्होंने ननिहाल में रहकर मैट्रिक परीक्षा पास की।
- ◆ कॉलेज और कानून की पढ़ाई के लिए वे मुम्बई आये। फिर लन्दन जाकर बेरिस्टर बने। मुम्बई में वकालत की। वकालत में पैसे कमाते गये तथा मुम्बई में ही जमीनें खरीदते गये। इस प्रकार मुम्बई में उनका एक भू-बैंक (Land Bank) हो गया।
- ◆ पचास वर्ष की उम्र में उन्होंने प्रतिदिन नियमित एक हजार रुपया दान देना शुरू किया। दानराशि को धीरे-धीरे बढ़ाते हुए उन्होंने एक लाख रुपये प्रतिदिन देना शुरू किया। वे नित्य दानराशि को समय के साथ बढ़ाते ही रहे।
- ◆ इस प्रकार वे अपने जीवन के अन्तिम दस वर्षों में रोज का नियमित एक करोड़ रुपया दान देते थे।
- ◆ वे दिनभर जरूरतमन्द लोगों और सेवा की संस्थाओं के प्रतिनिधियों से मिलना तथा उनको चेक काटकर देना, यही कार्य करते थे।
- ◆ कश्मीर से कन्याकुमारी और गुजरात से असम तक, जातिगत भेदभाव से ऊपर उठकर उन्होंने शैक्षणिक संस्थानों, चिकित्सालयों तथा गौशालाओं के लिए भरपूर दान दिया।
- ◆ 99 वर्ष की आयु में भी वे पूरे स्वस्थ थे तथा उनकी स्मरणशक्ति भी पूरी थी।
- ◆ नियमित हर रोज एक करोड़ का दान देने वाले वे गुजरात के ही नहीं, सम्भवतः देश के सबसे बड़े दानदाता थे।

अपरिग्रह, दान और नीतिमय निवेश (Ethical Investment) पर जब भी बोला या लिखा जाता है तो दीपचन्द भाई गार्डी का उदाहरण आता ही है। समाज के ऐसे जीते-जागते उदाहरण हमें नैतिकता, प्रामाणिकता और निपुणता की प्रबल प्रेरणाएँ देते हैं।

### पुण्य की महिमा

मैं अपना व्याख्यान समाप्त करूँ, उससे पूर्व जैनदर्शन में पुण्य पर विचार करना चाहूँगा। तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी और पण्डित श्री कन्हैयालालजी लोढ़ा ने श्वेताम्बर-दिगम्बर जैन साहित्य के आधार पर अकाट्य रूप में पुण्यतत्त्व की महिमा को प्रतिपादित किया है। पद्मभूषण जैनाचार्य श्री विजयरत्नसुन्दर सूरिजी भी पुण्य पर बहुत बल देते हैं। एक बार मैं और मेरा पुत्र डॉ. विनोद सुराणा उनके सान्निध्य में बैठे हुए थे। कोई बात चली तो उन्होंने फरमाया कि 'सत्यमेव जयते' से भी अधिक महत्त्वपूर्ण है- 'पुण्यमेव जयते।'

पुण्य बढ़ाते जाओ। पुण्य और आज के विषय को परस्पर एक दूसरे से जोड़ा जा सकता है। अगर पुण्य है तो नैतिकता, प्रामाणिकता तथा निपुणता की राह पर चलना आसान हो सकता है। इसके साथ ही नैतिकता, प्रामाणिकता और निपुणता के सुपथ पर चलोगे तो जबर्दस्त पुण्य का संचय होगा जो मोक्षमार्ग में पाथेय बनेगा। पुण्य बढ़ाने के लिए भगवान ने नौ उपाय बताये हैं- (1) अन्न पुण्य (2) पान पुण्य (3) लयन पुण्य (4) शयन पुण्य (5) वस्त्र पुण्य (6) मन पुण्य (7) वचन पुण्य (8) काय पुण्य और (9) नमस्कार पुण्य। इन नौ तरीकों से अधिकाधिक पुण्यार्जन करना चाहिये एवं नैतिकता, प्रामाणिकता और निपुणता के मार्ग पर अडिग रहना चाहिये।

-सुराणा एण्ड सुराणा इण्टरनेशनल अटोर्नीज,  
इण्टरनेशनल लॉ सेंटर, 61-63, डॉ. राधाकृष्णन  
रोड, मैलापुर, चेन्नई-600004 (तमिलनाडु)

### जिनवाणी अभिमत

जिनवाणी मई-जून, 2020 का शानदार और जानदार लॉकडाउन के बाद अंक मिला। सामयिक एवं नव विचारों से ओत-प्रोत अंक मनभावन और हृदय को प्रसन्नचित करने वाला लगा।

कोरोना संकट का प्रभाव-डॉ. धर्मचन्द जैन ने कोविड-19 की पूरी गाथा सुन्दर और आकर्षक भाषा में प्रस्तुत की। कषाय-मुक्ति की सच्ची मुक्ति विषय को अनेक दृष्टान्तों के साथ प्रस्तुत किया और कहा कि चार कषायों से मुक्त होने पर ही वास्तविक मुक्ति होती है। 'कषाय मुक्ति: किल मुक्तिरेव।' 'कोरोना का समाधान : संयम, मंगल भावना और सत्संकल्प' में श्रद्धेय श्री गौतमुनिजी म.सा. ने बहुत सुन्दर उदाहरणों के साथ समाधान प्रस्तुत किये। करुणावान का परिचय देते हुए कहा कि 'जीव से प्रेम करे और जड़ का सदुपयोग करे। 'जल, गाँव और

शहर की विशेषताएँ' प्रवचन में श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा. ने शानदार विवेचन प्रस्तुत कर पाठक को चुम्बकीय शक्ति प्रदान की। पानी के गुणों के साथ जलगाँव वालों की प्रशंसा समस्त समाज के लिए ग्राह्य थी। कोरोना : कैसे हो... दुःखद शुरुआत का सुखद अन्त? श्री तरुणजी बोहरा 'तीर्थ' की कलम शानदार चली और समस्त पशु-पक्षियों का सुन्दर प्रतिनिधित्व प्रदान करते हुये उन्हें उचित पदों पर आसीन करते हुए मानव के कुकर्मों की शानदार भर्त्सना प्रस्तुत कर मानव को मानव बनने की प्रेरणा दी। यदि आपका स्वप्न साकार हो जाए तो पुनः सम्पूर्ण विश्व पावन तीर्थ बन जाय। शेष सभी रचनाएँ भी अति पठनीय थी।

-ताराचन्द जैन,  
तरंग, 38, मरूथर केसरी नगर, मानपुरा भाखरी  
रोड, पाली-मारवाड़-306401 (राज.)

## ‘यतना’ धर्म महान्

श्री अरूण मेहता

यतना जैन धर्म का आधारभूत सिद्धान्त है।

जयं चरे जयं चिट्ठे, जयमासे, जयं सए।

जयं भुजंतो, भासंतो, पावकम्मं न बंधइ॥

दशवैकालिक सूत्र का चौथा अध्ययन (गाथा 8) स्पष्ट उद्घोष कर रहा है कि यतनापूर्वक की गई क्रिया से पाप-कर्म का बंध नहीं होता है।

इस गाथा का विपरीत अर्थ इस प्रकार से भी किया जा सकता है कि बिना यतना के की गई क्रिया से पाप कर्म का बंध होता है।

इससे यह स्पष्ट है कि यतना धर्म है, और अयतना अधर्म है। यतना जैनधर्म पालन करने का आधार है, क्योंकि अगर धर्मक्रिया अयतना से की जायेगी तो वह कर्म बंध का कारण बनेगी। जो कि हमारे धर्म क्रिया करने के हेतु के विपरीत होगी। इस तरह से यह सिद्ध होता है कि यतना के बिना धर्म क्रिया सूनी है, निरर्थक है।

यतना का दूसरा नाम ‘विवेक’ भी है। एक सिक्के के दो पहलू हैं। विवेक आन्तरिक होता है और यतना बाह्य रूप है। भावों में विवेक होना चाहिए और क्रिया में यतना।

जतन, सुरक्षा, उपयोग, सावधानी, सावचेती, सजगता, रक्षा आदि अनेक नाम भी यतना के कहे जा सकते हैं। यतना को प्राकृत भाषा में ‘जयणा’ कहा जाता है। एक बहुत अच्छा सूत्र पढ़ने को मिला-

‘जयणा व्यवहार में, तो शान्ति जीवन में’

यानी कि अगर हमारा प्रत्येक व्यवहार, प्रत्येक क्रिया, यतनापूर्वक होगी तो हमारे जीवन में शान्ति होगी। कैसे? यतना से हमारे जीवन में शान्ति

कैसे आयेगी? सीधी सी बात है कि जब हमारी क्रिया यतनापूर्वक होगी तो हमारे पापकर्मों का बंध नहीं होगा और पापकर्म नहीं बंधेगा तो हमें असाता का, अशांति का उदय भी नहीं आयेगा और हमारे जीवन में शान्ति ही शान्ति रहेगी।

यह निश्चित है कि अगर हम दूसरों को मारेंगे तो हमें भी मरना पड़ेगा, दुःख भोगना पड़ेगा, अशान्ति हमारे जीवन में आयेगी। इसलिए ज्ञानियों ने हमें सूत्र बताया कि “यतना यातना से बचाती है।” इसलिए ‘जयणा व्यवहार में, तो शान्ति जीवन में’ यह सूत्र हम सब की जबान पर होना चाहिए, हम सभी के मन में होना चाहिए, हम सबके आचरण में होना चाहिए। इस सूत्र को चरितार्थ करना हर साधक के हित में अनिवार्य है।

चार गतियों के जीवों में मनुष्य गति के जीव ही यतना कर सकते हैं, यतना रख सकते हैं। नरक, तिर्यञ्च व देवगति के जीव यतना करने में समक्ष नहीं हैं, इसीलिए ज्ञानी गुरु भगवन्तों ने अपने भजन में कहा भी है-‘पाया है मानव का तन, यतना में करना यतन, लक्ष्य को पहचान।फ

मनुष्य का लक्ष्य मोक्ष है तो फिर मनुष्य भव पाकर यतना धर्म का बराबर पालन करके ही मोक्ष के लक्ष्य को पाया जा सकेगा। अन्यथा लक्ष्य दूर हो जायेगा, प्राप्त नहीं किया जा सकेगा। आचाराङ्गसूत्र (9.2.4) कहता है-‘श्रमण भगवान महावीर तप साधना करते हुए 12 वर्ष, 6 माह, 15 दिन-रात यतनापूर्वक, प्रमादों से रहित होकर, समाधिपूर्वक, धर्म एवं शुक्ल ध्यान में संलग्न रहे। यहाँ पर यतना का महत्त्व प्रदर्शित करते हुए सूत्र बता रहा है कि यही सारी साधना भगवान महावीर यदि यतना से



नहीं करते तो क्या उनको केवल ज्ञान, केवल दर्शन की उपलब्धि हो सकती थी? नहीं कदापि नहीं।

उत्तराध्ययन सूत्र का पूरा चौबीसवाँ अध्ययन ही विवेक और यतना के साथ जीवन जीने की कला सिखाता है। समिति-गुप्ति रूप अष्ट प्रवचन माता संयमी जीवन को पूर्ण यतना के साथ जीने का निर्देश करता है, जिससे कर्म-बन्धन से बचा जा सकता है। अन्यथा, सावधानी हटी और दुर्घटना घटी।

आस्रव के बीस भेदों में से 19वाँ एवं 20वाँ भेद हमें स्पष्ट सन्देश देता है कि भण्डोपकरण आदि यहाँ तक कि सुई-कुशाग्र मात्र भी अगर अयतना से लेवे और रखे तो आस्रव होता है, कर्मों का आगमन होता है, जो कर्म बन्ध का कारण बनता है।

यतना मात्र काया से ही नहीं वचन और मन से भी करना जरूरी है। काया के योग से जितने कर्म बन्धते हैं उससे अनन्त-अनन्त गुणा कर्म क्रमशः वचन और मन के योग से बँध सकते हैं। इसलिए काया-वचन-मन से क्रमशः और ज्यादा-ज्यादा यतना एवं सजगता रखने की आवश्यकता है। इसे संक्षेप में निम्नलिखित सूत्रों से समझा जा सकता है-

1. काया की सीमा बहुत सीमित है-दो रोटी, दो कपड़े, दो गज जमीन। वचन तथा मन की सीमाएँ अधिक हैं।
2. द्रव्य बाण तो एक भव में मार सकता है, पर वचन बाण तो भव-भव तक असर करता है।
3. मन के भोग की तो कोई सीमा ही नहीं है-महान् कर्म बन्ध करा सकता है।
4. वचन का विवेक, वचन से यतना आज और भी अधिक महत्त्वपूर्ण हो गई है। वचन की अयतना से ही आज परिवार में, समाज में, देश में सभी जगह कलह-क्लेश हो रहे हैं। इनसे बचने के लिए ही ज्ञानियों ने हमारे लिए वचन व्यवहार के बोलों का प्रतिपादन किया है। श्रावकजी थोड़ा बोले, आवश्यकता होने पर ही बोले, मीठा बोले। छेदकारी-भेदकारी-

मर्मकारी-निश्चयकारी भाषा नहीं बोले आदि-आदि।

5. असमाधि के जो 20 स्थान ज्ञानियों ने फरमाये हैं वे सभी अयतना के कारण ही उत्पन्न होते हैं। अगर सभी कार्यों में यतना रखी जाय तो ये 20 असमाधि के स्थान हमारे जीवन में उपस्थित ही नहीं होंगे। इससे भी यतना की उपयोगिता सिद्ध होती है।
6. दशवैकालिक सूत्र में स्थान-स्थान पर यतना का महत्त्व प्रकाशित किया गया है। गाथा संख्या (5.1.81 एवं 86) में जयं परिद्विविज्जा कहकर परठने में पूर्ण यतना करने का निर्देश किया गया है। गाथा (6.38) में वायुकाय की यतना करने के लिए निर्देश किया गया है कि वस्त्र, पात्र, रजोहरण आदि भी यतना से लेवे और रखे, जिससे कि वायु की विराधना न हो।
7. श्री भगवती सूत्र (9.31) स्पष्ट कहता है कि यतनापूर्वक पालन करने से ही संयम फलता है, फल देता है। संयम जैसी महान् साधना का फल भी पूर्ण यतना से ही प्राप्त होता है, अन्यथा नहीं।

इसलिए यतना धर्म सभी को अपना अनिवार्य है। विकल्प नहीं है, उपवास, अद्विष्ट सभी करें या न भी करें, यतना तो सभी के लिए अनिवार्य है।

हमारे घर का महत्त्वपूर्ण स्थान रसोईघर जिसे पुराने लोग चौका कहते थे। चौका यानी चार की यतना जहाँ होती है वह चौका कहलाता है।

1. पानी की यतना-हमारे रसोईघर में अनछने पानी का उपयोग न हो, धोवन पानी का विवेक हो, साथ ही कम-से-कम जितने पानी के उपयोग से कार्य सम्पन्न किया जा सके उससे ज्यादा पानी खर्च नहीं किया जाना चाहिए। पानी का दुरुपयोग तो बिल्कुल ही नहीं होना चाहिए। आज

लगभग प्रत्येक शहर में पानी की कमी बतलाई जा रही है। कहीं 2 दिन से तो कहीं 3-4-5-7 दिनों से पीने का पानी सप्लाई हो रहा है। सन् 1994 के नेहरूपार्क जोधपुर के चातुर्मास में आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के मुखारविन्द से व्याख्यान में मैंने सुना था कि आज सब ओर पानी के लिए हाहाकार मच रहा है, लेकिन वास्तव में पानी की कमी नहीं है, कमी है पानी के सही उपयोग की। आज हम पानी का घर को धोने में, गाड़ियाँ धोने में, बगीचे में दूब को पिलाने में, नहाने-धोने में इतना दुरुपयोग कर रहे हैं, जिस कारण से ही पानी की कमी हो रही है। अगर हम सही उपयोग करें, दुरुपयोग बन्द कर दें तो पानी की कहीं पर भी कमी नहीं रहेगी। लोक में अनन्त जीव हैं। हवा और पानी सभी जीवों के जीवन का आधार है। प्रकृति ने इन दोनों को बहुतायत में इसीलिए दिया है। पृथ्वी का 71 प्रतिशत से ज्यादा भाग जल है और 29 प्रतिशत से कम थल है। सारा खुला आसमान वायु है। जिस पृथ्वी पर प्रकृति ने इतना जल व वायु उपलब्ध कर रखा है वहाँ पर इनकी कमी सिर्फ इनके दुरुपयोग के कारण ही है। पानी की एक बूँद में असंख्य जीव भगवान ने बतलाएँ हैं, जिसे जानकर भी अगर हम इनका दुरुपयोग कर रहे हैं तो इसके जिम्मेदार हम स्वयं ही हैं, इसके परिणाम हमें ही भोगने पड़ेंगे।

आस्ट्रेलिया जैसे समृद्ध देश में अभी 4-6 माह पूर्व एक नया कानून बनाना पड़ा, जिसमें पानी का दुरुपयोग करने वाले पर आर्थिक जुर्माना लगाने का प्रावधान है तथा पुनः अपराध दोहराने पर जेल भेजने की भी व्यवस्था है। ऐसा कानून बनाने वाला यह छठा देश है। यह कानून क्या मानव की, मानवता की, मानव सभ्यता की दुर्दशा नहीं है?

2. अनाज, दालें, आटा, बेसन, मसाले आदि खाद्य पदार्थ की यतना-सार सम्भाल-विवेकशील गृहिणी कौन? जो अपने चौके के खाद्य

पदार्थों की यतना करे। मुझे याद आता है बचपन में आचार्य भगवन्त श्री हस्तीमलजी म.सा. के मुखारविन्द से व्याख्यान में सुना था कि विवेकवती गृहिणी चौमासा लगने से पहले ही, श्रावण मास आने के पहले ही ज्येष्ठ व आषाढ़ मास में अपनी सभी खाद्य सामग्री की समुचित प्रतिलेखना करे, यतना करे जिससे कि वर्षा आने पर भी उसमें किसी प्रकार की जीवोत्पत्ति ही न हो, हिंसा न हो। आज इस ओर किसी का ध्यान ही नहीं है। किसी को इसके लिए शायद समय ही नहीं है। खाद्य सामग्री की समुचित प्रतिलेखना के अभाव में असंख्य और अनन्त जीवों की विराधना से विवेकपूर्वक, यतनापूर्वक बचने हेतु सावधान गृहिणी का रसोईघर चौका कहलाता है।

3. स्थान की यतना-चौके का स्थान (क्षेत्र से) शुद्ध, स्वच्छ, प्राकृतिक प्रकाश व हवा से युक्त होना चाहिए। जिससे उसमें कीड़ी, मकोड़ी, कसारी, कॉकरोच, चूहे आदि जीव अपना घर न बनायें। स्वच्छता को निरन्तर बनाये रखना आवश्यक है। शान्त स्थान होना चाहिए। आजकल भोजन बनाने व भोजन खाने का स्थान एक साथ मिला हुआ होता है जहाँ टी.वी., टेलीफोन आदि साधन भी रहते हैं। भोजन का स्थान टी.वी. टेलीफोन आदि से मुक्त होना चाहिए। यह स्थान की यतना है।

4. चूल्हे की यतना-चूल्हे का स्थान ढका हुआ होना चाहिए, खुला नहीं। ताकि कोई त्रस जीव जलते हुए चूल्हे में न गिरे। चूल्हे पर भोजन सामग्री गिरने पर उसे शीघ्र साफ करना चाहिए, जिससे उस पर चींटी आदि जीव आकर मरण को प्राप्त न हों। पूँजनी से झाड़-पोंछकर चूल्हा फिर चालू करना चाहिए। अनावश्यक चालू नहीं रहना चाहिए। धीमी आँच से काम हो जाए तो तेज आँच नहीं करना चाहिए। इस तरह जिस रसोईघर में ये चार यतना का समुचित पालन होता है, वहीं चौका कहलाता है।

यतना को इतनी सूक्ष्मता से जानने की क्या आवश्यकता?

आज हमारा दैनिक कार्यकलाप, दैनिक दिनचर्या इतनी गलत व दोषपूर्ण हो गई है और हर कार्य व हमारी हर क्रिया अयतना से ज्यादा होने लग गई है। जीवन इतना तेज (फास्ट) हो गया है कि किसी के पास यतना रखने का अवकाश ही नहीं है, समय ही नहीं है। अयतनापूर्वक कार्यों को करके शायद हम थोड़ा सा समय तो बचा लेते हैं, लेकिन पापकर्मों का पहाड़ सा भार अपने ऊपर लाद लेते हैं जो अन्ततः हमारे लिए ही यातना का कारण बनता है। यतना के लिए समय की कमी का तर्क तब हास्यास्पद लगता है जब हम देखते हैं कि वही व्यक्ति अपना घण्टों का समय निरर्थक टी.वी., मोबाइल, व्हाट्सअप, यूट्यूब आदि पर लगाता है। अयतना से किया गया प्रत्येक कार्य हमारे साथ पाप कर्मों का बंध करवाता है जो कष्ट, दुःख, अशान्ति व असाता उत्पन्न करता है। इसी कारण से आज हमें यतना के स्वरूप को पुनः सूक्ष्मता से समझना जरूरी हो गया है।

यतना किसकी करनी?

यतना मुख्य रूप से जीव की करनी। लेकिन अजीव की भी कभी अयतना-अनादर नहीं करना चाहिए। फूस निकालकर उसे अनादरपूर्वक बाहर उछालकर नहीं फेंकना चाहिए, बल्कि एक तरफ जाकर, नीचे झुककर यतना से परठना चाहिए। जिससे उसका अनादर न हो। आज की नई पीढ़ी को यह बात हास्यापद लग सकती है कि फूस के तिनके या मिट्टी के कण की भी क्या यतना करनी। उसका क्या आदर और क्या अनादर?

सर्वप्रथम तो हमें यह समझना है कि ये जो फूस का तिनका और कण है यह पुद्गल की वर्तमान पर्याय है और इनकी पूर्व पर्यायें कभी न कभी, कहीं न कहीं हमारे लिए उपयोगी-सहयोगी

रही हैं। एक निर्जीव मिट्टी के कण का भी हमारे ऊपर महान् उपकार है। ऐसे ही लाखों, करोड़ों, करोड़ों-करोड़ कण मिलकर ही एक इमारत खड़ी की जाती है, जिसके अन्दर हम आज सुरक्षित, सुव्यवस्थित व सुखपूर्वक रहते हैं। इसलिए अजीव कण का भी अपमान-अयतना करना हमारे हित में नहीं है। साथ ही ऊपर से ही या दूर से कचरे को उछालकर दूर फेंकने से वायुकाय के जीवों की अयतना होती है, कचरा उड़कर पुनः फैल सकता है, त्रस जीवों की भी अयतना होने की सम्भावना रहती है।

यतना मुख्य रूप से जीव की करनी है तो पहले जीव-अजीव के स्वरूप को सूक्ष्मता से समझना आवश्यक है अन्यथा हम जानेंगे ही नहीं तो फिर जीव की यतना कैसे कर पायेंगे। दशवैकालिक सूत्र के चौथे अध्ययन में छह जीविकाय बतलाये गये हैं। जिसे अच्छी तरह समझकर छह काय के जीवों की यतना करना प्रत्येक मनुष्य का कर्तव्य है।

गुरु कृपा से जाना कि प्रत्येक संसारी जीव इन छह कार्यों में परिभ्रमण करता आ रहा है और इन्हीं छह कार्यों में से किसी एक काय में वर्तमान में आया हुआ है। जब तक यह जीव मुक्त नहीं होता है तब तक भविष्य में भी इन्हीं छह कार्यों में पुनः पुनः परिभ्रमण करना है। लेकिन यदि यह जीव इन छह काय के जीवों की यतना करता है, उनकी विराधना नहीं करता है तो वह इन छह कार्यों से मुक्त होकर अविनाशी, अजर-अमर पद प्राप्त कर सकता है, सिद्ध बन सकता है। अतः इन छह काय के जीवों की यतना बहुत आवश्यक एवं उपयोगी है। यही ज्ञानियों के ज्ञान का सार है।

-पूर्व महामंत्री, अ.भ्रा.श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ,  
467-ए, 7 वीं 'ए' रोड़, सरदारपुरा,  
जोधपुर-342003 (राज.)

## Uttarādhyayana Sūtra-Extracts

Shri C. M. Bachhawat, IAS ( Retd. )

Continue From May-June-2020 issue

14.18, 40	“What avail riches for the practice of religion, what a family, what pleasures? We shall become “As fire is produced in the Araṇi-wood, as butter in milk, and oil in sesamum seed, so, my sons, is the soul produced in the body; (all these things) did not exist before, they came into existence, and then they perish; but they are not permanent.” (18) “Whenever you die, O king, and leave all pleasant things behind, the Law alone, and nothing else in this world, will save you, O monarch. (40)	Wealth-Not essential for religion. Religion only saviour
14.24- 25	“The day that goes by will never return; the days elapse without profit to him who acts contrary to the Law. (24) .... The days elapse with much profit to him who acts up to the Law.” (25)	Time Management- Pramada
14.27	“He who can call Death his friend, or who can escape him, or who knows that he will not die, might perhaps decide: this shall be done tomorrow. (27)	Time Management- Pramada
14.39	“If the whole world and all treasures were yours, you would still not be satisfied, nor would all this be able to save you. (39)	Greed - Unlimited
	<b>15th Lecture: The True Monk. MESSAGE : Be hardworking</b>	
15.1,3	He who adopts the Law in the intention to live as a monk, should live in company (with other monks), upright, and free from desire; he should abandon his former connections, and not longing for pleasures, he should wander about as an unknown beggar: then he is a true monk. (1) ..... Ignorant of abuse and injury, a steadfast monk should be a model of righteousness, always protecting his soul (from sins), neither rash nor passionate; when he endures everything, then he is a true monk. (3)	Monk – Conduct
15.15	He who understands all religious disputations, [who lives together with fellow-monks], who practises self discipline, who meditates on his soul, who is wise, hardy, and observes everything, who is calm, and does not hurt anybody, he is a true monk. (15)	Monks

	<b>16<sup>th</sup> Lecture : The Ten Conditions of Perfect Chastity</b> <b>MESSAGE : Be self-controlled</b>	
16	Here, indeed, the venerable Sthaviras have declared ten conditions for the realisation of celibacy, by hearing and understanding which the monks will reach a high degree of self-discipline, of Saṃvara, and of contemplation, will be well protected (by the three Guptis ), will guard their senses, guard their chastity, and will thus never be remiss (in the attendance on their religious duties).	Monks
16.16	The gods, Dānavas, Gandharvas, Yakṣas, Rākṣasas, and Kinnaras pay homage to a chaste monk who performs his difficult duties. (16)	Monks- respected by Gods for chastity
	<b>17<sup>th</sup> Lecture : The Bad Śramaṇa MESSAGE : Avoid bad</b>	
17.3	He who, after entering the order, always sleeps, eats, and drinks as much as he likes, and lives comfortably, is called a bad Śramaṇa. (3)	Monks – Bad Sramana (Pramada)
	<b>18<sup>th</sup> Lecture : Sañjaya MESSAGE : Be forgiving</b>	
18.1, 3	In the town of Kāmpilya there was a king, named Sañjaya, who possessed numerous troops and war-chariots; once he went a-hunting. (1) He chased the deer on horseback in the Kēsara-park of Kāmpilya; and intent on his sport he killed there the frightened deer. (3)	Hunting by King
18.10-11	“I am Sañjaya; answer me, Reverend sir; a monk might by the fire of his wrath reduce millions of men to ashes.” (10) “Be without fear, O king; but grant safety to others also; in this transient world of living beings, why are you addicted to cruelty? (11)	Transitory life-Avoid cruelty. Abhaydan by Monk
18.13	“Transient like a stroke of lightning are life and beauty, which you love so much; you do not comprehend what will benefit you in the next life. (13)	Transitory World and life
18.16-17	“O king, other men, glad, and pleased, and well attired, will enjoy the riches (the deceased) had amassed, and will dally with the wives he had so well guarded. (16)	Karman

	“And whatever actions he has done, good or wicked ones, with their Karman he will depart to his next existence.” (17)	
18.33	“A wise man believes in the existence of the soul, he avoids the heresy of the non-existence of the soul; possessing true faith one should practise the very difficult Law according to the faith. (33) *** This chapter lists out many kings who adopted the path of Sramana, i.e. liberation.	Soul-Permanent Existence
	<b>19<sup>th</sup> Lecture: The Son of Mṛgā</b> <b>MESSAGE : Soul adopts many forms</b>	
19.1,2, 4-6	In the pleasant town of Sugrīva, which is adorned with parks and gardens, there was the king Balabhadra and Mṛgā, the principal queen. (1) Their son Balaśrī, also known as Mṛgāputra (i.e. son of Mṛgā), the darling of his father and mother, was crownprince, a (future) lord of ascetics. (2) ..... Standing at a window of his palace, the floor of which was inlaid with precious stones and jewels, he looked down on the squares, places, and roads of the town. (4) Once he saw pass there a restrained Śramaṇa, who practised penance, self-restraint, and self-control, who was full of virtues, and a very mine of good qualities. (5) Mṛgāputra regarded him with fixed eyes, trying to remember where he had seen the same man before. (6)	Memory of previous births
19.13	“I take no delight in this transitory body which one must leave sooner or later, and which is like foam or a bubble. (13)	Transitory world-realization is crucial
19.15/ 16	“Birth is misery, old age is misery, and so are disease and death, and ah, nothing but misery is the Saṃsāra, in which men suffer distress. (15)	Human Life - Full of pains
19.44, 76	He answered: “O father and mother, it is even thus as you have plainly told; but in this world nothing is difficult for one who is free from desire. (44) He answered: “O father and mother, it is even thus as you have plainly told; but who takes care of beasts and birds in the woods? (76)	Determined person- nothing difficult

19.49	“An infinite number of times have I been roasted over a blazing fire in an oven, screaming loud, head down and feet aloft. (49)	Knowledge of previous births >
19.88	He observed the five great vows, practised the five Samitis, and was protected by the three Guptis; he exerted himself to do mental as well as bodily penance. (88) *** The chapter gives vivid description of conversation between father and son	5 Vows, 5 Samitis and 3 Guptis- practiced by Mrgaputra
	<b>20<sup>th</sup> Lecture : The Great Duty of the Nirgranthas + King Shrenika&gt; MESSAGE : No one is protector in this world</b>	
20.12	“You yourself are without a protector, Śrēṇika, ruler of Magadha; and as you are without a protector, how can you protect anybody else?” (12)	King- Himself not protected
20.18, 19	“There is a town Kauśāmbī by name, which is among towns what Indra is (among the gods); there lived my father, who possessed great wealth. (18) “In my childhood, O great king, I caught a very bad eye-disease and a severe burning fever in all my limbs, O ruler of men. (19) “They tried to cure me according to the fourfold science which they had been taught; but they could not rid me of my pains: hence I say that I am without protection. (23)	King- Helplessness, Not Protected
20.32, 33, 34, 35	“If I, for once, shall get rid of these great pains, I shall become a houseless monk, calm, restrained, and ceasing to act. (32) “While I thought so, I fell asleep, O ruler of men; and after that night my pains had vanished. (33) “Then in the morning of the next day I took leave of my relations and became a houseless monk, calm, restrained, and ceasing to act. (34) “Thus I became the protector of myself and of others besides, of all living beings, whether they move or not. (35)	True Prayer before the Almighty - Answered
20.37	“My own Self is the doer and undoer of misery and happiness; my own Self, friend and foe, according as I act well or badly. (37)	Karman-determines Destiny
20.41	“One who for a long time wears a shaven crown and mortifies himself, but who is careless with regard to the vows, and neglects	Real Dharma is important

	penance and self-control, will not be a winner in the battle (of life). (41)	and not outer look
20.48	“A cut-throat enemy will not do him such harm as his own perversity will do him; the man without pity will feel repentance in the hour of death. (48)	Self Control
20.52-54	“He who possesses virtuous conduct and life, who has practised the best self-control, who keeps from sinful influences, and who has destroyed his Karman, will reach (in the end) the greatest, best, and permanent place (viz. mukti),” (52) Thus the austere and calm, great ascetic and great sage who kept great vows and possessed great fame, preached at great length this great sermon: the great duty of the Nirgranthas. (53) And king Śrēṅika, pleased, spoke thus: “You have truly shown what it is to be without protection. (54)	Karman – Destruction – path to salvation
	<b>21“ Lecture : Samudrapala&gt; MESSAGE : Qualities of a great monk</b>	
21.12	One should keep the five great vows, viz. not to kill, to speak the truth, not to steal, to be chaste, to have no property whatever; a wise man should follow the Law taught by the Jinas. (12)	Samudrapala is son of Palita, the merchant, born on ship in the Sea
21.14	Now and then he should travel in one country, taking into consideration its resources and his own ability; like a lion he should not be frightened by any noise; and whatever words he hears, he should not make an improper reply. (14)	Continuous travels - mobility
21.15-16	In utter indifference he should walk about, and bear everything, be it pleasant or unpleasant; he should not approve of everything everywhere, nor care for respectful treatment or blame. (15)	Maintain equanimity. Not approve or accept everything
21.20	A great sage should be neither too elevated by pride nor too humble, he should not care for respectful treatment nor blame; an ascetic who has ceased (to act), will by means of his simplicity enter the path of Nirvāṇa. (20) He is neither grieved nor pleased (by anything), he abandons his relations with men, he ceases (to act), is intent on the benefit of his	Equanimity in conduct (Samata)



	soul, he strives for the highest good (viz. mukti), and uses the means to reach it, free from sorrow, egoism, and any kind of property. (21)	
	<b>22<sup>nd</sup> Lecture: Rathanemi MESSAGE: Control your passions</b>	
22.14-20	On his way he saw animals, kept in cages and enclosures, overcome by fear and looking miserable. (14) Seeing them on the point of being killed for the sake of their flesh, and to be eaten afterwards, the great sage spoke to his charioteer thus: (15) “Why are all these animals, which desire to be happy, kept in cages and enclosures?” (16) Then the charioteer answered: “Lucky are these animals because at thy wedding they will furnish food for many people.” (17) Having heard these words, which announced the slaughter of many animals, the great sage, full of compassion and kindness to living beings, meditated thus: (18) “If for my sake many living beings are killed, I shall not obtain happiness <i>in the next world.</i> ” (19) Then the famous man presented the charioteer with his pair of earrings, his neck-chain, and all his ornaments. (20)	Marriage Procession of Aristhemi – Realisation of Truth
22.29	Rājimatī thought: “Shame upon my life, that I have been forsaken by him! It is better I should turn nun.” (29)	Realisation by Rajimati
22.33, 34, 37, 40-42, 46	On her way to mount Raivataka it began to rain; her clothes being wet, she entered a cave and waited there in the darkness while it was raining. (33) She took off her clothes and was naked as she was born, thus she was seen by Rathanēmi, whose (peace of) mind (thereby) disturbed; and afterwards she saw him. (34) “I am Rathanēmi, O dear, beautiful, sweetly-speaking lady! Do accept me for your lover, O slender one, you shall have no cause to complain. (37) The daughter of the best king, true to self-control and her vows, maintained the honour of her clan and family, and her virtue, and spoke to him: (40) “If you owned the beauty of Vaiśramaṇa, the pleasing manners of Nalakūbara, if you were like Purandara himself, I should have no desire for you. (41) “Fie upon you, famous knight, who want to quaff the vomited drink for the sake of this life; it would be better for you to die. (42) Having heard these well-spoken words of the virtuous lady, he returned to the Law like an elephant driven by the hook. (46)	Conversation between Rajimati & Rathnemi – Awakening of Rathnemi

*Continue in the next issue*

*-President, Samyaggyan Pracharak Mandal  
(Technical Member, West Bengal Taxation Tribunal)*

## शरीर से जुड़ा व्यक्ति परिस्थिति से जुड़ जाता है

श्री टाट बाबा

मानव एक अज्ञात प्रवाह में बहता जा रहा है। उसे यह होश ही नहीं है कि वह किधर बह रहा है। उसके सामने भविष्य की आशा है, यही आशा की बेहोशी उसे प्रवाहित करती जा रही है। उसे लगता है कि जो मुझे प्राप्त है वह अधूरा है और जो मुझे भविष्य में मिलेगा उससे मैं तृप्त हो जाऊँगा। जिस परिस्थिति में मैं घुट रहा हूँ, जिस नीरस परिस्थिति को ढो रहा हूँ यदि यह परिस्थिति हमारी बदल जाये और मुझे मेरी कल्पना के अनुसार परिस्थिति मिल जाये तो मैं आनन्दित हो जाऊँगा।

हे मानव! परिस्थितियों का आश्रय लेने वाला व्यक्ति कभी भी आनन्दित नहीं हो सकता। हाँ इतना जरूर है कि अनुकूल परिस्थिति आने पर हमें सुख की सुगन्ध मिल सकती है। लेकिन यह ध्यान रहे उस सुखद परिस्थिति के सौरभ के साथ कहीं न कहीं दुःख का काँटा निश्चित संलग्न होगा।

तुम कभी-भी ऐसी परिस्थिति को उपलब्ध नहीं कर सकते जिसमें नितान्त सुख ही सुख के पुष्प खिलते हों, तथा दुःख के काँटे का पूर्णतः अभाव हो।

कितनी ही अनुकूल परिस्थिति हो वहाँ सुख की सुगन्ध और दुःख की दुर्गन्ध निश्चित होगी। परिस्थिति की धरा पर सुख और दुःख के अंकुर अंकुरित होते ही हैं।

यह प्रकृति द्वन्द्वात्मक है। यहाँ पर परिस्थिति में द्वन्द्व रहेंगे ही। कहीं सुख की मात्रा अधिक होगी और दुःख की मात्रा कम, तो कहीं दुःख की मात्रा ज़्यादा और सुख की मात्रा कम होगी।

प्रत्येक परिस्थिति एक सरिता के समान है जिसमें सुख-दुःख की लहरें उठती ही रहती हैं। हम अपने वर्तमान में मिले हुए सुख एवं दुःख का सदुपयोग तो कर नहीं पाते, बल्कि भविष्य में दुःख को मिटाने एवं सुख

को सदैव सुरक्षित रखने की कल्पना करते रहते हैं। दुःख की तरंग को मिटाने के लिए संघर्ष करते हैं, सुख की तरंग को और तीव्रतर करने का प्रयास करते हैं।

हमारी वर्तमान की शक्ति इसी संघर्ष में व्यय होती रहती है। हम द्वन्द्व से लड़ते रहते हैं। यह द्वन्द्व समाप्त तो हो नहीं पाते इनसे लड़-लड़ कर हम टूटते अवश्य जाते हैं।

द्वन्द्व से मुक्त होने के लिए हमें द्वन्द्व से लड़ना नहीं है। सुख-दुःख के हादसे से बाहर निकलने के लिए हमें सुख-दुःख से टकराना नहीं है। केवल वह विद्या समझ लेनी है कि हमें परिस्थितियों में रहते हुए उससे मुक्त कैसे होना है।

परिस्थिति का पत्थर हमारे सामने पड़ा है। यदि हम उस पत्थर से टकराते हैं तो चोट खाते हैं। यदि कलाकार हैं तो पत्थर को तराशना शुरू कर देते हैं। और धीरे-धीरे पत्थर से प्रतिमा उभरने लगती है।

प्रत्येक परिस्थिति में पत्थर में कुछ न कुछ अनावश्यक लगा होता है। कलाकार क्या करता है? वह अनावश्यक पत्थर को हटाता चला जाता है। वह प्रतिमा का निर्माण नहीं करता प्रतिमा तो सहज ही में निर्मित हो जाती है। वह तो प्रतिमा के अंग-प्रत्यंग के चारों ओर जो अनावश्यक पत्थर जमा होता है उसे हटा देता है, प्रतिमा प्रगट होती जाती है।

हम सभी की परिस्थिति में भी कुछ न कुछ अनावश्यक पत्थर लगा हुआ है। हम उस अनावश्यक पत्थर को हटाने का प्रयास करें।

हम देखें जिस परिस्थिति में हम रह रहे हैं। जहाँ हमारे दामन में दुःख के शूल चुभ रहे हैं। वहाँ हमारे जीवन में अनावश्यक क्रियाएँ किस प्रकार हो रही हैं। हम दिन में व्यर्थ वार्ता कितनी करते हैं। जिन लोगों के बीच में रह रहे हैं उनकी निन्दा करने में हमें कितना रस आ रहा

है। जो लोग हमें संस्कारवश परिस्थिति के प्रांगण में मिले हैं, उनका हम व्यर्थ संग कितना करते हैं?

इसी प्रकार अपनी दिनचर्या में देखते रहें कि हमारे जीवन में व्यर्थ का कचरा कितना एकत्रित होता जा रहा है।

व्यर्थ बोलना, देखना, सुनना, संग करना, घूमना इत्यादि जो हमारे विवेक से व्यर्थ दिखाई देता है उसके प्रति हमें जागरूकता पूर्वक द्रष्टाभाव रखना है। जैसे-जैसे हम व्यर्थ को देखते जायेंगे व्यर्थ सहज में ही झरता चला जायेगा। बस व्यर्थ हमें दिखाई पड़ना चाहिए जब तक हम व्यर्थ को सार्थक समझते रहेंगे व्यर्थ कभी-भी हमसे विलग नहीं हो सकता।

क्या हम उस समय सजग होते हैं जब हम अनर्गल व्यर्थ की चर्चा करते हैं? क्या किसी दूसरे व्यक्ति की निन्दा करते समय हम जागरूक होते हैं कि जो निन्दा के बीज हम अभी अपने जीवन के खेत में बो रहे हैं, इन बीजों से जो कष्ट के काँटे उगेंगे वे हम ही को चुभेंगे?

हम तो बड़ी मस्ती में व्यर्थ का कूड़ा इकट्ठा करते जाते हैं और वही कूड़ा जब सड़-गलकर बदबू देने लगता है तो हम फिर परेशान होते हैं।

हमें तो ऐसा लगता है कि हम व्यर्थ की परतें जमाते समय इतने असावधान होते हैं कि हमें लगता ही नहीं कि हम व्यर्थ को इकट्ठा कर रहे हैं। हम एक ऐसी बेहोशी में होते हैं कि हमें इस बात का होश ही नहीं होता कि जो हम व्यर्थ कर रहे हैं इसका परिणाम हमीं को भुगतना पड़ेगा।

व्यर्थ करते-करते व्यर्थ करने की हमारी ऐसी आदत पड़ जाती है कि हमें व्यर्थ में ही रस आने लगता है। गन्दी चीजें खाने और पीने की आदत पड़ जाने पर वही चीजें हमें स्वादिष्ट लगने लग जाती है। जिस सुरा को हम स्पर्श भी नहीं करेंगे उसी सुरा को पान करने वाले व्यक्ति सुरा को देखते ही उमंग से उत्तेजित होने लगते हैं। जिस मांस को हम देखना भी पसन्द नहीं करेंगे उसी मृतक पशु का मांस खाकर लोग कितने खुश होते हैं। हमने देखा है कि मुर्गी की निम्न इन्द्रियों में आने वाला

पदार्थ लोग कितने शौक से खाते हैं। वह यह भी नहीं सोचते कि यह पदार्थ जिसे हम खा रहे हैं यह मुर्गी के उस स्थान से आ रहा है जिससे मुर्गी मल त्याग करती है।

हम लोग यदि व्यर्थ को, अशुभ को, अनावश्यक को होश पूर्वक देखें तो यह सहज में ही विदा होते चले जायें।

सबसे पहले तो हम शरीर का संग करते हैं और संग करते-करते शरीर से इतने जुड़ जाते हैं कि अपने को शरीर ही समझने लगते हैं।

शरीर से जुड़ा हुआ व्यक्ति परिस्थिति से सहज में ही जुड़ जाता है और फिर उसकी यात्रा दुःख-सुख के प्रवाह में प्रवाहित होने लगती है। फिर वह अपने वर्तमान में असन्तुष्ट होकर भविष्य की सुखद कल्पना के गगन में उड़ान लेने लगता है।

शरीर से तादात्म्य होते ही द्वन्द्व के अंकुर अंकुरित होने लगते हैं। द्वन्द्व का शमन करने के लिए हम तथाकथित आध्यात्मिक कर्मकाण्ड का आश्रय लेते हैं और क्रिया की कृपाण से द्वन्द्व के कँटीले पौधों को काटने की कोशिश करते हैं। पौधे ऊपर से कट जाते हैं, लेकिन जड़ें समाप्त नहीं हो पाती, फिर जब भी व्यर्थ संग की वर्षा होती है वही गन्ध की दबी हुई जड़ें अंकुरित होने लगती हैं और द्वन्द्व के पौधे पल्लवित होने लगते हैं।

क्रिया थोड़े समय के लिए द्वन्द्व से मुक्त करती हुई प्रतीत होती है, लेकिन उससे हल नहीं होती।

एक व्यक्ति कोई भी आध्यात्मिक क्रिया कर रहा है जिसे वह आध्यात्मिक क्रिया समझता है। जितनी देर क्रिया का प्रवाह चलता है उसे द्वन्द्व की पदध्वनि सुनाई नहीं पड़ती। क्रिया की पूर्ति के बाद तक भी उसके प्रभाव से प्रभावित रहता है। फिर धीरे-धीरे प्रभाव न्यून होता जाता है और द्वन्द्व की दुन्दुभि सुनाई पड़ने लगती है।

समस्या तो तब सुलझती है जब शरीर से जो तादात्म्य हो गया है उस पर व्यक्ति की नज़र पड़ने लगती है। जो चेतना तादात्म्य के कारण बेहोशी में जाने लगी थी, तादात्म्य का बोध होते ही चेतना जागृत होने लगती है।

अभी तक दृश्य के प्रवाह में बह रहे थे, परिस्थिति की परिधि की परिक्रमा कर रहे थे। अब हम अपने केन्द्र पर ठहरते हुए देख रहे हैं कि परिस्थिति बाहर है। उसके प्रभाव केवल शरीर पर पड़ रहे हैं। हम शरीर को भी देख रहे हैं कि यह शरीर भी हमसे बाहर है। यह हमारी असावधानी थी कि हम अपने को शरीर समझने लगते थे।

जैसे ही हमने अपने को शरीर माना हमारे ऊपर परिस्थितियों का प्रभाव पड़ने लगा। हम परिस्थिति के पत्थर के नीचे दबने लगे, परिस्थिति के प्रभाव में पिसने लगे।

आ गया संयोग का बसन्त, खिल गये चारों ओर सुख के पुष्प। अब उनकी सुगन्ध में थिरक रहे हैं। भ्रम बनकर उन पर मण्डरा रहे हैं।

फूल तो फूल हैं। अभी खिले हैं शाम होते-होते मुरझा जायेंगे। दूसरे दिन प्रभात में पौधे से झड़ जायेंगे। पत्तियाँ बिखर जायेंगी। धूल में मिल जायेंगी।

फिर पुष्प खिलेंगे मुरझायेंगे, डाली से टूटेंगे, बिखरते चले जायेंगे यह क्रम चलता ही रहेगा।

बसन्त के बाद आ जायेगा पतझड़, संयोग के बाद घटेगी वियोग की घटना। वियोग के झंझावात में सभी कुछ बिखर जायेगा। वृक्ष से टहनी अलग हो जायेगी। लता से पुष्प गिर जायेगा।

सभी कुछ जो अभी तक भरा-भरा था, सूना-सूना हो जायेगा वे जो नयन अभी मुस्कराते थे, आँसुओं से भर जायेंगे। जो पैर अभी थिरकते थे निष्प्राण हो जायेंगे। जो परिस्थिति अभी तक सुख के संगीत से गूँजती थी जहाँ चैन की शहनाई बजती थी वहीं मातम की बेसुरी आवाजें आने लगेंगी। जहाँ खुशियों की किलकारी फूटती थी वही दुःख की प्राचीरों में टकराने लगेगी।

यह सब तब तक होता रहेगा जब तक हम इस शरीर से जुड़े रहकर अपने को शरीर स्वीकार करते रहेंगे। जैसे ही शरीर के द्रष्टा हुए शरीर की सीमा में घटने वाले सभी द्वन्द्वों से हम मुक्त होते जायेंगे। जब तक चेतना अपने को शरीर समझती रहती है और

शरीर के संग से प्रभावित होती रहती है तब तक तो अध्यात्म यात्रा शुरू ही नहीं होती।

अध्यात्म यात्रा द्रष्टाभाव से शुरू होती है। जब व्यक्ति यह महसूस करता है कि शरीर अलग है और मैं अलग हूँ। हमारा और शरीर का कोई भी जातीय सम्बन्ध नहीं है। शरीर पञ्चतत्त्वों का अनुभाग है और हम सच्चिदानन्द के स्वरूप हैं। जब तक जीवन में कर्तव्य का अभिमान है तब तक तो अध्यात्म के नाम पर होने वाली सभी क्रियाएँ सांसारिक क्रियाएँ ही हैं। भले उन्हें अध्यात्म का चोला पहना दिया गया हो।

आपके सामने बहुत सुन्दर भोजन की थाली रखी हुई है। आप की मनपसन्द का बड़ा ही स्वादिष्ट भोजन है। अचानक उड़ता हुआ पक्षी थाली में विष्टा कर देता है। फिर क्या आप उस भोजन को ग्रहण करेंगे? आप फौरन भोजन की थाली को सामने से हटा देंगे और कहेंगे कि यह भोजन मैं नहीं करूँगा। बाहर किसी जानवर को डाल दो वह खा लेगा। आप लोग अध्यात्म के नाम पर जितनी भी क्रियाएँ करते हैं, जब उनमें कर्तृत्व की विष्टा पड़ जाती है तो फिर वह स्वीकार योग्य नहीं रहता।

व्यक्ति सोचता है कि शरीर चल रहा है तो मैं चल रहा हूँ। वह शान्त और मौन होकर यह देख नहीं पाता कि चलने के यन्त्र पैर हैं। यदि पैर असमर्थ हो जाते हैं, व्यर्थ हो जाते हैं, अतिरोग ग्रस्त हो जाते हैं तो चलने की क्रिया अवरुद्ध हो जाती है। लेकिन उस दशा में भी आप महसूस करते हैं कि पैरों को देखने वाला जानने वाला महसूस करने वाला असमर्थ नहीं हो गया।

चेतना तो द्रष्टा की तरह प्रत्येक इन्द्रिय की क्रिया को देख रही है। शरीर के प्रत्येक उपकरण के विषय में परिचित है कि कौन-कौन सा उपकरण विधिवत् कार्य कर रहा है या किस-किस उपकरण की क्षमता क्षीण होती जा रही है।

चैतन्य को प्रत्येक उपकरण का बोध है। वह जानता है कि देखने वाले उपकरण नेत्र की शक्ति धीरे-धीरे क्षीण होती जा रही है। सुनने वाले उपकरण कर्ण की क्षमता शनैः शनैः घट रही है। भोजन आदि चबाने वाले दाँत-मुँह से धीरे-धीरे विदा हो रहे हैं। इस प्रकार चैतन्य को प्रत्येक उपकरण के विकास और ह्रास का बोध है।

बालक का शरीर से तादात्म्य है, इसलिए वह तादात्म्य की भाषा बोलता है। वह अपनी माँ से कहता है माँ मैं बड़ा हो रहा हूँ। माँ देखो हम लम्बे हो रहे हैं। बच्चे ने अपने को शरीर ही समझ लिया है। इसलिए वह ऐसी भाषा बोलता है सच पूछो तो जो भी ऐसा है, और ऐसी भाषा बोलता है वह किसी भी उम्र का व्यक्ति हो, बालक ही है।

हमने बहुत समझदार व्यक्तियों को भी तादात्म्य की भाषा बोलते हुए देखा है। शरीर को बुखार आ जाता है। वे कहते हैं, मुझे बुखार आ रहा है। अब जरा गौर से देखिये बुखार तुम्हें आ रहा है? शरीर को बुखार आया, शरीर को औषधि खिलाई गयी, शरीर स्वस्थ हो गया। शरीर से जुड़ा व्यक्ति महसूस करता है, मुझे बुखार आया मैंने औषधि खाई, मैं स्वस्थ हो गया।

शरीर के साथ चैतन्य का तादात्म्य ही बन्धन

है। तादात्म्य की भाषा मिटते ही चैतन्य नित्य मुक्त है।

वास्तविकता तो यह है कि चैतन्य तादात्म्य के आभास के समय भी मुक्त ही है। बन्धन तो उसे कभी स्पर्श ही नहीं कर सकता। वह अपनी ही असावधानी से शरीर की सभी क्रियाओं को अपने ऊपर आरोपित कर लेता है। यही आरोपण जीवन में सुख-दुःख के प्रवाह में व्यक्ति को प्रवाहित करता है।

हमारी अध्यात्म की यात्रा पहले भेद से शुरू होती है। पहले हमें यह भेद करना पड़ता है कि शरीर अलग है और हम अलग हैं। शरीर दृश्य है और हम द्रष्टा हैं। जैसे-जैसे हमारे और शरीर के बीच में दूरी बढ़ती जाती है, तादात्म्य का आभास मिटता जाता है।

सच्चाई तो यह है कि हमारा और शरीर का कभी मेल हुआ ही नहीं। हम और शरीर कभी अभिन्न हुए ही नहीं। हमारा स्वरूप तो नित्य असंग है। बस शरीर में रहते हुए हम महसूस करने लगते हैं कि हम शरीर हैं। सद्गुरु का इतना ही काम है कि वह हमें हमारे वास्तविक स्वरूप का परिचय करा दें और बता दें कि हम शरीर नहीं हैं। चैतन्य हैं, नित्य असंग हैं।

- 'ध्यान की कला' पुस्तक से गृहित, टाट-बाबा फाउण्डेशन, गोपेश्वर, वृन्दावन-281121 (उप्र)

### दया

डॉ. रमेश 'मयंक'

जहाँ नहीं दया  
वहाँ नहीं  
ध्यान-ज्ञान और तप  
फिर कैसे होगा  
ज्ञान-दर्शन-उत्तम आचरण  
उत्तम चरित्र का समावेश?  
बिन दया के  
निष्ठुर पत्थरवत् जड़तायुक्त  
रह जाएगा-समूचा परिवेश।

### उत्तम पात्र

शरीर को पर-पदार्थ मानें  
तो सांसारिक मोह-ममता से  
बच पायेंगे,  
धर्म-शिक्षा; तप-संयम  
साधन की तरफ़  
एक-एक कदम सोच समझकर बढ़ायेंगे  
तभी परम हित सुख शान्ति की  
प्राप्ति के लिए  
उत्तम पात्र बन जायेंगे।

-बी 8, मीरा नगर, चित्तौड़गढ़-321001 (राज.)

## कर्मों का बन्धन एवं निर्जरा

श्री सौभाग्यमल जैन (एडवोकेट)

प्रकृति के अनुसार प्रत्येक प्राणी की चित्त की चेतना के चार खण्ड हैं—(1) विज्ञान खण्ड, (2) संज्ञा खण्ड (3) संवेदना खण्ड और (4) संस्कार या कर्म खण्ड। हमारे शरीर में मुख्य रूप से पाँच इन्द्रियाँ एवं मन कार्य करते हैं। पाँच इन्द्रियाँ हैं—कान, नाक, आँख, जिह्वा और त्वचा।

यहाँ विज्ञान खण्ड का अर्थ है—जानना (Consciousness) जैसे कोई शब्द आया, जिसे कान से सुना कि कोई शब्द आया, उसके तुरन्त बाद ही हमारे चित्त की चेतना का दूसरा संज्ञा खण्ड कार्य करता है जो उस शब्द को पहचानने का, मूल्याङ्कन करने का, कि शब्द कैसा है प्रशंसा का या गाली का। इसके बाद चेतना का ही तीसरा खण्ड कार्य करता है। संवेदना का जो शब्द प्रशंसा या गाली का आया उससे चित्त में संवेदना उत्पन्न हुई तो सुखद भी होती है, दुःखद भी होती है। इसके बाद चेतना का चौथा खण्ड संस्कार जिसे कर्मबन्धन भी कहा गया है प्रकट होता है। संवेदना होने के तुरन्त बाद ही जो प्रतिक्रिया होती है वहाँ कर्म बन्धन होता है। यद्यपि यह संवेदना सुखद हो या दुःखद हो, नश्वर होती है।

यह उपर्युक्त प्रक्रिया सभी इन्द्रियों यथा—आँख पर, जिह्वा पर, नाक पर, कान पर, त्वचा पर और मन पर समान रूप से लागू होती है। जैसे—हम कान पर देखें कि कोई शब्द की तरंग टकराई, जानकारी हुई फिर पहचाना, फिर मूल्याङ्कन किया, फिर संवेदना हुई तुरन्त प्रतिक्रिया हुई, फिर शब्द प्रशंसा का आया या गाली का, इससे कर्म का बन्धन हो गया। जिह्वा पर कोई रस आया, उसे जाना—पहचाना, मूल्याङ्कन हुआ (मीठा या कड़वा) फिर संवेदना हुई, उसके बाद प्रतिक्रिया हुई, कर्म का बन्धन हुआ। इसी प्रकार आँख पर कोई रूप टकराया जाना—पहचाना, मूल्याङ्कन

हुआ—सुन्दर है या कुरूप है, संवेदना हुई, प्रतिक्रिया हुई और कर्म का बन्धन हुआ। इसी प्रकार नाक पर कोई गन्ध टकराई, जाना, पहचाना, मूल्याङ्कन हुआ—सुगन्ध या दुर्गन्ध आई, फिर संवेदना हुई, फिर प्रतिक्रिया हुई और कर्म का बन्धन हुआ। इसी प्रकार त्वचा पर कोई स्पर्श हुआ—जाना, फिर पहचाना, मूल्याङ्कन हुआ। स्पर्श कोमल है या फिर अकोमल, संवेदना हुई, प्रतिक्रिया हुई कर्म का बन्धन हुआ। इसी प्रकार मन पर कोई चिन्तन (विषय) आया, जाना फिर पहचाना मूल्याङ्कन किया, मन में गुदगुदी हुई, संवेदना हुई, प्रतिक्रिया हुई कर्म का बन्धन हुआ।

इस प्रकार से हमारी ये पाँच इन्द्रियाँ एवं मन हमारे कर्म बन्धन में सहायक होते हैं। बन्धन राग एवं द्वेष से होता है या कषाय से होता है। इष्ट वस्तु, व्यक्ति आदि के प्रति राग तथा अनिष्ट वस्तु, व्यक्ति आदि के प्रति द्वेष होता है। यदि सुखद संवेदना हुई तो प्रिय लगी, उसके प्रति राग जागा। दुःखद संवेदना हुई अप्रिय लगी, उसके प्रति द्वेष जागा, इसका कारण यह है कि हमारी इन्द्रियों पर ज्योंही इससे सम्बन्धित विषय टकराते हैं त्योंही त्वरित गति से जानने—पहचानने, मूल्याङ्कन करने, संवेदनशील होने और प्रतिक्रिया कर कर्म—बन्धन (संस्कार) करने का कार्य करते हैं। इसी आदत से बाहर निकलना है।

यदि हम चित्त के तीसरे खण्ड में जो संवेदना होती है उस पर राग—द्वेषात्मक या कषायात्मक प्रतिक्रिया नहीं करें तो कर्म—बन्धन नहीं होगा। जब संवेदना होती है उस पर प्रतिक्रिया नहीं करके तटस्थ रह जाते हैं, निर्लिप्त रह जाते हैं, द्रष्टा भाव से देखते हैं यानी जो कुछ हो रहा है उसे भोगे नहीं मात्र देखें, तो हमारा जितना द्रष्टाभाव पुष्ट होगा उतना, भोक्ता भाव का स्वभाव राग—रञ्जित, द्वेष

रञ्जित रहने का स्वभाव टूटता चला जायेगा और वीतरागता, वीत-द्वेषता दृढ़ होती चली जायेगी। प्रज्ञा पुष्ट होगी, यानी हम प्रज्ञा में स्थित होंगे तो नया कर्म-बन्धन नहीं होगा।

### कर्म बन्धन को रोकने का सरल तरीका

हमने पूर्व में देखा कि इन्द्रियों के विषय हमें बाँधने वाले होते हैं, परन्तु विषयों से ही कोई हानि नहीं होती-हानि होती है विकारों से। विषय हमारा क्या लेते हैं, शब्द अपनी जगह है, रूप अपनी जगह है, गन्ध अपनी जगह है, स्पर्श अपनी जगह है, रस अपनी जगह है, और चिन्तन अपनी जगह है उनकी वजह से विकार नहीं जागता। विकार जागता है इन्द्रियों और विषय के सम्पर्क से जो संवेदना हुई और जो मूल्यांकन हुआ, उस पर राग जागता है, उस पर द्वेष जागता है।

इस प्रकार से जब-जब इन्द्रियों का विषयों से स्पर्श होता है तो त्वरित गति से मूल्याङ्कन होकर संवेदना होने लगती है और जिस समय स्पर्शजन्य संवेदना होती है उस समय होश नहीं रहे तो हम राग या द्वेष जगाने ही लगते हैं, ऐसा स्वभाव बन गया है।

विषय तो कायम रहेंगे ही, इन्द्रियों का विषयों से सम्पर्क भी होगा ही, लेकिन अपनी वजह से जो विकार जागता है, उस पर रोक लगानी है। रोक जहाँ संवेदना जगती है वहाँ लगानी होगी। हर संवेदना के प्रति राग-विहीन रहना है, द्वेष-विहीन रहना है, अब उसकी जगह पर संवेदना के साथ प्रज्ञा ही जागेगी, इस प्रकार से हमारे कर्म-बन्धन की गाँठें नहीं बाँधेगी तथा पुरानी गाँठें खुलने लगेंगी।

### विकार का अनुभव कैसे होता है ?

जब-जब चित्त पर कोई विकार जागता है तब-तब शरीर के स्तर पर तुरन्त ही दो घटनाएँ शुरू हो जाती हैं-

(1) स्थूल स्तर पर-श्वास अपनी स्वाभाविकता खो देता है, अस्वाभाविक हो जाता है।

(2) सूक्ष्म स्तर पर-सारे शरीर एवं चेतना पर

कहीं न कहीं, कोई न कोई प्रतिक्रिया तीव्र रूप से शुरू हो जाती है। कोई संवेदना शुरू हो जाती है। क्रोध आया तो सारे शरीर में गर्मी आनी शुरू होगी। वासना जागी तो स्पन्दन शुरू होगा। भय जागा तो कम्पन शुरू होगा। प्रकृति का यह नियम है। जहाँ चित्त में विकार उत्पन्न हुआ, साथ-साथ शरीर में संवेदना उत्पन्न हुई। विकार के कारण इस शरीर में जो कुछ भी हो रहा है उसे देखें, श्वास को देखना शुरू कर दें। श्वास देखते-देखते संवेदना को देखना शुरू कर दें। उत्पन्न विकार को देखने का लाभ अपने आप शुरू हो जायेगा।

श्वास और संवेदना देखेंगे तो बाह्य कारण को इतना महत्त्व नहीं देंगे। क्रोध आया तो संवेदना देखी, क्रोध क्षीण होता चला जायेगा। न दमन किया, न खुली छूट दी केवल देखो, क्रोध में क्या किया, यह जान लेने पर क्रोध काफूर हो जाएगा।

जब-जब जीवन में कोई घटना घटेगी और हमें व्याकुल करेगी तब एकदम श्वास को देखने लगेंगे तथा संवेदना को देखने लगेंगे तो घटना का प्रभाव नहीं होगा। अन्ध प्रतिक्रिया नहीं करेंगे। यदि अन्ध प्रतिक्रिया हो भी गई तो लम्बे अरसे तक नहीं चलेगी। धीरे-धीरे खूब समझ में आने लगेगी कि हमारे दुःख का कारण बाहर के व्यक्तियों वस्तुओं, घटनाओं में नहीं है, बल्कि भीतर ही है उसे दूर करना है।

### संवेदना से पैदा होने वाले राग-द्वेष को रोकने के लिए संवर करें

हमने देखा कि संवेदना के फलस्वरूप प्रतिक्रिया होने पर राग-द्वेष से कर्म का बन्धन होगा लगता है। इसके बन्धन को रोकने के लिए हम समता में रहें। ज्योंही संवेदना हुई कि हम प्रतिक्रिया करने के पहले समता में रहना शुरू कर दें, अन्यथा प्रतिक्रिया होने पर राग-द्वेष जन्य कर्मों का बन्धन होगा ही, जिसे हमें भोगना पड़ता है। इस प्रकार से समता में रहने पर राग-द्वेष जन्य कर्मों का बन्धन बाँधने पर रोक लग जाएगी, जिसे हम संवर कहते हैं। यानी कर्मों के बाँधने पर रोक लग गयी, हमने

संवर का काम करना शुरू कर दिया।

हमने ज्योंही संवर का काम करना शुरू किया, प्रकृति के नियमों के अनुसार पूर्व जन्म के कर्मों की निर्जरा होना शुरू हो जाएगी, यानी पूर्व जन्म में जो हमारे कर्म बाँधे हुए हैं, उनका फल उभरकर ऊपर आएगा अर्थात् पूर्व जन्मों के कर्मों की उदीरणा होना शुरू हो जायेगी तथा देखेंगे कि इस उदीरणा से प्रकट होने वाले कर्मों के समय समता में रहने पर, उनकी भी निर्जरा होना शुरू हो जाएगी। इस प्रकार से उभरकर आने वाले कर्म भी क्षय होने लगेंगे। इस प्रकार से संवर करना प्रमुख कार्य करना रहा। हमें पहले हमारी नाक, कान, आँख, जिह्वा, काया और मन का संवर करना चाहिये, परन्तु इनमें मन का संवर सबसे अधिक महत्वपूर्ण है। सम्पूर्ण मानस का संवर अन्तर्मन की गहराइयों का संवर होता है। सही तरीके से जितना-जितना संवर करेंगे उतना शुक्ल होते चले जायेंगे।

हर आदमी अपना स्वामी स्वयं है। अपनी गति खुद ही बनाता है, इस क्षण कौनसा कर्म बाँधे, यह उसके अपने अधिकार में है। जो बीत गया वह बीत गया इस पर कोई अधिकार नहीं, लेकिन यदि इस क्षण होश में है तो

वह वर्तमान का मालिक बन गया। प्रतिक्षण बीज बोने का क्षण है आप कैसा बीज बोते हैं, यदि राग-द्वेष का बीज बो रहे हैं तो अपने लिए दुःख ही पैदा किये जा रहे हैं। कैसे दुःखचक्र को पलटें, कैसे यह दुःखचक्र धर्मचक्र में पलटे, कैसे यह लोकचक्र मुक्तिचक्र में पलटे इस पर विचारपूर्वक आगे बढ़ना है।

यदि हमें स्वभाव पलटना है तो अभ्यास करना ही होगा। अभ्यास यही करना होगा कि कैसे राग-द्वेष पैदा करना बन्द करें। विधि के अनुसार ठीक-ठीक अभ्यास करें।

धर्म धारण करते हैं तो ही सुख मिलता है। एक बात ठीक तरह से समझ लेनी होगी कि अपने दुःखों के लिए हम स्वयं जिम्मेदार हैं, अन्य कोई नहीं। हम स्वयं ही अपने पागलपन में, नादानी में, अज्ञान अवस्था में अपने भीतर मैल पर मैल एकत्रित करते रहते हैं और परिणामतः व्याकुल होते रहते हैं। इस मैल को हमने चढ़ाया है, हमें ही धोना होगा, दूसरा कोई क्या करेगा? गुरु तो प्यार से रास्ता बता सकते हैं। रास्ते पर चलना तो हमें ही पड़ेगा।

-62, महाराणा प्रताप कॉलोनी, बजरिया,  
सवाईमाधोपुर (राज.) 9414553484

### Message Of One To Ten Letter Words

*Smt. Minakshi Dinesh Jain*

- |                                                                 |   |              |
|-----------------------------------------------------------------|---|--------------|
| 1. The most damaging <b>One</b> letter word <b>I</b>            | - | Avoid it.    |
| 2. The most satisfying <b>Two</b> letter word <b>We</b>         | - | Use it.      |
| 3. The most poisonous <b>Three</b> letter word <b>Ego</b>       | - | Kill it.     |
| 4. The most used <b>Four</b> letter word <b>Love</b>            | - | Value it.    |
| 5. The most pleasing <b>Five</b> letter word <b>Smile</b>       | - | Give it.     |
| 6. The most spreading <b>Six</b> letter word <b>Rumour</b>      | - | Ignore it.   |
| 7. The most enviable <b>Seven</b> letter word <b>Success</b>    | - | Achieve it.  |
| 8. The most harmful <b>Eight</b> letter word <b>Jealousy</b>    | - | Distance it. |
| 9. The most powerful <b>Nine</b> letter word <b>Knowledge</b>   | - | Acquire it.  |
| 10. The most essential <b>Ten</b> letter word <b>Confidence</b> | - | Trust it.    |

-17/729, Chopasni Housing Board, Jodhpur-342008 (Raj.)



## चिन्तन करो ना

श्रद्धेय श्री अभयमुनिजी म.सा.

(आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के सुशिष्य)

पंच तत्त्व से बनी प्रकृति की चादर को मानव ने खूब पैरों से रौंदा, खींचा, दबाया। चादर से बाहर पैर फैलाना मानव की आदत-सी बन गई है। ज़िन्दगी को बहुत सस्ता मानकर भूख मिटाने के लिए प्राणियों की घात कर रहा है, जबकि उनकी रक्षा करने का कर्तव्य निभाना चाहिए। सप्त कुव्यसन, पटाखे, पेट्रोल आदि से पर्यावरण को खराब कर रहा है। इसलिए प्रकृति समय-समय पर किसी-न-किसी रूप में चेताने आती है, फिर भी मानव नहीं सम्भलता और चिन्तन नहीं करता।

सूत्र-परमात्मा से मिली मानव को, चिन्तन की सौगात।

चिन्तन से चिन्तन करे, फिर चिन्ता की क्या बात।।  
कोरोना कहे, चिन्तन करोना, चिन्तन करोना,  
करोना, करोना, चिन्तन करोना।।टेर।।

पर्यावरण कहे, मेरी रक्षा करोना,  
भक्तों से श्री राम कहे, मर्यादा में रहना,  
भक्तों से कृष्ण कहे, कर्म काले ना करोना। चिन्तन..।1।  
भक्तों से प्रभु महावीर कहे, जीओ और जीने दोना,  
भक्तों से ईसा कहे, जीवों के मसीहा बनोना,  
भक्तों से बुद्ध कहे, शुद्ध प्रबुद्ध बनोना। चिन्तन.....।2।

गुरु नानक कहे, जीवों के पालक बनोना,  
पीर पैगम्बर कहे, अभक्ष्य न खाओ ना,  
वीर हनुमान कहे, नहीं कभी मान करोना। चिन्तन....।3।

आचार्य श्री हस्ती कहे, आध्यात्मिकता से जीओना,  
सामायिक करोना, स्वाध्याय करोना,  
समय का सदुपयोग करोना। चिन्तन.....।4।

आचार्य श्री हीरा कहे, धीरा, वीरा, गम्भीरा बनोना,  
व्यसन, फैशन, रात्रि-भोजन त्याग करोना,

अतिक्रमण भूल का प्रतिक्रमण करोना। चिन्तन.....।5।

धरती माता कहे, सहनशील बनोना,  
भाईसम पानी कहे, मेरा दुरुपयोग ना करोना,  
अग्नि सम बहिन कहे, ईर्ष्या में ना जलोना। चिन्तन..।6।

मित्र समवायु कहे, निर्मल पावन बनोना,  
पिता सम वनस्पति कहे, वात्सल्य भाव रखोना,  
सभी सन्त, सभी पन्थ कहे, अहिंसक बनोना। चिन्तन।7।

त्रस पञ्चेन्द्रिय जीव सभी कहे,  
एक-दूसरे की सेवा, सहयोग करोना,  
पाप घटाओ, पुण्य कमाओ, अभयदान करोना। चिन्तन।8।

वायु, धुएँ प्रदूषण से प्रकृति घबरा गई, और  
धरती वाहनों की कनफोड़ आवाजों से थरा गई।  
इंसान खुद को ईश्वर मान करने लगा, अभिमान,  
प्रकृति को सहन नहीं हुआ अब मानव का व्यवधान।

जलचर, थलचर, खेचर, उपपरिसर्य, भुजपरिसर्य,  
सभी जीव मानव की क्रूरता पर रोने लगे।

नदी, झरने, सागर, आकाश, चाँद, तारे,  
सभी अपनी पहचान खोने लगे।

तब सृष्टि ने मानव की दानवता को ऐसे निगला,  
कि अब सभी खामोश घरों में बैठे बन कर पगला,  
अपनी चंद साँसों को हाड़मांस के पिंजरे में समेटा है,

चारों ओर शान्त प्रकृति का  
मानव के गाल पर करारा चाँटा है,

शान्ति से जीवन जीना है तो प्रकृति का सम्मान करो,  
अपनी आत्मा के समान सभी जीवों का सम्मान करो।

-संकल्यित : विकास जैन, जोधपुर (राज.)

पूज्य कुशलगणी की जय  
॥ श्री महावीराय नमः ॥  
॥ जय गुरु हस्ती ॥

श्री कुशलरत्न गजेन्द्रगणिभ्यो नमः



परमश्रद्धेय जैनाचार्य श्री 1008 श्री हस्तीमलजी म.सा. के सुशिष्य

आचार्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा. की जय

श्री श्वे. स्था. जैन चतुर्विध संघ के हितार्थ प्रमुख मुनियों द्वारा स्वीकृत

पाक्षिक पत्र विक्रम सम्वत् 2077

वीर सम्वत् 2546-47

( निर्णय सागर पंचांग से सम्पादित )

सन् 2020-2021

क्र. सं.	मास-पक्ष	तिथिवार	पक्की दिनांक	घड़ी पल	क्षय तिथि	वृद्धि तिथि	रोहिणी नक्षत्र	पुष्य नक्षत्र	विशेष विवरण
1	चैत्र सुदि	14 मंगल	07.04.2020	13-58	-	-	6 सोम	10 शुक्र	• आयाबिल ओली प्रारम्भ चैत्र सुदि 7 मंगलवार 31.03.2020 । • भगवान महावीर जन्म कल्याणक चैत्र सुदि 13 सोमवार 06.04.2020 । • आयाबिल ओली पूर्ण चैत्र सुदि 15 बुधवार 08.04.2020 ।
2	वैशाख वदि	प्र.30 बुध	22.04.2020	60-00	1 बुध	30 गुरु	-	-	• अक्षय वृतीया ( वर्षातिप पारणा ) वैशाख सुदि 3 रविवार 26.04.2020 । • आचार्य भगवन्त पूज्य गुरुदेव 1008 श्री हस्तीमलजी म.सा. की 29वीं पुण्य तिथि वैशाख सुदि 8 शुक्रवार 01.05.2020 ।
3	वैशाख सुदि	15 गुरु	07.05.2020	25-35	12 सोम	-	3 रवि	7 गुरु	• भगवान महावीर केवल कल्याणक वैशाख सुदि 10 रविवार 03.05.2020 । • संघ स्थापना दिवस वैशाख सुदि 11 सोमवार 04.05.2020 ।
4	ज्येष्ठ वदि	30 शुक्र	22.05.2020	43-10	5 सोम	6 बुध	-	-	• आचार्यप्रवर 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा. का 30वाँ आचार्य पद दिवस, ज्येष्ठ वदि 5 सोमवार 11.05.2020 ।
5	ज्येष्ठ सुदि	15 शुक्र	05.06.2020	47-10	14 गुरु	-	1 शनि	6 गुरु	• परम्परा के मूल पुरुष श्री कुशल चन्द्र जी म.सा. की 237वीं पुण्य तिथि, ज्येष्ठ वदि 6 मंगलवार 12.05.2020 ।
6	आषाढ वदि	14 शनि	20.06.2020	15-05	-	11 बुध	14 शनि	-	• क्रियोद्धारक पूज्य आचार्य श्री रतनचन्द जी म. सा. की 175वीं पुण्य तिथि, ज्येष्ठ सुदि 14 गुरुवार 04.06.2020 ।
7	आषाढ सुदि	14 शनि	04.07.2020	14-08	6 शुक्र	-	-	3 बुध	• 224वाँ क्रियोद्धारक दिवस आषाढ वदि 2 रविवार 07.06.2020 । • आद्या नक्षत्र प्रारम्भ आषाढ वदि 30 रविवार 21.06.2020, इसके पश्चात् गाज बीज होने पर सूत्र को असज्जाय नहीं रहेगी ।
8	श्रावण वदि	14 रवि	19.07.2020	45-20	-	-	12 शुक्र	-	• चातुर्मास प्रारम्भ ( चातुर्मासी पक्की ) आषाढ सुदि 14 शनिवार 04.07.2020 ।
9	श्रावण सुदि	15 सोम	03.08.2020	38-20	8 सोम	-	-	1 मंगल	
10	भाद्रपद वदि	14 मंगल	18.08.2020	11-00	-	6 सोम	9 गुरु	13 सोम	
11	भाद्रपद सुदि	14 मंगल	01.09.2020	08-10	1 बुध	-	-	-	
12	प्र. आश्विन वदि	14 बुध	16.09.2020	33-40	-	-	8 गुरु	12 सोम	• पूज्य आचार्य श्री शांभाचन्द्रजी म.सा. की 94वीं पुण्यतिथि श्रावण वदि 30 सोमवार 20.07.2020 ।

13	प्र. आश्विन सुदि	15 गुरु	01.10.2020	50-00	3 शनि	-	-	-
14	द्वि.आश्विन बदि	30 शुक	16.10.2020	45-48	14 गुरु	2 रवि	5 बुध	9 रवि
15	द्वि. आश्विन सुदि	15 शनि	31.10.2020	33-40	-	-	-	-
16	कार्तिक बदि	14 शनि	14.11.2020	18-13	8 रवि	6 शनि	3 मंगल	7 रवि
17	कार्तिक सुदि	14 रवि	29.11.2020	14-00	2 सोम	12 शुक	15 सोम	-
18	मार्गशीर्ष बदि	30 सोम	14.12.2020	36-00	12 शुक	-	1 मंगल	5 शनि
19	मार्गशीर्ष सुदि	द्वि.14 मंगल	29.12.2020	01-03	-	14 मंगल	14 सोम	-
20	पौष बदि	14 मंगल	12.01.2021	12-08	5 रवि	-	-	2 शुक
21	पौष सुदि	14 बुध	27.01.2021	44-33	-	-	11 रवि	15 गुरु
22	माघ बदि	30 गुरु	11.02.2021	43-08	10 शनि	-	-	-
23	माघ सुदि	14 शुक	26.02.2021	21-43	-	6 गुरु	8 शनि	13 गुरु
24	फाल्गुन बदि	30 शनि	13.03.2021	22-23	3 सोम	-	-	-
25	फाल्गुन सुदि	15 रवि	28.03.2021	44-10	13 शुक	7 रवि	7 शनि	10 बुध
26	चैत्र बदि	प्र. 30 रवि	11.04.2021	60-00	6 शुक	30 सोम	-	-

- पृथुषण महापर्व प्रारम्भ भाद्रपद बदि 11 शनिवार 15.08.2020
- सबत्सरी महापर्व भाद्रपद सुदि 4 शनिवार 22.08.2020
- आर्यबिल ओली प्रारम्भ द्वितीय आसोज सुदि 7 शुकवार 23.10.2020
- स्वाति नक्षत्र प्रारम्भ द्वितीय आसोज सुदि 7 शुकवार 23.10.2020, इसके पश्चात् गाज बीज होने पर सूत्र की असङ्गाय रहेगी।
- पूज्य आचार्य श्री भूधरजी म.सा. की पुण्य तिथि द्वितीय आसोज सुदि 10 सोमवार 26.10.2020
- आर्यबिल ओली पूर्ण द्वितीय आसोज सुदि 15 शनिवार 31.10.2020
- भगवान महावीर निर्वाण कल्याणक कार्तिक बदि 30 रविवार 15.11.2020
- वीर सम्बत् 2547 प्रारम्भ एवं गौतम प्रतिपदा कार्तिक सुदि 1 सोमवार 16.11.2020
- ज्ञानपंचमी कार्तिक सुदि 5 गुरुवार 19.11.2020
- आचार्यप्रवर 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा. का 58वाँ दीक्षा दिवस कार्तिक सुदि 6 शुकवार 20.11.2020
- चातुर्मासिक पकडी ( चातुर्मास पूर्ण ) कार्तिक सुदि 14 रविवार 29.11.2020
- वीर लोकाशाह जयन्ती कार्तिक सुदि 15 सोमवार 30.11.2020
- आचार्य पूज्य 1008 श्री विनयचन्द्रजी म.सा. की 105वीं पुण्यतिथि, मार्गशीर्ष बदि 12 शुकवार 11.12.2020
- मौन एकादशी मार्गशीर्ष सुदि 11 शुकवार 25.12.2020
- भगवान पार्वनाथ जन्म कल्याणक पौष बदि 10 शुकवार 08.01.2021
- फाल्गुनी चातुर्मासी पर्व ( चातुर्मासी पकडी ) फाल्गुन सुदि 15 रविवार 28.03.2021
- भगवान आदिनाथ जन्म कल्याणक एवं आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. का 83वाँ जन्मदिवस चैत्र बदि 8 रविवार 04.04.2021

गुरु हीरा का यह सन्देश-व्यसन मुक्त हो सारा देश

गुरु हस्ती के दो फरमान-सामायिक स्वाध्याय महान्

प्रिय महानुभावों! शुद्ध चित्त से दोनों समय प्रतिक्रमण करने से निर्जरा होती है। उक्कष्ट रसायन आने से तीर्थकर गौत्र की उपार्जना होती है। अतः दोनों समय प्रतिक्रमण अवश्य करना चाहिये। यदि प्रमाद वश न हो सके तो पकडी का तो अवश्य करना चाहिये। पौष एवं आष्विन के काउसर्ग में देवसी को 4, पकडी को 8, चौमासी को 12, और सम्बत्सरी को 20 लोगस्स का चिन्तन करना अजमेर सम्मेलन का नियम है। सामायिक स्वाध्याय का घर-घर प्रचार करें। ब्रह्मचर्य का पालन करें व व्यसनो का त्याग करें।

**स्व. श्री सम्पतचन्द जी सिंघवी एवं स्व. रिखबचन्द जी सिंघवी की स्मृति में सप्रेम भेंट**

भेंटकर्ता ( प्राप्ति स्थान ) : श्री चंचलचन्द सिंघवी 507 ए 5-बी रोड, सदापुरा, जोधपुर-342003 फोन : 2431924, मो.नं. 9460767029

## कोरोना महामारी : मानवीय दुष्कृत्यों का परिणाम

श्री पदमचन्द्र गाँधी

सभी जैविक क्रियाओं पर आत्मा और कर्माणुओं का परस्पर प्रभाव पड़ता है। आत्मा की कोई भी क्रिया चाहे वह मन से विचारात्मक हो या वचन से व्यवहाररूप हो या शरीर से प्रवृत्ति रूप हो, अपने कर्मण शरीर में और आस-पास के वातावरण में निश्चित रूप से असर डालती है। इस तरह आत्मा जब कोई अच्छा या बुरा विचार करती है तो उसकी इस क्रिया से आस-पास के वातावरण में कम्पन्न होता है तथा विचार-शक्ति के अनुसार वातावरण में क्रिया-प्रतिक्रिया होती है। वैज्ञानिक 'न्यूटन' का तीसरा नियम भी यही स्पष्ट करता है कि जहाँ 'क्रिया' होती है वहाँ 'प्रतिक्रिया' निश्चित अर्थात् प्रत्येक क्रिया के साथ उतनी ही मात्रा में उसकी प्रतिक्रिया निश्चित है। इसी प्रकार आत्मा अपनी मन, वचन और काया की क्रियाओं के द्वारा वातावरण से इन पुद्गल परमाणुओं को खींच लेती है और प्रभावित करके कार्य रूप बना देती है। जिसके सम्पर्क में आते ही वह फिर उसी प्रकार के भावों को प्राप्त होता है। हम सब ऐसी जगह खड़े हैं जहाँ चारों ओर हमारे भीतर, बाहर के प्रभाव को ग्रहण करने वाले कैमरे लगे हैं और हमारी प्रत्येक क्रिया का लेखा-जोखा प्रकृति की उस महाबही में अंकित हो जाता है जिसका हिसाब-किताब हमें हर समय भुगतना पड़ता है। वह भुगतान कभी तत्काल हो जाता है और कभी कालान्तर में। पापकर्मा व्यक्ति स्वयं अपने से शंकित रहता है और अपने मनोभाव से परेशान रहता है।

काया की दृष्टि से संसारी जीव के छह भेद किए गए हैं—पृथ्वीकाय, अप्काय, तेजस्काय, वायुकाय, वनस्पतिकाय और त्रसकाय। काय का अर्थ है शरीर जैसे पृथ्वी है, जल ही जिसका शरीर है ऐसे वनस्पतिकाय

तक के जीव एकेन्द्रिय जीव हैं स्थावर नामकर्म के उदय वाले होते हैं। त्रसकाय के जीव दो से पाँच इन्द्रियों वाले होते हैं। पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और वनस्पति काय के जीव अव्यक्त चेतना वाले होते हैं। जन्म से अन्धे, बहरे और गूँगे हैं जो मनुष्यों की तरह छेदन-भेदन की वेदना भोगते हुए ये अपना दुःख और शोक प्रकट नहीं कर पाते। पीड़ा तो इनको भी होती है, क्योंकि ये सभी चेतनावान होने से सजीव हैं। (दशवैकालिक सूत्र, अध्ययन 4, गाथा 7)

### मानव भूगोल

मानव भूगोल यह स्पष्ट करती है कि मनुष्य प्राकृतिक वातावरण का केवल दास ही नहीं, अपितु पार्थिव वस्तुओं को अपने कार्यकलापों द्वारा प्रभावित करता है तथा उनमें परिवर्तन भी करता है। जहाँ यह वातावरण में परिवर्तन लाने में असमर्थ होता है वहाँ समायोजन करने की चेष्टा करता है। इस प्रकार प्राकृतिक वातावरण तथा मनुष्य के बीच कार्यात्मक सम्बन्ध पाया जाता है। जैनधर्म में भी कर्म और कारण इसी के समान स्पष्ट है।

### विकास एवं क्रियाशीला का सिद्धान्त

विश्व की प्रत्येक वस्तु क्षण-क्षण बदलती जा रही है चाहे वह भौतिक हो या सांस्कृतिक। उसके रूप अवस्था और स्थिति में क्रियाशील होने की क्षमता है। यह क्रियाशीलता उन्नति या अवनति दोनों दिशाओं में हो सकती है। जहाँ एक ओर भौगर्भिक क्रियाओं के कारण भूकम्प, ज्वालामुखी, कहीं बाढ़, तूफान, अतिवृष्टि, दुष्काल आते हैं तो दूसरी तरफ कहीं मानव जनसंख्या विस्फोट हो रहा है, कहीं जीव-जन्तुओं का विनाश हो रहा है। इस प्रकार के विकास और क्रियाशीलता के पीछे

कुछ शक्तियाँ कार्य करती हैं जैसे पृथ्वी की विवर्तनिक शक्तियाँ (Tectonic Force), सूर्य ताप (Insolation), पृथ्वी के ग्रहीय सम्बन्ध (Planetary Relation) गुरुत्वाकर्षण शक्ति (Gravitational Force), जैविक शक्ति (Eco Force), मानव शक्ति (Human Force) आदि शक्तियाँ कार्य करती हैं।

### पार्थिव एकता का सिद्धान्त

इसके जन्मदाता रेट जेल ने स्पष्ट किया है कि संसार के सभी भौतिक तथ्य रूप जड़ अथवा चेतन एक-दूसरे से सम्बन्धित हैं। इसीको आगे बढ़ाते हुए ब्लाश ने मानवीय एवं भौगोलिक विकास को, पार्थिव एकता को सर्वोपरि माना। इन्होंने कहा कि सम्पूर्ण पृथ्वी एक है और इसके विभिन्न भाग एक-दूसरे से बन्धे हुए हैं। इसके साथ इस पार्थिव एकता को पोषित करने के लिए वनस्पति, पशु, मानव संस्कृति का प्रभाव, खनिज उद्योग, परिवहन का प्रभाव पड़ता है। जिनका मुख्य नायक मनुष्य को ही माना गया है, क्योंकि वह अपनी आवश्यकता, महत्वाकांक्षा, लालच, व्यापार एवं वाणिज्य के लिए इनका उपयोग करता है। अतः स्पष्ट है कि जड़ और चेतन एक-दूसरे को पर्याप्त मात्रा में प्रभावित करते हैं।

### सम्भववाद

मानव स्वयं क्रियाशील है, स्वयं अपना निर्माता, कर्ता एवं भोक्ता है। वह अपने बुद्धि चातुर्य, कौशल और पुरुषार्थ द्वारा प्राकृतिक परिस्थितियों को निरन्तर अपने वश में करता जा रहा है। उसमें यह विचार करने की शक्ति है कि वह कहाँ वातावरण का आधिपत्य स्वीकार करे और कहाँ उसे अधीन बनाए। इसे सम्भववाद का नाम दिया है, क्योंकि इसमें मानव को सर्वोपरि माना है। प्रकृति सम्भावनाएँ प्रदान करती है तथा मानव इसके स्वामी के रूप में निर्णायक है। इस विचारधारा के विचारक ब्लाश, ब्रूनज आदि ने स्पष्ट किया कि मनुष्य एक निष्क्रिय प्राणी नहीं है, वह एक क्रियाशील व्यक्ति

है। वह जगह-जगह परिवर्तन लाता है। फेवर ने लिखा है कि प्रत्येक जगह सम्भावनाएँ हैं और मानव इन सम्भावनाओं का स्वामी बनकर इनके उपयोग का निर्णायक है। इसके अति उपयोग के कारण इस सिद्धान्त को सर्वोच्च स्थान पर पहुँचा दिया तथा प्रकृति के नियतिवाद को ताक में रख दिया।

### नियतिवाद

प्रकृति का नियतिवाद स्पष्ट करता है कि प्रकृति ही सर्वोपरि है। मनुष्य भी प्रकृति का ही अंशमात्र है जो कुछ है वह प्रकृति है। मनुष्य प्राकृतिक दशाओं को नियन्त्रित नहीं कर सकता वह केवल उसके साथ चल सकता है, लेकिन विरुद्ध नहीं हो सकता। मनुष्य जब-जब प्रकृति का विरोध करता है तब-तब प्रकृति उससे बदला लेती है। डिमोलिन निश्चयवाद में यहाँ तक कहते हैं कि मनुष्य का समाज वातावरण द्वारा ही निर्मित है। कुमारी सेम्पल ने अपनी पुस्तक 'भौगोलिक वातावरण के प्रभाव' में स्पष्ट किया कि मानव भूपृष्ठ की उपज है वह उसकी हड्डियों, तन्तुओं, मस्तिष्क तथा आत्मा में प्रविष्ट होती है। डार्विन का विकासवाद का सिद्धान्त भी यह स्पष्ट करता है कि मनुष्य अपने आपको वातावरण के अनुसार विकसित करता है, क्योंकि मानव प्राणी पर वातावरण का नियन्त्रण है। मानव क्रिया प्राकृतिक वातावरण का परिणाम है। प्रकृति जैसा चाहती है, मानव व्यवहार उसी भाँति होता है। मनुष्य अपने अनुकूल परिस्थितियों का चयन करता है और प्राकृतिक वातावरण से अपनी क्षमता के अनुसार समायोजन कर लेता है। यह बात फेडिक रेट जेल ने स्पष्ट की है।

जब नियतिवाद/निश्चयवाद या पर्यावरण नियतिवाद पर सम्भववाद भारी पड़ता है तो परिस्थिति का असन्तुलन होता है।

### पारिस्थितिक असन्तुलन

जीवों और प्रकृति की एक महत्त्वपूर्ण व्यवस्था है जिसमें सभी जीव अपनी आवश्यकता के अनुसार ऊर्जा

को प्राप्त करते हैं तथा उसका हस्तान्तरण भी करते हैं। इस प्रकार पारिस्थितिक तन्त्र की रचना एक व्यवस्थित जैव इकाई के रूप में कार्य करती है। पारिस्थितिक तन्त्र की गतिशीलता प्रकृति का नियम है जिसे बनाए रखने का प्रकृति पूरा प्रयास करती है। इस प्रकृति चक्र में मनुष्य जब छेड़छाड़ करता है तब जलवायु परिवर्तन होता है। तापमान में वृद्धि होती है, जैव विविधता में कमी आती है। कई प्रकार के परिवर्तन आते हैं। जनसंख्या वृद्धि भी असन्तुलन के लिए जिम्मेदार मानी गई है, जिसके कारण खाद्यान्नों, आवश्यकताओं की पूर्ति की माँग में वृद्धि, दोहन कार्य इत्यादि घटित होते हैं। जैन दर्शन भी छह कार्यों की रक्षा की बात करता है, क्योंकि सभी जीव जीना चाहते हैं मरना कोई नहीं चाहता। अतः भगवान महावीर ने जीओ और जीने दो का सिद्धान्त दिया अर्थात् मिट्टी में सव्व भूएसू वेरं मज्झं न केणई अर्थात् सभी जीवों से मेरी मित्रता है किसी भी जीव के साथ शत्रुता नहीं है। यदि ऐसी भावना रखते हैं तो कभी असन्तुलन की स्थिति नहीं हो सकती। यदि ऐसा नहीं है तो सभी छह काय के जीव सामूहिक रूप में बदला लेते हैं, जिससे अकाल, बाढ़, भूकम्प, सुनामी, महामारी, प्लेग, स्वाइन फ्लू, कोरोना जैसी विस्फोटक स्थितियाँ हमारे सामने आती हैं। जिसका मूल कारण जीव और प्रकृति के आपसी सम्बन्धों का बिगड़ना है। यह एक देश की समस्या नहीं है, पूरे विश्व की समस्या है, क्योंकि मनुष्य प्रकृति के चक्र में हस्तक्षेप करता है तथा अपने तकनीकी ज्ञान के कारण अपने प्रभाव को बढ़ाता है और इसी कारण पारिस्थितिक तंत्र का गठन बाधित होता है, जिससे कई विस्फोटक घटनाएँ हमारे सामने आती हैं। जिनका परिणाम है कि प्रकृति अपना सन्तुलन स्वयं बनाती है। चाहे उसमें फिर मानव जाति का विनाश हो, प्राकृतिक आपदाएँ हों, अर्थ नहीं रखती।

#### कर्म सिद्धान्त

जब सभी जीवों से हमारी मैत्री नहीं होती है या हम

उनके जीवन जीने में सहायक नहीं होते हैं तो इको सिस्टम बिगड़ जाता है। यह सत्य भी है। बिना कारण के कार्य नहीं होता तो बिना क्रिया के प्रतिक्रिया भी नहीं होती। जब विश्व स्तर पर लोग एक साथ मृत्यु को प्राप्त करते हैं या काल करते हैं तो इसका कारण कर्म सिद्धान्त के अनुसार हमारे कर्म ही हैं। कोरोना वायरस सामूहिक क्रिया की प्रतिक्रिया है।

सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के अणु-अणु में चैतन्य जीव परिव्याप्त हैं जो हमें दिखाई तो नहीं देते, लेकिन जिनके परिणामों का प्रभाव हम पर पड़ता है, सम्भववाद के अनुसार मानव ने वातावरण को विकृत कर दिया है, पृथ्वी को छेदन-भेदन कर खोखली कर दिया है। समुद्र एवं आकाश में युद्धाभ्यास हो रहे हैं, रासायनिक पदार्थों का दुरुपयोग कर वातावरण में ज़हर फैलाया जा रहा है। तिर्यञ्चों पर परीक्षण कर कृत्रिम वायरस बनाए जा रहे हैं ये सभी विनाश और महामारी के कारण हैं।

#### माल्थस का जनसंख्या सिद्धान्त

पृथ्वी पर जनसंख्या का भार बढ़ता है या जनसंख्या की वृद्धि विस्फोटक हो जाती है तो पृथ्वी एवं वातावरण इस भार को सहन नहीं कर पाती जिसे माल्थस ने अपना जनसंख्या सिद्धान्त दिया है, जिससे प्राकृतिक कारणों से विनाश होता है।

महामारियों का यदि इतिहास उठा कर देखें तो स्पष्ट होता है कि ये प्रति 100 वर्ष बाद किसी न किसी रूप में उत्पन्न होती हैं तथा जन समुदाय को काल के मुँह में ढकेलती हैं। माल्थस ने तो इसे सिद्ध भी कर दिया है कि प्रति 25 वर्ष में जनसंख्या दोगुनी हो जाती है तथा 200 वर्षों बाद इसका अनुपात 260 : 9 (जनसंख्या : खाद्यान्न) रह जाता है, लेकिन तथ्य यह भी स्पष्ट करते हैं कि हर सौ वर्षों में महामारी ने तबाही मचाई है। वर्ष 1720 में बुबोनिक प्लेग जिसमें विश्व में 20% जनसंख्या की मौत हुई, जिससे पर्शिया और इजिप्ट में खास प्रभाव रहा। यह प्लेग चूहों और पिस्सू से फैला था। इसका खौफ ऐसा था कि रात को स्वस्थ रूप से

सोया हुआ व्यक्ति प्रातः मृत पाया जाने लगा। इस प्लेग को ताऊन, ब्लेक डेथ पेस्ट आदि के नाम दिए गए।

1820 में भयानक महामारी द फर्स्ट कॉलेरा (हैजा) फैला, यह मुख्यतया विब्रियो कॉलेरा नामक बैक्टीरिया से फैला, जिससे व्यक्ति को उल्टी-दस्त होती है तथा शरीर का सारा पानी खो देता है। उसे साफ पानी नहीं मिलता, जिससे उसकी मौत हो जाती है। महामारी में लगभग 8 लाख लोग मारे गए थे।

1919-20 में स्पेनिश फ्लू फैला। यह सर्दी का सबसे खतरनाक वायरस था, जिससे दुनिया की करीब एक तिहाई (1/3) आबादी सदा के लिए खामोश हो गई। यह व्यक्तियों में खाँसी एवं छींकने से ड्रॉपलेट द्वारा फैला। इसने सबसे ज्यादा तबाही स्पेन में मचाई। भारत में भी भारी मात्रा में जन समुदाय काल के ग्रास बने।

### 2020 कोराना वायरस ( कोविड-19 ) महामारी

यह आज तक विश्व के 205-10 देशों में फैल चुका है। ऐसा खतरनाक वायरस जो कभी नहीं देखा गया, जिसने सम्पूर्ण विश्व को हिला कर रख दिया है तथा विश्व की महाशक्तियाँ भी क्षीण हो रही हैं।

#### 'कोरोना' क्या है ?

यह इन्फ्लुएन्जा फैमेली का जैनेटिक वायरस है जो जानवरों में पाया जाता है तथा मानव के सम्पर्क में आने से फैलता है। यह मुख्यतः चमगादड़, साँप इत्यादि में पाया जाता है। कोरोना वायरस कई विषाणुओं का समूह है जो स्तनधारियों तथा पक्षियों में फैलता है। कोई भी वायरस को नाम इसलिए दिया जाता है, जिससे उसके फैलने, प्रसार, गम्भीरता, रोकथाम और उपचार के लिए टीके के प्रयास सफल दिशा में किए जाएँ। यदि रोग का नाम नहीं रखा गया तो इलाज में दिक्कतें आती हैं। पहले भी एचआईवी एड्स, खसरा-रूबेला इत्यादि नाम दिए गए। इस बार भी कोरोना वायरस (कोविड-19) का नाम विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) द्वारा अन्तरराष्ट्रीय रोग वर्गीकरण में नामित किया गया है। इलाज की स्थिति को कारगर करने के लिए

'इण्टरनेशनल कमेटी ऑफ टेक्सोनॉमी ऑफ वायरस' द्वारा इस वायरस का नाम रखा गया। 'कोरोना' नाम इसलिए रखा गया कि लेटिन भाषा में इसका अर्थ-क्राऊन या मुकुट है। कोरोना प्लाज़्मा की एक आभा को कहा जाता है जो सूर्य और अन्य सितारों के चारों ओर होती है। सूर्य का कोरोना बाह्य अन्तरिक्ष में लाखों किलोमीटर तक फैला होता है और इसको आसानी से पूर्ण सूर्य ग्रहण के समय देखा जा सकता है।

जब वैज्ञानिकों ने कोरोना वायरस को इलेक्ट्रॉन माइक्रोस्कोप पर देखा तब यह वायरस क्राऊन जैसा दिखाई दिया। यह वायरस गोल है, इसकी सतह पर सूर्य के कोरोना की तरह प्रोटीन की स्टेम्स यानी शाखाएँ उगी हुई हैं। इस आधार पर विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) ने कोरोना वायरस का अधिकारिक नाम दिया तथा एक फरवरी 2020 को कोविड-19 नाम रखा गया। को-कोरोना, वि-वायरस, ड-डीजिज 19 : वर्ष 2019 में पहली बार पता चला इसलिए कोविड-19 नाम रखा गया।

#### कोरोना की उत्पत्ति

कोरोना वायरस अजीब है जो एक निश्चित मियाद (समय सीमा) के बाद खत्म हो जाता है। यह जेनेटिक मेटेलियम है जो प्रोटीन की झिल्ली में कैद होता है। यह न कुछ खाता है न ही इसे एनर्जी चाहिए तथा न ही यह तापमान संचालित करता है। यह एक अजीब पुद्गल है जैसे नमक, चीनी। इसकी उत्पत्ति का केन्द्र चीन माना जा रहा है, क्योंकि वहाँ की नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ वायरोलॉजी, वुहान, चीन की बायो सेप्टी लेब में जानवरों पर परीक्षण किए जाते हैं। यह वायरस चमगादड़ के करीबी हो सकता है। इस वायरस को इसी लेब में पहले वर्ष 2003-04 में भी देखा गया। उस समय इस खतरनाक वायरस को देखा। इसकी जेनेटिक्स सीक्वेन्स को देखते हुए यह चमगादड़ के करीबी पाया गया तथा वर्तमान में भी इसी समानता को देखा गया। वर्ष 2002-03 में भी चीन में महामारी इसी

वायरस से हुई, जिसमें सात सौ से ज्यादा मौतें हुईं। उस समय यह बताया गया कि यह व्यक्तियों के खाँसने और व्यक्ति को छूने से फैलता है। उस समय चीन ने इस वायरस को छिपा लिया। पुनः यह वायरस दिसम्बर 2019 में देखा गया, क्योंकि वुहान शहर के लोगों में अचानक बीमार होने पर तथा सेम्पल टेस्ट में कोरोना पाया गया जो ग्लोबल खतरे का संकेत था। डॉ. लिमिलियांग ने अलर्ट भी किया, लेकिन उसको भी दबा दिया गया। जाँच में यह स्पष्ट हुआ कि यह वायरस चमगादड़ पर परीक्षण के दौरान वुहान लेब से लीक हुआ है तथा विश्व में फैला है। चीन के सरकारी चाइना साऊथ यूनिवर्सिटी के तीन वैज्ञानिकों ने दावा किया कि यह वायरस सरकारी लेब से फैला है, जिसके लिए चमगादड़ों को जिम्मेदार माना जा रहा है। जिनकी संख्या 605 बताई जा रही है। फिजियोलॉजी मेडिसिन में नोबल प्राइज जीतने वाले जापान के प्रोफेसर डॉ. टासुको होजो ने मीडिया के सामने बताया कि कोरोना वायरस प्राकृतिक नहीं है, यह कृत्रिम है जिसे वुहान लेब में बनाया है। वे स्वयं उस लेब में चार वर्ष तक काम कर चुके हैं।

#### बचने के उपाय

कोई भी महामारी हो वह अपना प्रभाव अवश्य दिखाती है। इसका प्रभाव सम्पूर्ण मानव जाति पर पड़ता है। यह वायरस अपना कर्म करता है, हमें अपना कर्म करना चाहिए। ऐसे समय में सभी धैर्य, समभाव तथा आत्मबल को सुदृढ़ करने की बात करते हैं। जैनदर्शन भी कहता है कि जब विपत्ति आती है तब लोग भयभीत हो जाते हैं, क्योंकि भय संज्ञा जागृत हो जाती है। इस भय को दूर करने के लिए हमें अरिहन्त की शरण, सिद्धों की शरण, साधुओं की शरण तथा केवली प्ररूपित दया धर्म की शरण को प्राप्त करना चाहिए। ये चार शरण ऐसी हैं जिसे व्यक्ति यदि स्वीकार करता है, इनकी शरण में रहता है तो वह निर्भय तो बनता ही है, साथ में अक्षय अमर पद को भी प्राप्त करता है। जैनदर्शन सूक्ष्म हिंसा

तथा स्थूल हिंसा के बारे में बहुत कुछ बताता है कि हमें अहिंसक बनना है तो हमें प्रत्येक जीव से मैत्री रखनी होगी, जब मैत्री होगी तो हिंसा होगी ही नहीं, जब हिंसा नहीं होगी, जीव बचेंगे तो महामारी आएगी ही नहीं। अभी लॉकडाउन अवधि में यह परिणाम हमारे सामने आये हैं। दिल्ली का पर्यावरण (पॉल्यूशन) 30-40% कम हो गया, नदियों का पानी शुद्ध हो गया, ओजोन लेयर का ब्लैक हॉल बन्द हो गया, जूहू बीच, बॉम्बे के समुद्री किनारे पर डॉल्फिन क्रीड़ा करती दिखाई दी। वाइल्ड लाइफ सेंचुरी में जानवर सड़कों तक विचरण आराम से करने लगे। वे भयमुक्त हो गए। इस प्रकार के परिणाम क्रिया-प्रतिक्रिया के न होने से, मानव द्वारा प्रकृति से छेड़छाड़ नहीं करने से, छह कार्यों के जीवों को बचाने से ये प्रभाव दिखे।

प्रभु शान्तिनाथ के जन्म के समय भी ऐसी विपदाएँ आईं तब शान्ति स्मरण करने से वे दूर हुईं। ऐसे अनेक उदाहरण हमारे आगमों में आते हैं, जिनसे हम इन विपदाओं से सामना करते हैं। सरकारी निर्देश अपनी जगह सही हैं, साथ में इनका पालन करते हुए अपने आपको अध्यात्ममय बनाने पर विचार की सात्त्विकता से दुष्कृत नहीं होते हैं, क्योंकि जब जीवन में सदाचार आ जाता है, कषाय मुक्ति का प्रयास होता है, व्रतों की पालना होती है और सम्पूर्ण जीवन जब दयामय, करुणामय, मैत्रीपूर्ण, अहिंसक हो जाता है ऐसी स्थिति में संवर की अवस्था प्राप्त होती है तथा कर्मों की निर्जरा होती है, जिससे हम महामारियों से बच सकते हैं, क्योंकि आचारांग कहता है जिनको तू मारने योग्य मानता है वह तू ही है, जिसको तू सताने योग्य मानता है, वह तू ही है, जिसे तू गुलाम बनाने योग्य मानता है वह तू ही है, जिसे तू अशान्त किए जाने योग्य मानता है, वह तू ही है। अतः सभी जीवों पर दया कर।

-25, बैंक कॉलोनी, महेश्वर विस्तार-बी,  
गोपालपुर बाईपास, जयपुर-302019 (राज.)

9414967294



## आओ मिलकर कर्मों को समझें (5)

श्री धर्मचन्द जैन

**जिज्ञासा**— ज्ञानावरणीय कर्म किसे कहते हैं?

**समाधान**— जो कर्म जीव के ज्ञान गुण को आवरित करे, ढँके, उसे ज्ञानावरणीय कर्म कहते हैं। पदार्थ के विशेष स्वरूप को जानना ज्ञान कहलाता है। संसार में जितने भी जीव हैं, उन सब में ज्ञान गुण कम या अधिक मात्रा में मिलता ही है। नन्दीसूत्र में कहा भी है कि अक्षर का अनन्तवाँ भाग ज्ञान गुण तो सभी जीवों का प्रकट रहता ही है, यदि ऐसा न हो वह जीव-अजीव बन जायेगा, जैसा कि कहा है-सर्व जीवाणं पि य णं अक्खरस्स वि अणंतभागो निच्चुग्घाडियो चिट्ठइ, जइ पुण सोऽवि आवरिज्जा, तेण जीवो अजीवत्तं पाविज्जा।

जीव में ज्ञानादि गुण हैं, तभी तो उन पर आवरण आया हुआ है। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि चाहे भवी जीव हो या अभवी, चाहे कृष्णपक्षी हो या शुक्लपक्षी, चाहे अनन्तकायिक हो या प्रत्येक कायिक, चाहे सूक्ष्म हो या बादर, चाहे पर्याप्त हो या अपर्याप्त सभी जीवों में केवल ज्ञान का गुण सत्ता रूप में विद्यमान है। हाँ इतना अवश्य है कि उसका पूर्णतः प्रकटीकरण तो ज्ञानावरणीय कर्म का सम्पूर्ण क्षय होने पर ही होता है।

**जिज्ञासा**— क्या ज्ञान-अज्ञान दोनों का सम्बन्ध ज्ञानावरणीय कर्म से ही है?

**समाधान**— सामान्यतया यह कहा जा सकता है कि जितना-जितना ज्ञानावरणीय कर्म का क्षयोपशम बढ़ता जाता है, उतना-उतना ज्ञान बढ़ता जाता है। ज्ञानावरणीय कर्म के क्षयोपशम के साथ यदि मोहनीय कर्म का भी क्षयोपशमादि बढ़ता है तो वह ज्ञान सम्यग्ज्ञान, सही ज्ञान, आत्म ज्ञान, भेद ज्ञान आदि के नाम से जाना जाता है। यदि मात्र ज्ञानावरणीय का ही क्षयोपशम हो और मोहनीय कर्म का क्षयोपशमादि न हो तो उस ज्ञान को अज्ञान कहा जाता है। दूसरे शब्दों में यदि जीव के

मिथ्यात्व मोहनीय कर्म का विपाक उदय चल रहा है तो उसकी समस्त जानकारी अज्ञान रूप मानी जाती है तथा जिसके मिथ्यात्व मोहनीय का विपाक उदय नहीं है, उपशम-क्षयोपशम आदि है तो उसकी जानकारी ज्ञान रूप, सम्यग्ज्ञान रूप मानी जाती है।

**जिज्ञासा**— ज्ञान-अज्ञान का निर्णायक ज्ञानावरणीय कर्म को न मानकर मोहनीय कर्म को क्यों माना जाता है?

**समाधान**— क्योंकि मोहनीय कर्म जीव को मोहित कर देता है, मूढ़ बना देता है, हेय-उपादेय के विवेक से शून्य बना देता है। अतः यह कहा जाता है कि जिसका मोह, उसमें भी विशेषकर मिथ्यात्व मोह छूट जाता है, दब जाता है, कमजोर पड़ जाता है, उसी की दृष्टि में आत्मिक विशुद्धि का लक्ष्य आता है।

इन्द्रिय दृष्टि, बुद्धि दृष्टि से परे हटकर जब अन्तर दृष्टि, विवेक दृष्टि, प्रीति दृष्टि जागृत होती है तब अज्ञान भी ज्ञान रूप में स्वतः प्रकट हो जाता है। ऐसा न होने पर अर्थात् विपरीत होने पर ज्ञान भी अज्ञान हो जाता है, इसलिए ज्ञान-अज्ञान का निर्णायक मोहनीय कर्म को माना जाता है।

जिस जीव का लक्ष्य एवं दृष्टिकोण सही बन जाता है। जिसकी प्राथमिकता इन्द्रिय विषयों को, भोगों को पाना न होकर संवेग और निर्वेद भाव को बढ़ाने की होती है, जिसकी प्रत्येक प्रवृत्ति आत्म केन्द्रित होती है अर्थात् आत्मिक विशुद्धि जिनका केन्द्र बिन्दु होता है, उसकी जानकारी जितनी भी है तथा आगे जितनी भी होने वाली है वह ज्ञान रूप, सम्यग्ज्ञान रूप कहलाती है। मिथ्यात्व मोहनीय कर्म के उदय के कारण ज्ञान भी विपरीत हो जाता है, कुत्सित हो जाता है, इसलिए उसे अज्ञान रूप कहते हैं। कहा भी है-‘कुत्सितं ज्ञानं अज्ञानम्।’

**जिज्ञासा-** अज्ञान को दुःख का कारण तथा ज्ञान को सुख का कारण क्यों मानते हैं ?

**समाधान-** अज्ञान के कारण व्यक्ति की समझ सही नहीं होती। सोच सकारात्मक होने के स्थान पर नकारात्मक हो जाती है। दोष-दृष्टि विकसित होने लगती है, जिसके परिणामस्वरूप वह अपने प्रत्येक दुःख का कारण किसी न किसी व्यक्ति, वस्तु एवं परिस्थिति को मान लेता है। स्वयं की भूलों, असावधानियों एवं स्वकृत कर्मों पर ध्यान नहीं जाता, जिसका परिणाम होता है कि वह पग-पग पर छोटी-छोटी बातों को लेकर भी दुःखी होता रहता है।

दूसरी तरफ जो ज्ञान गुण से सम्पन्न होता है, उसकी सोच एवं दृष्टि सकारात्मक होती है। वह बाहर के व्यक्ति, वस्तु, परिस्थिति को मात्र निमित्त मानता है। दुःख, प्रतिकूलता, बाधा, पीड़ा आदि को स्वयं की असावधानी का तथा स्वयं के पूर्वकृत कर्मों का परिणाम मानता है। दूसरों पर दोषारोपण नहीं करता, अतः बड़ी से बड़ी विपरीतता में भी वह सुखी, शान्त, आनन्दित तथा प्रसन्नचित्त रह जाता है। जैसाकि कहा भी है- 'ज्ञान सुखों की खान है, दुःख खान अज्ञान।'

**जिज्ञासा-** ज्ञान तथा अज्ञान किसे कहना चाहिए ?

**समाधान-** जिससे देव, गुरु, धर्म एवं आत्म स्वरूप का वास्तविक बोध हो, जिससे आत्मा राग से विरक्त हो सके, श्रेष्ठ कार्यों में प्रवृत्त हो सके, जिससे आत्मा विशुद्ध बन सके, उसे जिनशासन में ज्ञान कहा गया है। जो गुण दृष्टि विकसित कराये, हेय-ज्ञेय-उपादेय का ज्ञान कराये, स्व-पर का भेद कराये, वह ज्ञान है।

जिससे मोह बढ़े, रागादि विकार एवं क्रोधादि कषाय बढ़े, उस जानकारी को अज्ञान कहते हैं। जीवों को दुःखी करने, पीड़ा पहुँचाने में, जन्म-मरण के बन्धन बढ़ाने में जो जानकारी सहयोगी बने, वह सब अज्ञान है। जो पौद्गलिक सुखों में आसक्त बनाये, अपने आत्म-स्वरूप से अपरिचित रखे, जीवादि नवतत्त्वों एवं षट् द्रव्यों के स्वरूप का विपरीत बोध कराये, उसे अज्ञान समझना चाहिए।

**जिज्ञासा-** ज्ञान गुण पर आवरण क्यों आता है ?

**समाधान-** आत्मा के सही स्वरूप का ज्ञान नहीं होने से अथवा ज्ञान हो जाने पर भी जाने हुए का आदर नहीं करने से, आचरण नहीं करने से ज्ञान गुण पर आवरण आ जाता है। जानकारी जीवन नहीं बन पाती अर्थात् जानकारी एवं जीवन में अन्तर होने से आवरण बना रहता है। ज्ञानावरणीय, दर्शनावरण, मोहनीय तथा अन्तराय इन चारों घाती कर्मों का आपस में ऐसा घनिष्ठ सम्बन्ध होता है कि ये एक दूसरे को पोषित करते रहते हैं। यही कारण है कि इन घाती कर्मों का जब तक उदय रहता है तब तक सभी जीवों के ज्ञान गुण पर आवरण बना रहता है। जैसे-जैसे मोहनीय कर्म का प्रभाव कम होता जाता है, वैसे-वैसे ज्ञान-गुण भी क्रमशः प्रकट होता जाता है। गुणों के प्रकटीकरण में उस-उस कर्म का क्षयोपशम सहायक बनता है।

**जिज्ञासा-** ज्ञानावरणीय कर्म की उत्तर प्रकृतियाँ कौन-कौन सी हैं ?

**समाधान-** ज्ञानावरणीय कर्म की पाँच उत्तर प्रकृतियाँ हैं-1. मतिज्ञानावरणीय, 2. श्रुतज्ञानावरणीय, 3. अवधिज्ञानावरणीय, 4. मनःपर्यायज्ञानावरणीय और 5. केवलज्ञानावरणीय।

मतिज्ञान को आवरित करने वाली प्रकृति मतिज्ञानावरणीय कहलाती है। श्रुतज्ञान को आवरित करने वाली प्रकृति श्रुतज्ञानावरणीय, अवधिज्ञान को आवरित करने वाली अवधिज्ञानावरणीय, मनःपर्यायज्ञान को आवरित करने वाली मनःपर्यायज्ञानावरणीय तथा केवलज्ञान को आवरित करने वाली प्रकृति केवलज्ञानावरणीय कहलाती है।

**जिज्ञासा-** मतिज्ञानादि पाँच ज्ञानों का संक्षिप्त स्वरूप समझाइए।

**समाधान-** 1. मतिज्ञान-मन और इन्द्रियों की सहायता से पदार्थों का जो सीमित बोध होता है, उसे मतिज्ञान कहते हैं। 2. श्रुतज्ञान-मतिज्ञान द्वारा जाने हुए के बारे में विशेष जानना, हेयोपादेय का विवेक होना, श्रुतज्ञान है।

3. अवधिज्ञान-मन और इन्द्रियों की सहायता के बिना रूपी पदार्थों का द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव की मर्यादा लिए हुए सीधे आत्मा से बोध होना, अवधिज्ञान है। 4. मनःपर्याय ज्ञान-अढाई द्वीप में रहे हुए सन्नी जीवों की मनोगत पर्यायों को सीधे आत्मा से तथा मनोगत भावों को पुष्ट अनुमान से जानना, मनःपर्याय ज्ञान कहलाता है। 5. केवलज्ञान-सभी द्रव्यों की सभी त्रैकालिक पर्यायों को सीधे आत्मा से परिपूर्ण रूप से प्रत्यक्ष जानना केवल ज्ञान कहलाता है।

**जिज्ञासा-** मतिज्ञानादि पाँच ज्ञानों की क्या-क्या प्रमुख विशेषताएँ हैं?

**समाधान-** (अ) मति, श्रुत एवं अवधि ये तीन ज्ञान यदि सम्यक्त्व के साथ में होते हैं तो ज्ञान रूप कहलाते हैं तथा यदि ये मिथ्यात्व के साथ होते हैं तो अज्ञान रूप कहलाते हैं।

(ब) मति और श्रुत ज्ञान इन्द्रिय एवं मन के अवलम्बन से जीव को प्राप्त होते हैं; जबकि अवधि, मनःपर्याय तथा केवलज्ञान ये तीनों बिना किसी बाह्य अवलम्बन के सीधे आत्मा से प्राप्त होते हैं।

(स) मति, श्रुत ज्ञान से सामान्यतः रूपी-अरूपी दोनों तरह के पदार्थ जाने जा सकते हैं। अवधि ज्ञान से सभी रूपी पदार्थ जान सकते हैं। मनःपर्याय ज्ञान से सन्नी जीवों के मन की पर्यायों को जाना जाता है जबकि केवलज्ञान से समस्त द्रव्यों की समस्त पर्यायों को सीधे आत्मा से एक साथ जाना जा सकता है।

(द) मति, श्रुत, अवधि और मनःपर्याय ये चारों ज्ञान

अपने-अपने नाम वाली उत्तरप्रकृतियों के क्षयोपशम से प्राप्त होते हैं, जबकि केवल ज्ञान सम्पूर्ण ज्ञानावरणीय कर्म के क्षय होने से प्राप्त होता है। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि प्रारम्भ के चारों ज्ञान क्षायोपशमिक कहलाते हैं तथा केवलज्ञान क्षायिक ज्ञान कहलाता है। क्षायोपशमिक ज्ञान में छद्मस्थता के कारण अपूर्णता रहती है जबकि क्षायिक ज्ञान में सर्वज्ञता होने से परिपूर्णता ही होती है।

(य) मतिज्ञान आदि चारों ज्ञान के धारक प्रतिपाति भी हो सकते हैं अर्थात् चारों ज्ञान पुनः वापस जा सकते हैं, किन्तु केवल ज्ञान अप्रतिपाति ही होता है। सिद्धावस्था में भी सदाकाल बना रहता है। इनमें भी इतना अवश्य ध्यान रखना चाहिए कि परमावधि ज्ञान तथा विपुलमति मनःपर्याय ज्ञान भी केवल ज्ञान की तरह अप्रतिपाति ही होते हैं।

(र) श्रुतज्ञान स्व-पर के लिए उपकारी होता है जबकि शेष चार ज्ञान स्व के लिए उपकारी होते हैं। केवली भगवन्त भी शब्दों के आश्रय से देशनादि फरमाते हैं।

(ल) मनःपर्यायज्ञान ऋद्धि प्राप्त अप्रमत्त अणगार भगवन्तों को प्राप्त होता है अर्थात् मनःपर्याय-ज्ञान द्रव्य तथा भाव से चारित्रवान संयमी को होता है, जबकि शेष चारों ज्ञान के लिए द्रव्य तथा भाव चारित्र की भजना है। (क्रमशः)

-रजिस्ट्रार, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

**शेषांश पृष्ठ 10 का**

मुनि मौन भाव (ज्ञान, संयम, गुप्ति और ध्यान) को धारण करके पूर्व सञ्चित कर्मों का क्षय करने में समर्थ होता है। वह आहार संयम भी करता है। सरस एवं गरिष्ठ के स्थान पर नीरस एवं रुक्ष आहार ग्रहण कर

इन्द्रियों एवं मन की उत्तेजना को नियन्त्रित करता है। संयम के मार्ग पर चलने वाले वीर पुरुष आग्रह बुद्धि नहीं रखकर सम्यक्दर्शी होते हैं। संसार में भटकने के मार्ग का परिहार कर मुक्ति के मार्ग को अपनाते हैं तथा अन्त में मुक्तिश्री का वरण करते हैं।

जहाँ संयम है, वहाँ संवर है और असंयम है, वहाँ आस्रव है।

-आचार्यश्री हस्ती

## विवशता एवं पराधीनता पर विजय हेतु धर्मसाधना

श्री मनीष मेहता

**ज्यों-ज्यों** हम साधनों पर निर्भर होते जा रहे हैं, हमारी ज़िन्दगी में बहुत सारे बदलाव आते जा रहे हैं। अब हम भयंकर गर्मी में भी सर्दी का सुख ए.सी. द्वारा लेते हैं। हर मौसम के फल कोल्ड स्टोरेज द्वारा मिल जाते हैं, लम्बी से लम्बी दूरी वायुयान-गाड़ियों से घण्टों में तय कर लेते हैं, कितने ही लोगों से लाइव चैट कर लेते हैं, दुनिया की सभी जानकारियाँ हमारे एक बटन दबाने भर से मिल जाती हैं। न्यूज चैनल, आध्यात्मिक चैनल हमें चौबीसों घण्टे सुलभ हैं, मनोरञ्जन के लिए जो चैनल हमें पता हैं उनसे भी कहीं ज़्यादा उपलब्ध हैं। फिर भी हम कई मायनों में विवशता का अनुभव करते हैं।

विवशता का अर्थ है हमारी सीमाएँ। हमारी चाह पूरी करने में आने वाली अड़चन जो हमारे वश में न हो। एक ऐसी अवस्था जहाँ हम चाह पूरी करने में असमर्थ हों। विवशता बहुत दुःखद स्थिति है, क्योंकि इसमें चाह होती है, उपलब्धता भी होती है, परन्तु इनका (चाह, उपलब्धता) मिलन नहीं हो पाता है। यदि इनमें (चाह, उपलब्धता) से किसी एक का भी लोप हो जाए तो दुःख न हो। उदाहरण के लिए यदि किसी व्यक्ति को आम खाना हो और वह उपलब्ध हो, परन्तु जेब में दाम न हो तो दुःख है, परन्तु यदि आम उपलब्ध न हो या उपलब्ध तो हो, पर उसे खाने की इच्छा न हो तो दुःख का प्रश्न ही नहीं है। किसी ने क्या खूब कहा है-

“चाह गई, चिन्ता मिटी, मनवा बेपरवाह।

जिसको कुछ नहीं चाहिए, वो ही शहंशाह।”

कोई विवश होना नहीं चाहता। यह तो

मजबूरी है, और जहाँ मजबूरी है वहीं दुःख है। व्यक्ति सुख चाहता है। सारा विज्ञान इसी सुख को पहुँचाने की होड में लगा है तो फिर हमें दुःख क्यों मिले?

जब हम किसी भी सुख-सुविधा को अपनाते हैं तो अपनी शारीरिक क्षमताओं से समझौता कर लेते हैं। इससे हमारा शारीरिक, मानसिक विकास क्रमशः धीरे होने लगता है, रुकने लगता है और साधन पर निर्भरता बढ़ती जाती है। साधन की उपलब्धता के लिए धन जो हमें शारीरिक एवं मानसिक श्रम से मिलता है, उसकी आवश्यकता बढ़ती जाती है। शुरू में यह सन्तुलन बना रहता है, परन्तु समय के साथ यह घटने लगता है तो स्थितियाँ तेजी से बिगड़ती हैं। जहाँ एक ओर शरीर की क्षमताएँ घट जाती हैं, अन्य विकसित साधनों की आवश्यकता लगने लगती है, तो इन सबका असन्तुलन हमारी विवशता बढ़ाता है। आज सम्पूर्ण विश्व में सबसे तेजी से फैल रहा है मानसिक रोग जो लगभग हर छठे व्यक्ति को है। उसका सबसे प्रमुख कारण है मानसिक दबाव। ये जो विवशता की परिस्थितियाँ हैं, वे उसमें प्रमुख भूमिका निभाती हैं।

आज हर व्यक्ति भाग-दौड़ में है। जहाँ साधन हमारी सहूलियत बढ़ाने वाले होने चाहिए वहाँ हो उल्टा गया है। सोचा गया था साधन आर्येणो तो हम शान्ति के लिए समय निकाल पायेंगे, पर हो यह गया कि अब हम अधिक व्यस्त हो गए हैं। जहाँ वाहनों से दूरियाँ कम लगती हैं वहीं यह भी सच है कि अब व्यक्ति हमेशा सफ़र करता नज़र आता है। मोबाइल आने पर कल्पना की गई थी कि जिस बात को कहने के लिए मीलों का सफ़र कई-कई महीनों

तय करना पड़ता था वह बचेगा। किन्तु अब दिन-रात उसी मोबाइल में खोए रहते हैं। यह पराधीनता तो हमने कभी नहीं चाही थी।

प्रभु महावीर ने हमें विवशता एवं पराधीनता से बचना सिखाया। उन्होंने यह सारी दौड़ बाहर के स्थान पर भीतर में करने को कहा। वे जगत् के विकास को, हमारी व्यथा को, तब ही जान गए थे, अतः उन्होंने हमें कामना पर नियन्त्रण कर समता से जुड़ने को कहा। पूज्य गुरुवर निरन्तर सामायिक-स्वाध्याय की प्रबल प्रेरणा कर रहे हैं, क्योंकि यही वह मार्ग है जो हमें विवशता से बचाएगा।

साधनों से बढ़ती, विकसित होती हमारी पराधीनता एवं दुःख को जानने-समझने एवं उस पर ब्रेक लगाने वाली हमारी समता की साधना ही हो सकती है। हमारा स्वाध्याय ही मोबाइल पर समय की अनावश्यक बर्बादी को रोक सकता है। समता ही अनावश्यक पर-निन्दा, विकथा से हमें रोक पाएगी। हमारे एक लाइक तथा कमेंट में नष्ट शक्ति को आत्म-उत्थान की तरफ मोड़ पाएगी। चौबीस घण्टे चलने वाले ए.सी. को विश्राम ही नहीं दिलाएगी, बल्कि बिना बिजली रहने की हमारी शारीरिक क्षमताओं को पुनर्जीवित करेगी। 24 घण्टे बोलने की प्रवृत्ति पर 1 घण्टा मौन की, सुनने की क्षमता का विकास करेगी। दूसरों से बढ़ती निरन्तर अपेक्षा को स्वयं के प्रतिक्रमण तथा क्षमा की वृत्तियों से शान्त करेगी। इससे अपेक्षा पूरी न होने के दुःख से बचा जा सकेगा। स्वयं की गलतियाँ, कमियाँ, नज़र आर्येंगी, तो उनको दूर करने पर श्रम होगा, हम पूर्णता की ओर बढ़ेंगे। वर्षों से रुकी हमारी आराधना फिर चल पड़ेगी। बालकों को कहने पर भी न सुनने की प्रवृत्ति को आप अपने आचरण के प्रभाव से सही कर पायेंगे। पूज्य आचार्य भगवन्त श्री हस्तीमलजी म.सा. ने कहा था कि बालकों में संस्कार डालने का कार्य माता-पिता का होता है और संस्कार बोलने से नहीं देखने से आते हैं। अतः

उनका (माता-पिता) आचरण ही प्रभावी संस्कार दे सकता है।

साधनों पर बढ़ती हमारी निर्भरता को नियन्त्रित करें। अपनी नित नवीन चाहों को परखें, उनकी उपयोगिता के साथ-साथ अपने पर पड़ने वाले प्रभावों पर भी गौर करें। साधन अपनाने के सुख के साथ घटते शारीरिक श्रम के दुष्परिणामों की कीमत पर ध्यान दें। हमारी दूसरों पर बढ़ती अपेक्षाओं के सम्बन्ध में आचार्य हस्ती के भजन की यह पंक्ति बड़ी प्रासंगिक है—“तन-धन-परिजन सब ही पर हैं, पर की निवारो आस, पुद्गल को अपनाकर मैंने किया स्वत्व का नाश।” हम पूज्य गुरुदेव की शिक्षा को अपनाएँ। इस स्तर की साधना हमारी नहीं है, परन्तु शुरुआत करनी तो पड़ती है अर्थात् दूसरे साधनों पर से अपनी निर्भरता कम करके आगे बढ़ना शुरू करें।

सुख-सुविधाओं के कारण हमने अपनी आदतें बिगाड़ ली हैं। अब हम सामने वाले को अपने अनुसार देखना चाहते हैं। हम चाहते हैं कि वह वही करे जैसा हम चाहते हैं, उसकी हर पसन्द, खुशी, प्रतिक्रिया हमारी चाह के अधीन हो। यदि ऐसा नहीं है तो फिर हम दुःखी हैं। प्रभु महावीर ने जहाँ अपने समान सभी की आत्मा को माना, उसे आदर सम्मान दिया वहीं हम उसके साथ गुलाम जैसा व्यवहार कर रहे हैं। अपनी हर इच्छा किसी पर थोपना उचित नहीं है, यह विवशता हमें छोड़नी होगी। प्रभु महावीर के सिद्धान्त को अपनाना होगा। दूसरे के प्रति पूर्ण सम्मान का भाव हो। हमारा कर्तव्य मात्र उसे जागृत करने, अपने भाव अवगत कराने तक सीमित हो तो अपेक्षा की पूर्ति न होने का दुःख स्वतः ही खत्म हो जाएगा।

हमें बाहरी साधनों पर अपनी निर्भरता नियन्त्रित एवं कम करनी होगी। हमारी दूसरों से जो अपेक्षाएँ हैं उन्हें सीमित करना होगा। यह कठिन है, शेषांश पृष्ठ 65 पर

## कोरोनाकाल के पहले और कोरोनाकाल के बाद

श्री तरुण बोहरा 'तीर्थ'

प्रिय विकास, जय जिनेन्द्र!

तुम्हारा पत्र मिला, जिसमें तुमने मुख्य रूप से यह लिखा कि- 'मैं विचित्र स्थिति में हूँ, कोरोना वायरस से फैली इस महामारी से सब कुछ बदल चुका है, लॉकडाउन खुलने के बाद भी दिन बहुत मुश्किल से कट रहे हैं ... भविष्य की सभी योजनाएँ ..बेकार हो चुकी हैं ... आगे क्या होगा ... कुछ पता नहीं ...कुछ भी करने को मन नहीं करता ...पूरी तरह से निराश हो चुका हूँ ...जीवन में उदासी के काले बादल छा गए हैं ...आप ही बताओ मैं क्या करूँ?'

प्रिय विकास, परिवर्तन तो संसार का शाश्वत नियम है। तुम इसे कुदरत का कहर मानो या प्रकृति का प्रतिकार ...पर वास्तव में यह तो महत्त्वपूर्ण संकेत है ...समय का। समय हर प्राणी को सम्भलने के लिए अवसर दे रहा है। पूरे विश्व में करोड़ों लोग इस बीमारी से संक्रमित हुए, लाखों को अपनी जान गँवानी पड़ी और अरबों लोगों का जीवन अत्यन्त प्रभावित हुआ। अनेकों लोग इस महामारी के भय से गहरे अवसाद से ग्रसित हैं, अनेकों लोग भविष्य की चिन्ता से भयभीत हैं और हर कोई अपने प्राणों की सुरक्षा के लिए चिन्तित नज़र आ रहा है ...लेकिन जिन लोगों को जीवन जीने की कला आती है ...उन्होंने समय के इस बड़े परिवर्तन को भी सहजता से स्वीकार किया और इस समय का उपयोग स्वयं को और अधिक परिपक्व तथा और अधिक मजबूत बनाने में किया।

प्रिय विकास, मेरा तुमसे यही कहना है कि इस परिस्थिति को सकारात्मक रूप से स्वीकार करो। तुमने अपने पत्र में अपनी दैनिक दिनचर्या का भी उल्लेख किया, जिससे पता चला कि पिछले कुछ महीनों से तुमने अपने आपको टी.वी. और इण्टरनेट के जालों में

और ज़्यादा उलझा लिया है। टी.वी. के चैनल क्या परोस रहे हैं? समाचार के चैनल कुछ मिनटों के मुख्य समाचार दिखाकर बाकी समय घण्टों तक नकारात्मक खबरों की बारिश करते रहते हैं, राजनीति के नाम पर ... धर्म के नाम पर ....विभिन्न नेता और अभिनेता अपने हठाग्रहों की लड़ाइयाँ लड़ते नज़र आते हैं और दर्शक अनर्थदण्ड के वशीभूत होकर अपने पापों का भण्डार ही भरते रहते हैं। मनोरञ्जन के नाम पर अश्लील फ़िल्में और अपराध से जुड़े कार्यक्रम दिलोदिमाग को कमजोर और भयभीत ही कर रहे हैं। साजिशों और षड्यन्त्रों से भरे सीरियल देखकर किसी का भला नहीं हो सकता और अनेक परिवारों के टूटने का यह मुख्य कारण है। टीवी के विज्ञापन अनेक अनचाही वस्तुओं की इच्छाओं को जन्म देते हैं, जिससे मन और जीवन दोनों ही अशान्त हो रहे हैं। इण्टरनेट पर सभी तरह की सामग्री उपलब्ध है ... बुरी भी और कुछ जानकारी पूर्ण अच्छी तथा उपयोगी भी, लेकिन मानव के अनादि काल के संस्कार ही ऐसे हैं कि अच्छाई को ग्रहण करे या न करे ....किन्तु बुराई की ओर तुरन्त आकर्षित हो जाता है।

इस कोरोना काल में तुमने स्वयं महसूस किया कि अरबपतियों से भी कहीं ज़्यादा वे भाग्यशाली हैं ...जो स्वस्थ हैं शारीरिक के साथ-साथ मानसिक रूप से भी ...और ये दोनों ही स्वास्थ्य अध्यात्म और अनुशासन युक्त जीवन शैली से सहज ही प्राप्त होते हैं। अतः प्रिय विकास, कोरोना काल से सबक लेते हुए इस निराशा को बाहर निकालकर ...अब जीवन में आध्यात्मिकता और अनुशासन को स्थान दो ...इसी के अनुसार नीचे लिखे बारह विचारों को अपनाने से तुम्हारा जीवन बहुत बेहतर हो जायेगा, ऐसा मुझे अटूट विश्वास है-

1. कोरोनाकाल से पहले तक इच्छाओं की पूर्ति के लिए जी रहे थे, अब से आवश्यकता पूर्ति के लिए

- जीना शुरू करो।
2. रोग से भी ज़्यादा रोग का डर खतरनाक होता है, इसलिए डर कर नहीं बल्कि निर्भय होकर जीओ .... सात्त्विक आहार और संयमित दिनचर्या से प्रतिरोधक क्षमता और निर्भयता दोनों बढ़ती हैं।
  3. जो सब कुछ तुम्हें मिला है वह पूरी दुनिया में 500 करोड़ से भी ज्यादा लोगों के पास नहीं है, अतः जो मिला है उसमें सन्तुष्ट रहना ही शान्ति का मूलमन्त्र है।
  4. अपने परिवार से दुःख-सुख दोनों ही साझा करना अत्यन्त आवश्यक है ... बड़ों की आज्ञा का पालन और छोटों की भावनाओं का सम्मान करने से घर परिवार में शान्तिपूर्ण माहौल स्थापित होता है।
  5. त्याग से अतुलनीय सुख मिलता है ... मिले हुए का सदुपयोग करो, जीवन की दिशा ही बदल जायेगी।
  6. अतीत की चिन्ता और भविष्य की कल्पनाएँ दोनों छोड़कर सिर्फ वर्तमान में जीने का प्रयास करो।
  7. परिस्थिति को बदलना तुम्हारे हाथ की बात नहीं है, किन्तु मनःस्थिति को बदलना अवश्य तुम्हारे वश में है .. अतः लक्ष्य निर्धारण करके मन को सम्यक् पुरुषार्थ के लिए तैयार करो।
  8. मोबाइल-इण्टरनेट के उपयोग को कम करते जाओ और टी.वी.-अखबार पर ज़्यादा समय खर्च करने के बजाय ... अच्छी पुस्तकों को पढ़ना तुम्हारे समय का सही सदुपयोग होगा।
  9. नकारात्मक खबरों एवं बातों से जितना पीछे हटोगे उतना सकारात्मकता की तरफ आगे बढ़ जाओगे।
  10. अपने मन, वचन और जीवन को कुछ भी श्रेष्ठ कार्य करने में व्यस्त रखो, श्रेष्ठ कार्य यानी जिससे स्वयं का, परिवार का, समाज का एवं राष्ट्र का हित होता हो।
  11. व्यापार में सफल होना अच्छा दिख सकता है, लेकिन जीवन में सफल होना सर्वोत्तम है .. ऐसे अनुभवी लोगों के विचारों को सुनकर अथवा पढ़कर जीवन को सफल बनाने की कला सीखो।
  12. अन्तिम ... किन्तु सबसे महत्वपूर्ण सुझाव ... अरबों रुपए खर्च करने पर भी नहीं खरीदी जा सकती ... ऐसी अमूल्य निधि यानी असीम शान्ति का अनुभव होगा तुम्हें प्रार्थना, सामायिक और स्वाध्याय इन तीनों के त्रिवेणी संगम को अपनाने से ... ये तीनों अलौकिक साधनाएँ हैं।

प्रिय विकास! ... इन विचारों को अपनाने से तुम्हारे जीवन रूपी आकाश से उदासी के काले बादल हट जायेंगे और अध्यात्म के सूरज से उत्साह का नया उजाला होगा। इस आध्यात्मिक शुरुआत से तुम्हारा जीवन खुशहाल बनें। इसी मंगल भावना के साथ .....

आपका कल्याण मित्र 'तीर्थ'

- "JINSHASAN", B-102, Veetrag City,  
Jaisalmer bypass Road, Jodhpur-342008 (Raj.)

#### शेषांश पृष्ठ 63 का

परन्तु सम्भव है। आप जैसे-जैसे इसको साधते जायेंगे, आपका दुःख स्वतः कम होगा तथा हर छोटा क्षण आपको खुशी देगा। आपकी साधना, स्वाध्याय का क्रम जितना-जितना बढ़ेगा, अन्य व्यक्तियों, साधनों से सन्तुलन करना आता चला जाएगा। हम अपनी साधना को जो काफी समय से बाधित है, रुकी हुई है, बढ़ाएँ। अपने आप पर श्रम करें। अपने आनन्द को प्राप्त करें। वर्तमान में जीएँ। इससे हमारी उपयोगिता दूसरों के लिए भी

बढ़ जायेगी। आपके जीवन से आपके परिवारजन, इष्ट-मित्र एवं समाज सजीव प्रेरणा ले सकेगा, वह भी आगे बढ़ेगा। हमें दूसरों को नहीं देखना है, विवश नहीं होना है, बल्कि स्वयं का विकास करके विस्तार देना है, विकसित होकर विस्तृत होना है और इस अमूल्य जीवन को सुवासित एवं अर्थपूर्ण जीना है।

-अध्यक्ष, अ. भ. श्री जैन रत्न युवक परिषद्  
इन्कमटैक्स कॉलोनी, टॉक रोड जयपुर (राज.)

■

**आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की जैनागम स्तोक वारिधि  
परीक्षा कक्षा तृतीय (5 जनवरी, 2020) के प्रश्नोत्तर**

- प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए- 15 x 1 = 15
- (A) जलचर का भेद नहीं है-  
 (क) सुंसुमार (ख) ग्राह  
 (ग) बिखुरा (घ) कच्छप ( ग )
- (B) जिस क्रिया द्वारा आत्मा में शुभ-अशुभ कर्म आते हैं, उसे कहते हैं-  
 (क) आस्रव (ख) बंध  
 (ग) पाप (घ) निर्जरा ( क )
- (C) सम्पूर्च्छिम मनुष्य के भेद हैं-  
 (क) 201 (ख) 101  
 (ग) 202 (घ) 102 ( ख )
- (D) पाप तत्त्व कितने प्रकार से भोगा जाता है-  
 (क) 42 (ख) 82  
 (ग) 18 (घ) 22 ( ख )
- (E) बेइन्द्रिय का उदाहरण नहीं है-  
 (क) लट (ख) कृमि  
 (ग) खटमल (घ) शंख ( ग )
- (F) निम्न में से अरूपी तत्त्व है-  
 (क) पुण्य (ख) पाप  
 (ग) बंध (घ) जीव ( घ )
- (G) देवादिक का उपसर्ग होने पर भी भयभीत होकर विचलित नहीं होना कहलाता है-  
 (क) अव्यथ (ख) असंमोह  
 (ग) व्युत्सर्ग (घ) अविवेक ( क )
- (H) कौनसे जीव जागते हुए अच्छे होते हैं-  
 (क) धर्मी (ख) अधर्मी  
 (ग) दोनों ही (घ) दोनों ही नहीं ( क )
- (I) जयन्ती बाई के प्रश्नोत्तर भगवती सूत्र के किस शतक व उद्देशक में वर्णित हैं-  
 (क) शतक 12 उद्देशक 7 में (ख) शतक 12 उद्देशक 2 में  
 (ग) शतक 7 उद्देशक 12 में (घ) शतक 14 उद्देशक 9 में ( ख )
- (J) निगोद की उत्कृष्ट काय स्थिति है-  
 (क) डेढ़ पुद्गल परावर्तन की (ख) साढे तीन पुद्गल परावर्तन की  
 (ग) ढाई पुद्गल परावर्तन की (घ) दो पुद्गल परावर्तन की ( ग )



- (K) लोक है-  
 (क) अशाश्वत (ख) शाश्वत  
 (ग) दोनों ही (घ) कोई नहीं (ख)
- (L) अहोरात्रि में कितने मुहूर्त होते हैं-  
 (क) 30 (ख) 15  
 (ग) 20 (घ) 10 (क)
- (M) श्वासोच्छ्वास का थोकड़ा किस सूत्र से लिया गया है -  
 (क) प्रज्ञापना सूत्र (ख) भगवती सूत्र  
 (ग) उत्तराध्ययन सूत्र (घ) नन्दी सूत्र (क)
- (N) पाँच मास की दीक्षा पर्याय वाले श्रमण-निर्ग्रन्थ का सुख कौनसे देव के सुख से बढ़कर होता है-  
 (क) सूर्य (ख) नक्षत्र  
 (ग) ग्रह (घ) तारा (क)
- (O) एक दिन के संयम पर्याय के पालन में ही किसने शाश्वत सिद्धि रूपी सुख को प्राप्त किया-  
 (क) गजसुकुमाल मुनि (ख) भरत महाराजा  
 (ग) भगवान महावीर (घ) उक्त सभी (क)

**प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए-**

**15 x 1 = 15**

- (A) वनस्पतिकाय का वर्ण हरा होता है। ( नहीं )  
 (B) युगलिक मरकर देवलोक में उत्पन्न होते हैं। ( हाँ )  
 (C) किसी पर झूठा दोष लगाना पर परिवाद होता है। ( नहीं )  
 (D) 'नेसज्जिए' कायक्लेश तप का भेद होता है। ( हाँ )  
 (E) पारिणामिक भाव में जीवत्व पाया जाता है। ( हाँ )  
 (F) वितत पक्षी ढाई द्वीप में होते हैं। ( नहीं )  
 (G) जीवों का भवसिद्धिपना परिणाम से है। ( नहीं )  
 (H) जयन्ती श्रमणोपासिका ने देवानन्दा की तरह दीक्षा लेकर मोक्षगति को प्राप्त किया। ( हाँ )  
 (I) व्यवहार राशि के सभी भवसिद्धिक जीव मोक्ष प्राप्त करेंगे। ( हाँ )  
 (J) व्यवहार राशि में भव्य तथा अभव्य दोनों प्रकार के जीव रहते हैं। ( हाँ )  
 (K) अठारह पापों का आचरण करके जीव कर्मों की स्थिति घटाता है। ( नहीं )  
 (L) नरकादि सब स्थानों में सब जीव त्रस स्थावरपने अनन्त बार उत्पन्न हुआ है। ( हाँ )  
 (M) श्वासोच्छ्वास मात्र घ्राणेन्द्रिय (नासिका) से ही लिया जाता है। ( नहीं )  
 (N) नारकी के नेरिये लोहार की धमण की तरह निरंतर श्वासोच्छ्वास लेते रहते हैं। ( हाँ )  
 (O) दो मास की दीक्षा पर्याय वाले श्रमण-निर्ग्रन्थ का सुख असुरेन्द्र के सुख से बढ़कर होता है। ( नहीं )

**प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से सही जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्तस्थान में लिखिए-**

**15 x 1 = 15**

- (A) चाँदी (क) प्रत्येक वनस्पति बादर पृथ्वीकाय  
 (B) वृक्ष (ख) तेऊकाय प्रत्येक वनस्पति

(C) सुधर्मा स्वामी	(ग) पृथक्त्व मुहूर्त्त	स्वर्लिंग सिद्ध
(D) उल्कापात	(घ) चौरैन्द्रिय	तेऊकाय
(E) आलोचना	(च) स्वर्लिंग सिद्ध	प्रायश्चित्त
(F) हल्दी	(छ) बादर पृथ्वीकाय	साधारण वनस्पति
(G) मच्छर	(ज) अनादि अनन्त	चौरैन्द्रिय
(H) अवसर्पिणी	(झ) व्यवहार राशि	उत्सर्पिणी
(I) भवसिद्धिक जीव	(य) मरु देवी	मोक्ष
(J) आकाश श्रेणी	(र) अव्यवहार राशि	अनादि अनन्त
(K) अधर्मी जीव	(ल) प्रायश्चित्त	सोते हुए
(L) भवी जीव	(व) मोक्ष	अव्यवहार राशि
(M) प्रत्येक काय	(क्ष) उत्सर्पिणी	व्यवहार राशि
(N) ज्योतिषी देवों का श्वासोच्छ्वास	(त्र) सोते हुए	पृथक्त्व मुहूर्त्त
(O) अन्तर्मुहूर्त्त में कैवल्य पर्याय	(ज्ञ) साधारण वनस्पति	मरुदेवी

**प्र.4 मुझे पहचानो-****15 x 1 = 15**

(A) मैं स्वाध्याय का वह भेद हूँ, जिसमें सीखे हुए सूत्रादि ज्ञान का मनन चिन्तन किया जाता है।	अनुप्रेक्षा
(B) मैंने संवर भावना भाई थी।	हरिकेश मुनि
(C) मैं बारह योजन की मिट्टी खा जाता हूँ।	असालिया
(D) मेरा गोत्र पंकप्रभा है।	अंजणा नारकी
(E) मुझे बांधना कठिन और भोगना सहज है।	पुण्य
(F) मेरे उत्कृष्ट 560 भेद होते हैं।	अजीव
(G) मैं प्राणों का विनाश करने से लगने वाली क्रिया हूँ।	पाणाइवाइया
(H) मैं निर्जरा का वह भेद हूँ, जिसे वृत्ति-संक्षेप भी कहा जाता है।	भिक्षाचर्या
(I) मेरे वश में हुआ जीव चार गति रूप संसार में परिभ्रमण करता रहता है।	श्रोत्रेन्द्रिय
(J) मेरा त्याग करके जीव संसार से तिर जाता है।	अठारह पाप
(L) मैं अधर्म में आनन्द मानता हूँ।	अधर्मी जीव
(K) मैंने 'विशेषणवती' नामक ग्रन्थ लिखा।	आचार्य जिनभद्रगणि क्षमाश्रमण
(M) मैं स्पर्शनेन्द्रिय से ही श्वास लेता व छोड़ता हूँ।	एकेन्द्रिय
(N) मेरा श्वासोच्छ्वास जघन्य 2 पक्ष उत्कृष्ट 7 पक्ष का होता है।	तीसरे देवलोक के देव
(O) मेरा सुख नवग्रैवेयक देवों के सुख से बढ़कर होता है।	ग्यारह मास की दीक्षा पर्याय वाले श्रमण निर्ग्रन्थ

**प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में उत्तर दीजिए-****8 X 2 = 16**

- (A) अपायविचय का अर्थ लिखिए।  
 उ. राग-द्वेषादि दोषों को तथा उनसे होने वाली हानियों का चिन्तन करना।  
 (B) पाँच अनुत्तर विमान के देवों के नाम लिखिए।

- उ. विजय, वैजयंत, जयंत, अपराजित और सर्वार्थ सिद्ध।
- (C) भाव ऊनोदरी के छह भेद लिखिए।
- उ. 1. अल्प क्रोध, 2. अल्प मान, 3. अल्प माया, 4. अल्प लोभ, 5. अल्प शब्द, 6. अल्प कलह।
- (D) आस्रव के जघन्य भेद कितने होते हैं ? नाम भी लिखिए।
- उ. 5 भेद-1. मिथ्यात्व, 2. अन्नत, 3. प्रमाद, 4. कषाय और 5. अशुभ योग।
- (E) धर्मी जीव किसके लिए सुखकारी हैं ?
- उ. सभी प्राण, भूत, जीव और सत्व के लिए सुखकारी हैं।
- (F) यह लोक कितना बड़ा है ?
- उ. यह लोक असंख्याता कोड़ाकोड़ी योजन का लम्बा चौड़ा विस्तार वाला है।
- (G) सातवीं ग्रैवेयक के देव का श्वासोच्छ्वास लिखिए।
- उ. जघन्य 28 पक्ष तथा उत्कृष्ट 29 पक्ष में।
- (H) सात मास की दीक्षा पर्याय वाले श्रमण-निर्ग्रन्थ का सुख कौनसे देवलोक के देवों के सुख से बढ़कर होता है ?
- उ. सनत्कुमार और माहेन्द्र देवलोक के देवों के सुख से।

**प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर दो-तीन पंक्तियों में लिखिए-**

**8 X 3 = 24**

- (A) विनय किसे कहते हैं ? इसके भेद भी लिखिए।
- उ. ज्ञान आदि सद्गुणों में एवं इन गुणों के धारक महापुरुषों के प्रति बहुमान रखना, उनको उचित सत्कार सम्मान देना 'विनय' कहलाता है। विनय के सात भेद हैं- 1. ज्ञान विनय, 2. दर्शन विनय, 3. चारित्र विनय, 4. मन विनय, 5. वचन विनय, 6. काय विनय, 7. लोकोपचार विनय।
- (B) देवता के 198 मूल भेद पाठ्य पुस्तक के अनुसार लिखिए।
- उ. दस भवनपति, पन्द्रह परमाधामी, सोलह वाणव्यंतर, दस त्रिजृम्भक, दस ज्योतिषी, तीन किल्बिषी, बाराह देवलोक, नव लोकांतिक, नव ग्रैवेयक और पाँच अनुत्तर विमान-ये देवता के 99 भेद हैं, इनके 99 पर्याप्त और 99 अपर्याप्त कुल 198 भेद हुए।
- © रौद्र ध्यान के प्रथम तीन लक्षण लिखिए।
- उ. 1. हिंसा, झूठ, चोरी आदि दोषों का सेवन करना। 2. हिंसा, झूठ, चोरी आदि दोषों का बार-बार सेवन करना। 3. अधर्म के कार्यों में धर्म मानकर प्रवृत्ति करना।
- (D) भवसिद्धिक जीवों के मोक्ष में जाने पर भी व्यवहार राशि में जीव हमेशा बराबर बने रहते हैं, उनकी संख्या कम नहीं होती है। इसका क्या कारण है ?
- उ. जितने जीव मोक्ष में जाते हैं, उतने ही भव्य जीव अव्यवहार राशि से व्यवहार राशि में आ जाते हैं, इस कारण से व्यवहार राशि में भव्य जीव हमेशा बराबर ही रहते हैं।
- (E) संसार में ऐसी कोई जगह नहीं बची, जहाँ इस जीव ने जन्म-मरण नहीं किया हो। इस बात की पुष्टि के लिए कोई चार कारण लिखिए।
- उ. नोट: इनमें से कोई चार कारण-1. लोक शाश्वत है। 2. लोक अनादि है। 3. जीव नित्य है। 4. कर्मों की बहुलता है। 5. जन्म-मरण की बहुलता है।
- (F) देवताओं में श्वासोच्छ्वास की प्रक्रिया को उदाहरण सहित समझाइए।

- उ. देवताओं में श्वास ग्रहण की प्रक्रिया अन्तर्मुहूर्त तक चलती है फिर अन्तर्मुहूर्त तक श्वास छोड़ते हैं। उदाहरण के रूप में एक सैकण्ड तक श्वास लेते रहना फिर एक सैकण्ड तक श्वास छोड़ते रहना। अर्थात् अन्तर्मुहूर्त तक श्वास लेने-छोड़ने की प्रक्रिया चलती है।
- (G) आठवें ,नवमें देवलोक व पाँचवीं, छठी त्रैवेयक के देवों की जघन्य व उत्कृष्ट श्वासोच्छ्वास की स्थिति लिखिए।
- उ. आठवें देवलोक के देव जघन्य 17 पक्ष, उत्कृष्ट 18 पक्ष में।  
नवमें देवलोक के देव जघन्य 18 पक्ष, उत्कृष्ट 19 पक्ष में।  
पाँचवीं त्रैवेयक के देव जघन्य 26 पक्ष, उत्कृष्ट 27 पक्ष में।  
छठी त्रैवेयक के देव जघन्य 27 पक्ष, उत्कृष्ट 28 पक्ष में।
- (H) कौनसा साधु तेजो लेश्या रूप सुख की अनुभूति करने वाला होता है ?
- उ. जो नम्र वृत्ति वाला, अचपल, माया से रहित, कुतुहल से रहित, विनीत, दान्त, स्वाध्यायादि से समाधि सम्पन्न और उपधानवान है, प्रियधर्मी, दृढधर्मी है, पाप भीरू है, प्राणिमात्र का हितैषी है ऐसा साधु तेजो लेश्या रूप सुख की अनुभूति करने वाला होता है।

## निर्जरा भावना

श्रीमती अभिलाषा हीरावत

पूर्व बंधे कर्मों का क्षय कहलाता निर्जरा  
उदय उदीरित कर्मों का वेदन ही है निर्जरा  
बन्ध उदय और सत्ता, ये हैं कर्मों की अवस्था  
उदयान्तर होती निर्जरा, ऐसी है व्यवस्था  
निर्जरा से होती आंशिक आत्मशुद्धि, मोक्ष से सर्वथा  
उत्तरोत्तर आत्मविकास से मिलती,  
सिद्ध की शाश्वत अवस्था  
निर्जरा कारण है, मोक्ष है उसका कार्य  
सर्वदेश निर्जरा है मोक्ष का उपाय  
वैराग्य जननी राग हरनी, निर्मल दशा है निर्जरा  
आनन्द जननी, साधकों की संगिनी,  
निष्काम कला है निर्जरा  
भवचक्र मुक्ति दायिनी, बन्ध की विध्वंसनी है निर्जरा  
तप त्याग से सुख शान्ति को विस्तारती है निर्जरा  
अकाम से सकाम, उच्चकोटि की है निर्जरा  
द्वादश तप रूप भेद, कारणभूत है निर्जरा

बारह तप समकित सम करने से पावे मुक्ति प्राणी  
शाश्वत सुख का मार्ग यही है बतलावे प्रभु वाणी  
ज्ञान संग तप क्रिया करने से सञ्चित कर्म खप जाएँ  
ज्ञानी एक श्वास में क्रोड वर्ष के कर्म खपाएँ  
प्रचण्ड रवि का ताप जैसे सरवर का जल सुखाए  
तप त्याग के तेज से, वैसे निर्जरा पूर्व कर्म खपाए  
उदय भोग सविपाक समय से आंशिक निर्जरा होए  
उद्यम कर पुरुषार्थ से, अविपाक होती चली जाए  
अभयदान सुपात्रदान से कटुफल कर्म निर्जरित हो जाएँ  
अन्तःकरण शुद्धि, शुभ भावों के शिखर पर ले जाए  
सम्यग्ज्ञान क्रिया की सहचारिता से  
सहज मुक्ति मिल जाए  
शुद्ध धर्माचरण से निर्जरा सरल क्षायिक हो जाए।  
'अर्जुन मुनि' ने अप्रमत्त हो 'निर्जरा भावना' भाई  
अनुप्रेक्षा से आचरित कर त्वरित मुक्ति है पाई  
'निर्जरा भावना' की अनुप्रेक्षा कर ले रे भवी प्राणी!  
दिखला रही मुक्ति पथ हमको 'मुदित' जिनवाणी।

-1101, बुड साइड, जी साउथ गोरखले रोड,  
प्रभादेवी, मुम्बई-400025 (महाराष्ट्र)

## रत्नसंघ के सन्त-सतियों के चातुर्मास

(विक्रम सम्वत् 2077, ईस्वी सन् 2020)

जिनशासन गौरव, परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा. द्वारा विक्रम सम्वत् 2077 सन् 2020 हेतु साधु-मर्यादा के समस्त आगारों के साथ घोषित चातुर्मासों का विवरण इस प्रकार है- सम्पादक

### 1. कोसाणा, जिला-जोधपुर (राज.)

श्रद्धेय परम आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा.

श्रद्धेय महान् अध्यवसायी सरस व्याख्यानी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा.

श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा.

श्रद्धेय तपस्वी श्रद्धेय श्री मोहनमुनिजी म.सा.

श्रद्धेय श्री आशीषमुनिजी म.सा.

श्रद्धेय श्री विनम्रमुनिजी म.सा.

श्रद्धेय श्री रवीन्द्रमुनिजी म.सा.

श्रद्धेय श्री कल्पेशमुनिजी म.सा. ठाणा 8

चातुर्मास-स्थल-श्री महावीर भवन, पो. कोसाणा-342601, तहसील-पीपाड़ शहर, जिला-जोधपुर (राज.)

संयोजक-श्री आर. पदमचन्द्रजी बाघमार, मोबाइल: 94440-77990

#### सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री जी. गणपतराजजी बाघमार, अध्यक्ष, मो. : 93810-04293

2. श्री एम. अनोपचन्द्रजी बाघमार, मन्त्री, महाजनों का बास, पो. कोसाणा-342601, वाया-पीपाड़, जिला-जोधपुर (राज.), मो. : 94444-67320

**आवागमन के साधन-** कोसाणा पीपाड़ शहर से 15 किमी., गोटन से 30 किमी., जोधपुर से 78 किमी. एवं जयपुर से 260 किमी. की दूरी पर स्थित है। नजदीकी रेलवे स्टेशन पीपाड़ रोड एवं गोटन है। कोसाणा के लिए पीपाड़ सिटी से हर एक-दो घंटों में तथा जोधपुर से सीधी बस सेवा उपलब्ध है।

### 2. सवाईमाधोपुर (राज.)

श्रद्धेय मधुरव्याख्यानी श्रद्धेय श्रीगौतममुनिजी म.सा.

श्रद्धेय श्री अविनाशमुनिजी म.सा.

श्रद्धेय श्री दीपेशमुनिजी म.सा. ठाणा 3  
चातुर्मास-स्थल-महावीर भवन, गुरुद्वारा रोड़, सवाईमाधोपुर-322021 (राज.)

#### सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री धर्मचन्द्रजी जैन 'करेला वाले', अध्यक्ष, मो. : 63770-31734, 94131-54743

2. श्री मुकेशजी जैन, मन्त्री, मोबाइल : 85619-66835, 98871-07248

3. श्री कुशलजी जैन 'गोटेवाला' (चातुर्मास सेवा समिति), पुराना खण्डार रोड़, सवाईमाधोपुर (राज.), फोन नं. 07462-233550, मो. 94604-41570

4. श्री सुबाहुकमारजी जैन सर्राफ (क्षेत्रीय प्रधान), फोन 07462-233451, 221877, मो. 94139-24700

**आवागमन के साधन-** महावीर भवन रेलवे स्टेशन से 6 किमी. एवं बस स्टैण्ड से 6 किमी. की दूरी पर स्थित है। जयपुर से 132 किमी., कोटा से 108 किमी. पर स्थित है। यहाँ के लिए जयपुर, कोटा, मुम्बई, दिल्ली से रेल सुविधा उपलब्ध है। नजदीकी रेलवे स्टेशन सवाईमाधोपुर जंक्शन है।

### 3. सूरत (गुजरात)

श्रद्धेय व्याख्यानी सेवाभावी श्रद्धेय श्री नन्दीषेणमुनिजी म.सा.

श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा.

श्रद्धेय श्री देवेन्द्रमुनिजी म.सा.

श्रद्धेय श्री दर्शनमुनिजी म.सा. ठाणा 4

**चातुर्मास-स्थल**-श्री सोहनलाल नाहर स्वाध्याय भवन, 25, एम.जे. पार्क, आचार्य हस्ती मार्ग, डी.आर.बी. कॉलेज के पास, न्यू सिटी लाइट, सूरत-395017 (गुजरात), मोबाइल: 90160-74855

#### सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री प्रकाशचन्द्रजी गाँधी, अध्यक्ष-99740-85011
2. श्री सुनीलकुमारजी नाहर, मन्त्री, ए-614, इण्डिया टेक्सटाइल मार्केट, रिंग रोड़, सूरत-395002 (गुजरात), फोन : 0261-2331546, मो. 98251-25718
3. श्री जीतजी देवड़ा- 99822-32555
4. श्री सुनीलजी गाँधी-99740-85013

**आवागमन के साधन**-सूरत देश के विभिन्न राज्यों से सड़क, रेल एवं हवाई मार्ग से जुड़ा हुआ है। चातुर्मास स्थल रेलवे स्टेशन से 9 किमी. एवं बस स्टेण्ड से 9 किमी. एवं हवाई अड्डे से 7 किमी. की दूरी पर स्थित है।

#### 4. महावीर नगर-जयपुर (राज.)

❧ तत्त्वचिन्तक श्रद्धेयश्री प्रमोदमुनिजी म.सा.

❧ श्रद्धेय श्री सुभाषमुनिजी म.सा.

❧ श्रद्धेय श्री गुणवन्तमुनिजी म.सा. ठाणा 3

**चातुर्मास-स्थल**-राजकँवर केवलमल लोढ़ा सामायिक-स्वाध्याय भवन, गजेन्द्र पथ, महावीर नगर, टॉक रोड़, जयपुर-302018 (राज.), मो. 93513-05953

#### सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री प्रमोदजी महनोत, अध्यक्ष-98290-52094
2. श्री सुरेशजी कोठारी, मन्त्री-93145-01627
3. डॉ. प्रतापसिंह लोढ़ा, एस 231, महावीर नगर, टॉक रोड़, जयपुर-302018 (राज.) मो. : 94142-51355
4. डॉ. प्रेमसिंह जी लोढ़ा, मो. : 93145-02203
5. श्री नरपतचन्द्रजी सिंघवी, मो. : 98297-93416
6. श्री विरेन्द्रजी चौरड़िया, मो. : 98284-06868

**आवागमन के साधन**-चातुर्मास स्थल दुर्गापुरा रेलवे स्टेशन से 1.5 किमी, जयपुर स्टेशन से 8 किमी. एवं गाँधीनगर रेलवे स्टेशन से 2.5 किमी. की दूरी पर स्थित है।

बस स्टेण्ड से लगभग 8 किमी. की दूरी है। नज़दीकी रेलवे स्टेशन दुर्गापुरा और गाँधीनगर है।

#### 5. पावटा-जोधपुर (राज.)

❧ व्याख्यानी श्रद्धेयश्री यशवन्तमुनिजी म.सा.

❧ श्रद्धेय श्री जितेन्द्रमुनिजी म.सा.

❧ श्रद्धेय श्री अभयमुनिजी म.सा.

❧ श्रद्धेय श्री अशोकमुनिजी म.सा. ठाणा 4

**चातुर्मास-स्थल**-सामायिक-स्वाध्याय भवन, सी-55, धर्मनारायणजी का हत्था, पावटा, जोधपुर-342006 (राज.), फोन: 0291-2550146, अतिथि भवन फोन नं. 0291-2550147

#### सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री सुभाषजी गुन्देचा-अध्यक्ष, मो. 093147-00972
2. श्री नवरतनमलजी गिड़िया-मन्त्री, ए-20, धर्मनारायणजी का हत्था, पावटा, जोधपुर-342006 (राज.), फोन 0291-2546838, 94141-00759,
3. श्री सुरेशजी गांग, मो. : 93147-11320
4. श्री नरपतराजजी चौपड़ा, फोन: 0291-2545265, मो.94604-22134
5. श्री मनीषजी चन्दनमलजी लोढ़ा (भोजन व्यवस्था)-94142-43249
6. श्री महेन्द्रजी सुराणा (आवास-निवास व्यवस्था)-94133-87760

**आवागमन के साधन**-पावटा स्थित सामायिक-स्वाध्याय भवन जोधपुर मुख्य रेलवे स्टेशन से 3 कि.मी. एवं राईकाबाग रेलवे स्टेशन व बस स्टेण्ड से आधा कि.मी. की दूरी पर स्थित है।

#### 6. महारानी फार्म, जयपुर (राज.)

❧ साध्वीप्रमुखा विदुषी महासती श्री तेजकँवरजी म.सा.

❧ व्याख्यात्री महासती श्री सुमनलता जी म.सा.

❧ महासती श्री पुष्पलता जी म.सा.

❧ महासती श्री निरंजना जी म.सा.

❧ महासती श्री चैतन्यप्रभा जी म.सा.

- ✚ महासती श्री मैत्रीप्रभा जी म.सा.  
 ✚ महासती श्री सुदर्शना जी म.सा.  
 ✚ महासती श्री प्रियदर्शना जी म.सा.  
 ✚ नवदीक्षिता महासती श्री दक्षिता जी म.सा.

ठाणा 9

**चातुर्मास-स्थल**-श्री उत्तम स्वाध्याय भवन, 250 बी, आचार्य हस्ती चौक, गायत्री नगर-बी, सीडलिंग स्कूल के पीछे, महारानी फार्म, दुर्गापुरा, जयपुर-302018

**सम्पर्क-सूत्र-**

1. श्री प्रमोदजी महनोत, अध्यक्ष-98290-52094
2. श्री सुरेशजी कोठारी, मन्त्री-93145-01627
3. श्री केवलचन्दजी जैन सराफ, सह-संयोजक, 126 बी, गायत्री नगर-बी, महारानी फार्म, दुर्गापुरा, जयपुर (राज.), मो. 90798-13532, 94140-42498
4. श्री सुधीरजी जैन, मोबाइल:-94136-78334

**आवागमन के साधन**-चातुर्मास स्थल रेलवे स्टेशन से 8 किमी., दुर्गापुरा स्टेशन से आधा किमी., बस स्टेण्ड (सिन्धी कैम्प) से लगभग 8 किमी., दुर्गापुरा बस स्टेण्ड से 1 किमी. एवं हवाई अड्डे से 4 किमी. दूरी पर स्थित है। नज़दीक रेलवे स्टेशन दुर्गापुरा एवं गाँधीनगर है।

### 7. शिवाजी नगर, मदनगंज - किशनगढ़ ( राज. )

- ✚ विदुषी महासती श्री सुशीलाकँवरजी म.सा.  
 ✚ महासती श्री विनयप्रभाजी म.सा.  
 ✚ महासती श्री इन्द्राप्रभाजी म.सा.

✚ महासती श्री पूनमजी म.सा. ठाणा 4  
**चातुर्मास-स्थल**-जैन स्थानक, बृज मधुकर स्मृति भवन, वाई.एन. अस्पताल के पीछे, शिवाजीनगर, किशनगढ़-मदनगंज-305801, जिला-अजमेर (राज.)

**सम्पर्क-सूत्र-**

1. श्री मेघराजजी मारू, एम.एस.एस. स्कूल रोड, मित्र निवास कॉलोनी, मदनगंज-किशनगढ़-305801, जिला-अजमेर(राज.), मोबाइल:-81079-57071
2. श्री अनिलजी सोनी, मन्त्री, मो. 93520-10899,

86197-20635

3. श्री प्रमोदकुमारजी मोदी, मो. : 94140-12077
4. श्री ताराचन्दजी जामड़, मो. : 94142-81145

**आवागमन के साधन**-किशनगढ़ जयपुर-अजमेर हाईवे पर स्थित है। चातुर्मास स्थल रेलवे स्टेशन से 5 किमी. एवं बस स्टेण्ड से 3 किमी. की दूरी पर स्थित है। किशनगढ़ जयपुर से 100 किमी. एवं अजमेर से 27 किमी. की दूरी पर स्थित है। नज़दीक रेलवे स्टेशन किशनगढ़ है।

### 8. नांदगाँव (महा.)

✚ विदुषी महासती श्री सौभाग्यवतीजी म.सा.

✚ महासती श्री सुश्रीप्रभाजी म.सा.

✚ महासती श्री शारदाजी म.सा.

✚ महासती श्री लीलाकँवरजी म.सा.

✚ महासती श्री विजयश्रीजी म.सा. ठाणा 5

**चातुर्मास-स्थल**-ओसवाल भवन, भगवान् महावीर मार्ग, पो. नांदगाँव-423106, जिला-नाशिक (महा.)

**सम्पर्क-सूत्र-**

1. श्री प्रफुल्लजी पारख, संघपति-श्री ओसवाल श्वेताम्बर जैन संघ, गाँधी चौक, पो. नांदगाँव, जिला-नाशिक (महा.) मो. : 94239-47939
  2. श्री विजयजी चौपड़ा, महामन्त्री, मो. 70207-49394
- आवागमन के साधन**-चातुर्मास स्थल मनमाड जंक्शन से 24 किमी., जलगाँव स्टेशन से 120 किमी., नांदगाँव रेलवे स्टेशन से 0.75 किमी. पर स्थित है। राज्य परिवहन महामण्डल की बस सेवा मालेगाँव, मनमाड, चालीसगाँव से उपलब्ध है। नज़दीकी रेलवे स्टेशन नांदगाँव है।

### 9. जालिया द्वितीय, जिला-अजमेर (राज.)

✚ व्याख्यात्री महासती श्रीमनोहरकँवरजी म.सा.

✚ महासती श्री कौशल्यावतीजी म.सा.

✚ महासती श्री पुनीतप्रभाजी म.सा. ठाणा 3

**चातुर्मास-स्थल**-स्वाध्याय भवन, कोठारी मौहल्ला, सदर बाजार, पो. जालिया द्वितीय-305625, जिला-अजमेर (राज.)

**सम्पर्क-सूत्र-**

1. श्री भागचन्दजी कोठारी, अध्यक्ष, कोठारी मौहल्ला, पो. जालिया द्वितीय, जिला-अजमेर (राज.) मोबाइल:- 94132-65451
2. श्री सुनीलकुमारजी कोठारी, मन्त्री, मोबाइल:- 94136-90622, 94606-14462
3. श्री उत्तमचन्दजी चौरडिया, मो. 94138-74255
4. श्री शान्तिलालजी भटेवड़ा, मो. 75972-84908

**आवागमन के साधन**-जालिया द्वितीय अजमेर जिलान्तर्गत आता है। विजयनगर रेलवे स्टेशन से जालिया 10 किमी., ब्यावर से 34 किमी. की दूरी पर स्थित है। नज़दीक रेलवे स्टेशन विजयनगर है।

**10. अरटिया कलाँ, जिला-जोधपुर (राज.)**

- ✚ व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकँवरजी म.सा.
- ✚ महासती श्री विमलावतीजी म.सा.
- ✚ महासती श्री जागृतिप्रभाजी म.सा.
- ✚ महासती श्री परागप्रभाजी म.सा.
- ✚ महासती श्री वृद्धिप्रभाजी म.सा.
- ✚ महासती श्री रिद्धिप्रभाजी म.सा.
- ✚ महासती श्री सिद्धिप्रभाजी म.सा. ठाणा 7

**चातुर्मास-स्थल**-महावीर भवन, पो. अरटिया कलाँ-342606, वाया पीपाड़ रोड़, जिला-जोधपुर (राज.)

**सम्पर्क-सूत्र-**

1. श्री उगमराजजी कर्णावट, अध्यक्ष-99403-46678
2. श्री अम्बालालजी कर्णावट, मन्त्री, मु.पो. अरटिया कलाँ-342606, वाया पीपाड़, जिला-जोधपुर (राज.), मोबाइल:- 94442-31120
3. श्री भूमलजी कर्णावट, मोबाइल:- 94443-22804
4. श्री सुनिलजी कर्णावट, मोबाइल:- 97910-58855, 78100-33605

**आवागमन के साधन**-अरटिया कलाँ जोधपुर से भोपालगढ रोड़ पर स्थित है। पीपाड़ रोड़ स्टेशन से 9 किमी., जोधपुर रेलवे स्टेशन से 60 किमी. की दूरी पर स्थित है। नज़दीक रेलवे स्टेशन जोधपुर है।

**11. पुष्कर रोड़, अजमेर (राज.)**

- ✚ व्याख्यात्री महासती श्री सरलेशप्रभाजी म.सा.
  - ✚ महासती श्री रक्षिताजी म.सा.
  - ✚ महासती श्री सुयशप्रभाजी म.सा.
  - ✚ महासती श्री प्रभावतीजी म.सा. ठाणा 4
- चातुर्मास-स्थल**-सामायिक-स्वाध्याय भवन, महावीर कॉलोनी के पास, अरिहन्त कॉलोनी, पुष्कर रोड़, अजमेर-305001 (राज.)

**सम्पर्क-सूत्र-**

1. श्री विवेकजी महनोत, अध्यक्ष, फोन नं. 0145-2420571 मो. 98291-54156
2. श्री चन्द्रप्रकाशजी कटारिया, मन्त्री, 53, नवग्रह कॉलोनी, पुष्कर रोड़, अजमेर-305002 (राज.), फोन नं. 0145-2621819, 94142-81050
3. श्री चन्द्रप्रकाश जी कोठारी-फोन नं. 0145-2426702, 98290-70092
4. श्री रिखबचन्द जी माण्डोत-94140-07508

**आवागमन के साधन**-अजमेर भारत के प्रमुख शहरों से रेल एवं बस सेवा से जुड़ा हुआ है। पुष्कर रोड़ स्थानक मुख्य रेलवे स्टेशन से तथा बस स्टेण्ड से 2.5 किमी. की दूरी पर स्थित है।

**12. दिग्विजयनगर, जोधपुर (राज.)**

- ✚ व्याख्यात्री महासती श्री चन्द्रकलाजी म.सा.
  - ✚ महासती श्री दर्शनलताजी म.सा.
  - ✚ महासती श्री शशिकलाजी म.सा.
  - ✚ महासती श्री विनीतप्रभाजी म.सा.
  - ✚ महासती श्री उषाजी म.सा.
  - ✚ महासती श्री सुव्रतप्रभाजी म.सा.
  - ✚ महासती श्री कान्ताजी म.सा. ठाणा 7
- चातुर्मास-स्थल**-12, दिग्विजयनगर, खेमे का कुँआ, पाल रोड़, जिला-जोधपुर-342001 (राज.), फोन नं. 0291-2785737

**सम्पर्क-सूत्र-**

1. श्री सुभाषजी गुन्देचा, अध्यक्ष-93147-00972



2. श्री नवरतनमलजी गिड़िया, मन्त्री-94141-00759
3. श्री महेन्द्रजी मेहता (क्षेत्रीय संयोजक), 11 बी-1, शुभारम्भ स्कूल के पास, सुभाष नगर, पाल रोड़, जोधपुर-342008 (राज.), मो. 94144-94418
4. श्री चंचलमलजी अशोकजी चोरड़िया, फोन नं 0291-2785737, 94141-29162, 94141-34606, ईमेल:- ashok.chordia1@gmail.com

**आवागमन के साधन-** चातुर्मास स्थल रेलवे स्टेशन से 6 एवं बस स्टैण्ड से लगभग 10 किमी. की दूरी पर स्थित है।

### 13. अयनावरम्, चेन्नई (तमिलनाडु)

❧ व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबालाजी म.सा.

❧ महासती श्री सुमतिप्रभाजी म.सा.

❧ महासती श्री मुदितप्रभाजी म.सा.

❧ महासती श्री देवांगनाजी म.सा.

❧ महासती श्री अंजनाजी म.सा.

❧ महासती श्री सुभद्राजी म.सा.

❧ महासती श्री सिन्धुप्रभाजी म.सा.

❧ महासती श्री तितिक्षाश्रीजी म.सा.

❧ महासती श्री वर्षाश्रीजी म.सा.

❧ महासती श्री हेमप्रभाजी म.सा. ठाणा 10

**चातुर्मास-स्थल-**श्री श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन संघ, #309, Kannuee High Road, Ayanavaram, Chennai-600023 (T.N.) Ph. 044-26744592

### सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री भँवरलालजी राठौड़, अध्यक्ष, No. 24, Bangaru St., Ayanavaram, Chennai-600023 (T.N.), Ph. 044-26749591, 94440-77591
2. श्री सुभाषचन्दजी छाजेड़, मन्त्री, 044-26741316, 98424-40000,
3. श्री मीठालालजी दुगड़, कोषाध्यक्ष, फोन:- 044-48630350, 99945-88181
4. श्री सम्पतराजजी बागमार, फोन:- 044-45535444, 90940-40404

**आवागमन के साधन-**चातुर्मास स्थल रेलवे स्टेशन से 5.8 किमी. एवं बस स्टैण्ड से 10 किमी. की दूरी पर स्थित

है। नज़दीकी रेलवे स्टेशन एम.जी.आर. चेन्नई सेन्ट्रल रेलवे स्टेशन है।

### 14. महावीर नगर, जयपुर (राज.)

❧ व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलताजी म.सा.

❧ महासती श्री भाग्यप्रभाजी म.सा.

❧ महासती श्री संगीताश्रीजी म.सा.

❧ महासती श्री नव्यप्रभाजी म.सा.

❧ महासती श्री भविताश्रीजी म.सा.

❧ महासती श्री महिमाश्रीजी म.सा.

❧ महासती श्री कल्पयशाजी म.सा.

❧ महासती श्री मधुश्रीजी म.सा.

❧ महासती श्री प्रणतिश्रीजी म.सा. ठाणा 9

**चातुर्मास-स्थल-**लोढ़ा भवन, ए 4-5, गजेन्द्र पथ, महावीर नगर, टॉक रोड़, जयपुर-302018 (राज.), 93513-05953

**सम्पर्क-सूत्र-** चातुर्मास क्रम संख्या (4) के अनुसार

### 15. बुलढाणा (महा.)

❧ व्याख्यात्री महासती श्री चारित्रलताजी म.सा.

❧ महासती श्री भावनाजी म.सा.

❧ महासती श्री प्रीतिश्रीजी म.सा.

❧ महासती श्री लक्षितप्रभाजी म.सा.

❧ महासती श्री गरिमाश्रीजी म.सा. ठाणा 5

**चातुर्मास-स्थल-**जैन स्थानक, भगवान महावीर मार्ग, बुलढाणा-443001 (महाराष्ट्र)

### सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री विजय कुमार जवरीलालजी बाफणा, अध्यक्ष, फोन नं. 07262-242387, 92846-75677,
2. श्री सुभाषचन्दजी जमनालालजी मालु, मन्त्री, जनता स्टोर्स, भगवान महावीर मार्ग, बुलढाणा (महाराष्ट्र) मो. : 94221-80387, 77449-93393
3. श्री पवन कुमारजी श्रेणिकचन्दजी कोठारी, मो. 94221-81105
4. श्री विजय कुमारजी कुन्दनमलजी चौपड़ा, मो. : 94210-77779, 88885-81582

**आवागमन के साधन-** चातुर्मास स्थल बस स्टैण्ड से 1 किमी. की दूरी पर स्थित है। नजदीकी रेलवे स्टेशन मलकापुर से बुलढाणा 45 कि.मी., अकोला से 100 कि.मी. एवं जालना से 110 कि.मी. है।

### 16. चामराजपेट, बेंगलुरु (कर्नाटक)

❧ व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवतीजी म.सा.

❧ महासती श्री श्रुतिप्रभाजी म.सा.

❧ महासती श्री मतिप्रभाजी म.सा.

❧ महासती श्री भव्यप्रभाजी म.सा.

❧ महासती श्री दीपिकाश्री जी म.सा. ठाणा 5

**चातुर्मास-स्थल-**श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, "Jain Sthanak", No. 196, 4th Main Road, Nr. 5th Cross, Chamrajpet-560018, Bangalore (Karnataka)

#### सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री शान्तिलालजी समदड़िया, अध्यक्ष, मोबाइल:- 98452-97341
2. श्री सम्पतराजजी बाफणा, मन्त्री, फोन : 080-26620074, 98865-63433
3. श्री महावीरचन्द्रजी मेहता, मोबाइल:- 93412-48420, 70199-03798
4. श्री हंसमुखजी रांका, मोबाइल:- 92422-55290
5. श्री महावीरजी कांकरिया, मोबाइल:- 97406-66660

**आवागमन के साधन-**चामराज पेट, चातुर्मास स्थल बेंगलुरु सिटी रेलवे स्टेशन से 2.5 किमी., यशवन्तपुर रेलवे स्टेशन से 6 किमी., बेंगलोर छावनी रेलवे स्टेशन से 8 किमी., केन्द्रीय मेजिस्टिक बस स्टैण्ड से 2.5 किमी. एवं बेंगलोर अन्तरराष्ट्रीय हवाई अड्डे से 40 किमी. की दूरी पर स्थित है।

### 17. पाँच्यावाला/नित्यानन्द नगर, जयपुर (राज.)

❧ व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभाजी म.सा.

❧ महासती श्री संयमप्रभाजी म.सा.

❧ महासती श्री कोमलश्री जी म.सा. ठाणा 3

**चातुर्मास-स्थल-** श्री जिनवाणी भवन, 158-ए, मीरा पथ, श्याम एनक्लेव, पाँच्यावाला, सिरसी रोड़, जयपुर-302034 (राज.)

#### सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री रामबाबूजी जैन, अध्यक्ष, मो. 98290-60489
2. श्री एवन्तकुमारजी जैन, 158 ए, मीरा पथ, श्याम एनक्लेव, पाँच्यावाला, सिरसी रोड़, जयपुर (राज.), मोबाइल:- 94147-66155

**आवागमन के साधन-**चातुर्मास स्थल रेलवे स्टेशन से 6.5 किमी. तथा सिन्धी कैम्प बस स्टैण्ड से 8.5 किमी. एवं 200 फीट बस स्टैण्ड से 4.5 किमी की दूरी पर स्थित है। नज़दीकी रेलवे स्टेशन कनकपुरा 2.5 किमी पर स्थित है।

#### (अन्तिम दो माह का चातुर्मास नित्यानन्द नगर)

**चातुर्मास-स्थल-** श्री जैन हितैषी श्रावक संघ, ए-51, गली नम्बर 6, नित्यानन्द नगर, होटल सरोवर पोर्टीको के सामने, विद्युत नगर, अजमेर रोड़, जयपुर-302021 (राज.)

#### सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री देवेन्द्रजी मेहता, अध्यक्ष, फोन:- 0141-2355666, 99280-84822
2. श्री आनन्दराजजी जैन (मुणोत), मन्त्री, बी-17-ए, विद्युत नगर, अजमेर रोड़, जयपुर (राज.), फोन:- 0141-2358420, 93144-50090, 85028-50200,
3. श्री भागचन्द्रजी जैन, मोबाइल:- 98283-19932
4. श्री शान्तिकुमारजी जैन, मोबाइल:- 63785-47756

**आवागमन के साधन-**चातुर्मास स्थल रेलवे स्टेशन से 5.5 किमी. तथा सिन्धी कैम्प बस स्टैण्ड से 6 किमी. की दूरी पर स्थित है।

### 18. सैंधवा (मध्यप्रदेश)

❧ सेवाभावी व्याख्यात्री महासती श्री विमलेश प्रभाजी म.सा.

❧ महासती श्री यशप्रभाजी म.सा.

✽ महासती श्री भक्तिप्रभाजी म.सा.

✽ महासती श्री निमिषाजी म.सा. ठाणा 4

**चातुर्मास-स्थल**-श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, देवी अहिल्या मार्ग (महाराज गली), पो. सैंधवा-451666, जिला-बडवानी (मध्यप्रदेश)

**सम्पर्क-सूत्र-**

1. श्री किरणलालजी हीरालालजी नाहटा-अध्यक्ष, मोबाइल:-96440-89971, 93405-10249
2. श्री (डॉ.) प्रतीकजी अशोकजी चौपड़ा, मन्त्री, महावीर डेन्टल क्लिनिक, मोतीबाग चौक, पो. सैंधवा, जिला-बडवानी (मध्यप्रदेश), मो. 94245-33723
3. श्री राजेन्द्रजी चम्पालालजी कांकरिया, मोबाइल:-94250-89347, 94245-00347
4. श्री प्रेमचन्द लालचन्दजी सुराणा, मोबाइल:-94250-82675, 88393-14235

**आवागमन के साधन**- बस द्वारा सैंधवा मुम्बई-आगरा हाइवे नं. 3 पर स्थित है। नया बस स्टेण्ड की दूरी लगभग 1.25 किमी. है। नज़दीकी रेलवे स्टेशन इन्दौर 160 किमी., अमलनेर 102 किमी., नंदुरबार 110 किमी. एवं खण्डवा 161 किमी. है।

### 19. राजाजीनगर, बेंगलुरु (कर्नाटक)

✽ व्याख्यात्री महासती श्री रुचिताजी म.सा.

✽ महासती श्री विवेकप्रभाजी म.सा.

✽ महासती श्री कृपाश्रीजी म.सा.

✽ महासती श्री प्रज्ञाश्रीजी म.सा.

✽ महासती श्री संवेगश्रीजी म.सा.

✽ महासती श्री आराधनाश्रीजी म.सा. ठाणा 6

**चातुर्मास-स्थल**-श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, एच. उत्तमचन्द प्रमिला भण्डारी सामायिक-स्वाध्याय भवन, No. 101, Ist Main Road, IInd Block, Dr. Rajkumar Road, Opp. Sagar Hotel, Near Raghvendra Mutt, Rajaji Nagar, Bangalore-560010 (Karnataka), Ph. 080-43709199, श्री जितेन्द्रजी-9986423813, श्री देवेन्द्रजी-91136-13015, 76763-42377

**सम्पर्क-सूत्र-**

1. श्री पदमराजजी मेहता-अध्यक्ष, 99001-62517
2. श्री धनरूपचन्दजी मेहता, कार्याध्यक्ष, 93412-21084
3. श्री गौतमचन्दजी ओस्तवाल, मन्त्री, Moksh Dwar, J-113, 10th Cross, IInd floor, L.N. Puram, Srirampuram Post, Bangalore-560021 (K.T.), M. : 94481-80661, 83106-11612

**आवागमन के साधन**-राजाजीनगर चातुर्मास स्थल बेंगलुरु सिटी रेलवे स्टेशन से 2.5 किमी., यशवन्तपुर रेलवे स्टेशन से 3.5 किमी., बेंगलोर छावनी रेलवे स्टेशन से 5 किमी., केन्द्रीय मेजिस्टिक बस स्टेण्ड से 2.5 किमी. एवं बेंगलोर अन्तरराष्ट्रीय हवाई अड्डे से 37 किमी. की दूरी पर स्थित है।

### 20. मालवीय नगर, जयपुर (राज.)

✽ व्याख्यात्री महासती श्री स्नेहलताजी म.सा.

✽ महासती श्री मंजुलताजी म.सा.

✽ महासती श्री उदितप्रभाजी म.सा.

✽ महासती श्री दिव्यप्रभाजी म.सा. ठाणा 4

**चातुर्मास-स्थल**-स्थानक जैन सोसायटी, सी-314-ए, हरी मार्ग, केलगिरी रोड़, मालवीय नगर, जयपुर-302017 (राज.), मोबाइल:- 98290-52094

**सम्पर्क-सूत्र-**

1. श्री प्रमोदजी महनोत, अध्यक्ष-98290-52094
2. श्री पूनमचन्दजी भण्डारी, मन्त्री, ए-14, जे.डी.ए. कॉलोनी, केलगिरी रोड़, आई हॉस्पिटल के सामने, मालवीय नगर, जयपुर (राज.), मो. : 77373-73479
3. श्री प्रेमचन्दजी बाफना, मोबाइल : 93145-02932
4. श्री संजीवजी कोठारी, मोबाइल : 9314965265

**आवागमन के साधन**-चातुर्मास स्थल जयपुर रेलवे स्टेशन से 12.5 किमी., गाँधीनगर स्टेशन से 5.9 किमी. एवं दुर्गापुरा स्टेशन से 5.7 किमी. की दूरी पर स्थित है। सिन्धी कैम्प बस स्टेण्ड से 10.6 किमी. एवं दुर्गापुरा बस स्टेण्ड से 3.8 किमी. की दूरी पर स्थित है। नज़दीकी रेलवे स्टेशन दुर्गापुरा एवं गाँधीनगर है।

**21. पाचोरा (महा.)**

❧ व्याख्यात्री महासती श्री पदमप्रभाजी म.सा.

❧ महासती श्री ज्योतिप्रभाजी म.सा.

❧ महासती श्री विदेहजी म.सा.

❧ महासती श्री विरक्ताश्रीजी म.सा. ठाणा 4

**चातुर्मास-स्थल-स्व.** सुभाषचन्दजी स्वरूपचन्दजी संघवी जैन स्थानक, यशोदा नगर, पो. पाचोरा-424201 जिला-जलगाँव (महा.), मोबाइल: 94231-86835, 82081-91470

**सम्पर्क-सूत्र-**

1. श्री रतनचन्दजी स्वरूपचन्दजी संघवी, अध्यक्ष, फोन: 02596-243391, 77099-99391, 94233-49391
2. श्री दिलीप लुणकरणजी पारख, मन्त्री, 18 संघवी कॉलोनी, भड़गाँव रोड़, पो. पाचोरा-424201, जिला-जलगाँव (महा.), मो. : 91751-96172, 87880-30147
3. श्री धर्मेन्द्रकुमारजी संचालालजी धाडीवाल, उपाध्यक्ष, मोबाइल:-94231-82808
4. श्री प्रसन्न कुमारजी प्रकाशचन्दजी संघवी, फोन:- 02596-245719, 94227-74578

**आवागमन के साधन**-रेलवे स्टेशन से चातुर्मास स्थल 1 किमी. एवं बस स्टेण्ड से भी 1 किमी. की दूरी पर स्थित है। नजदीकी रेलवे स्टेशन जलगाँव जंक्शन है जो मात्र 48 किमी की दूरी पर स्थित है।

**22. वर्द्धमाननगर, हिण्डौनसिटी (राज.)**

❧ व्याख्यात्री महासती श्री निष्ठाप्रभाजी म.सा.

❧ महासती श्री प्रतिष्ठाप्रभाजी म.सा.

❧ महासती श्री खुशबूश्रीजी म.सा. ठाणा 3

**चातुर्मास-स्थल-सामायिक-स्वाध्याय भवन,** रूप होटल के पीछे, जैन मन्दिर के पास, वर्द्धमान नगर, हिण्डौनसिटी-322230, जिला-करौली (राज.), मो.: 80008-31250, 89491-63562

**सम्पर्क-सूत्र-**

1. श्री भागचन्दजी जैन-अध्यक्ष, मो. : 98280-14806
2. श्री राजेशकुमारजी जैन, मन्त्री, मो. : 74129-31338, 81042-61123

3. डॉ. विमलचन्दजी जैन, क्यारदा हाउस, वर्द्धमान नगर, हिण्डौनसिटी-322230, जिला-करौली (राज.), मोबाइल:- 94147-89490, 99825-55100

4. श्री श्रेयांस कुमारजी जैन, मो. : 94143-94691, 98287-31748

**आवागमन के साधन**-चातुर्मास स्थल की रेलवे स्टेशन से 500 मीटर एवं बस स्टेण्ड से 3 किमी. दूरी है। जयपुर से बस द्वारा आने पर 500 मीटर की दूरी पर बस स्टेण्ड है। नजदीकी रेलवे स्टेशन हिण्डौनसिटी है।

**23. खामगाँव (महा.)**

❧ व्याख्यात्री महासती श्री शिक्षाश्री जी म.सा.

❧ महासती श्री सरोजश्रीजी म.सा.

❧ महासती श्री अरिहाश्रीजी म.सा.

❧ महासती श्री स्तुतिश्रीजी म.सा. ठाणा 4

**चातुर्मास-स्थल-वर्द्धमान जैन स्थानक,** समुद्री माता मंदिर के सामने, वासंतवाड़ी, पो. खामगाँव-444303, जिला-बुलढाणा (महा.), मो. : 83081-40708

**सम्पर्क-सूत्र-**

1. श्री राजेन्द्रजी शान्तिलालजी नाहर, अध्यक्ष- 94221-80268
2. श्री विजयजी बंसीलालजी रूणवाल, मन्त्री, प्राइम हार्ट्स, केशव नगर, घाटपुरी नाका, पो. खामगाँव-444303, जिला-बुलढाणा, 97666-65204
3. श्री नितिनजी रतनलालजी झांबड-88885-15458
4. श्री धरमचन्दजी सौभाग्यचन्दजी सुराणा-93711-66497

**आवागमन के साधन**-खामगाँव नजदीकी शेगाँव रेलवे स्टेशन से 16 किमी. एवं नांदुरा रेलवे स्टेशन से 18 किमी. की दूरी पर स्थित है। बस स्टेण्ड से चातुर्मास स्थल पास में ही है।

नोट-सभी श्रावक-श्राविकाओं से निवेदन है कि वे चातुर्मास काल में सन्त-सतियों के सान्निध्य का लाभ संघ द्वारा जारी दिशा-निर्देश एवं सरकार के द्वारा निर्धारित कोरोना मानदण्ड की पालना करते हुए लें।

-धनपत सेठियट,

महामन्त्री-अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

कृति की 2 प्रतियाँ अपेक्षित हैं



## नूतन साहित्य



श्री गौतमचन्द्र जैन

**ESSENCE OF PRAVACANASĀRA**-Dr. Jayantilal Jain, **Editor**-Dr. Priyadarshana Jain **Jointly Published By**-(1) Department of Jainology, University of Madras, Chennai-600005 (TND) M. 9840368851 Email : jainunom@gmail.com (2) International School for Jain Studies, D-28, Panchsheel Enclave, New Delhi-110017, M. 9818139000 Email : shuganjain1941@gmail.com (3) Research Foundation for Jainology, 15, Sugan House, Ramanuja Iyer Street, Sowcarpet, Chennai-600079 (TND) Ph. 044-25298082, **First Edition**-January, 2020, **Pages**-268, **Price**-Rs. 350/-

जैनाचार्य कुन्दकुन्द के द्वारा शौरसेनी प्राकृत भाषा में 'प्रवचनसार' नामक ग्रन्थ की रचना लगभग 2,000 वर्ष पूर्व की गई थी। प्रस्तुत 'Essence Of Pravacanasāra' आचार्य अमृतचन्द्र की 'तत्त्वप्रदीपिका' टीका को आधार पर लिखी गई है। प्रवचनसार का प्रमुख विषय ज्ञान, ज्ञाता और ज्ञेय है। प्रस्तुत रचना में लेखक ने प्रवचनसार ग्रन्थ की 275 गाथाओं का अंग्रेजी में अनुवाद एवं विवेचन किया है। अनुवाद सरल, सुबोध एवं स्पष्ट है। अनुवाद से पूर्व प्रत्येक गाथा का रोमन में रूपान्तरण किया गया है, ताकि जो पाठक प्राकृत भाषा नहीं जानता है, वह भी उसका पठन कर उच्चारण कर सके और समझ सके। प्रत्येक गाथा के पश्चात् Note (टिप्पणी) देकर विषय-वस्तु को स्पष्ट समझाया गया है जो सुगम एवं ज्ञानवर्धक है।

प्रस्तुत रचना तीन अध्यायों/विभागों में विभक्त है। प्रथम अध्याय (Revelation-Reality of Knowledge) इसमें सर्वप्रथम प्रवचनसार का अर्थ बताते हुए पंचपरमेष्ठी को नमस्कार किया गया है। तत्पश्चात् ज्ञाता, ज्ञेय और ज्ञान के तीन उपाय बताते गये हैं-सम्यग्ज्ञान, सम्यग्दर्शन और सम्यक्चारित्र। Essence of knowledge and Bliss को चार्ट के

माध्यम से सुन्दर तरीके से समझाया गया है। अन्तिम लक्ष्य सुख (प्रसन्नता) और इन्द्रियजनित सुख की तुलना करके विषय को स्पष्ट किया गया है। ज्ञान स्व और पर दोनों का प्रकाशक है। आत्मा के द्वारा होने वाला ज्ञान प्रत्यक्ष ज्ञान है और इन्द्रियों और मन की सहायता से होने वाला ज्ञान परोक्ष ज्ञान कहलाता है। शुभ कार्यों से पुण्य का बन्ध होता है और अशुभ कार्यों से पाप का बन्ध होता है। यह भी बताया है कि अज्ञानी जिन कर्मों को करोड़ों वर्ष तपस्या करके क्षय करता है उनको ज्ञानी पुरुष क्षणमात्र में नष्ट कर सकता है। इस प्रकार से प्रथम अध्याय में ज्ञान की महिमा, उसके भेद-प्रभेद और उसकी प्राप्ति के उपाय तथा भेद-विज्ञान के बारे में विस्तार से वर्णन है। चार घाती कर्म ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, मोहनीय और अन्तराय के क्षय होने पर केवलज्ञान और केवल दर्शन की प्राप्ति हो जाती है, वह त्रिकालदर्शी, सर्वज्ञ और सर्वदर्शी हो जाता है।

द्वितीय अध्याय में ज्ञेय तत्त्व प्रज्ञापना (Revelation-Reality of Knowable) का विवेचन है। धर्म, अधर्म, आकाश, काल, पुद्गल और जीव ये छह द्रव्य ज्ञेय हैं। त्रिपदी-उत्पाद, व्यय और ध्रौव्य का वर्णन करते हुए बताया गया है कि प्रत्येक पदार्थ में ये तीनों अवस्थाएँ होती हैं। वस्तु में गुण और पर्याय होते हैं। पर्याय बदलती रहती है, परन्तु वस्तु का मूल स्वरूप गुण नहीं बदलता है। आत्मा के मूल गुण ज्ञान एवं दर्शन हैं। सम्यग्दर्शन का विस्तृत वर्णन किया गया है।

पुस्तक के तृतीय भाग/अध्याय में सम्यक् चारित्र का विवेचन किया गया है। यह वर्णन चरणानुयोग सूचक चूलिका के आधार पर किया गया है। सम्यक् चारित्र और मोक्ष मार्ग का स्वरूप बताते हुये शुद्धोपयोग की चर्चा की गई है। मुमुक्षु साधक को प्रव्रज्या लेने से पूर्व अपने माता-पिता आदि कौटुम्बिक पुरुषों से आज्ञा लेनी आवश्यक होती है। श्रमण के गुणों का और व्रत एवं नियमों के पालन का उल्लेख किया गया है। श्रमण किसी प्रकार का परिग्रह नहीं रखता है। यथाजात, मुक्ताहार विहारी आदि का वर्णन किया गया है। पंच रत्न का वर्णन है। मोक्ष के अव्याबाध, अनन्त, अविनाशी सुख और

सर्वोत्कृष्ट अनन्तज्ञान, अनन्तदर्शन का वर्णन किया गया है जो आत्मा की कर्मरहित शुद्ध अवस्था होती है।

पुस्तक को 15 परिशिष्टों (Annexure) से समृद्ध एवं अधिक उपयोगी बना दिया गया है। परिशिष्ट में 47 नय, ज्ञान का अर्थ, ज्ञान के सम्बन्ध में पाश्चात्य विद्वानों के विचार, भारतीय दर्शनों में ज्ञान, ज्ञान और मुक्ति, साधुओं के बारहव्रत, संलेखना, ज्ञान और सुख में सम्बन्ध, ज्ञान और उपयोग और जैन श्रमण की जीवनचर्या आदि विषयों की महत्त्वपूर्ण जानकारी उपलब्ध कराई गई है।

इस प्रकार से प्रस्तुत रचना अंग्रेजी भाषा के माध्यम से प्रवचनसार ग्रन्थ के हार्द समझकर आत्मोत्थान करने में सहायक है। पुस्तक यथानाम तथागुण है।

**वर्षों जरूरी?**-लेखिका : डॉ. श्वेता जैन **प्रकाशक एवं पुस्तक प्राप्ति स्थल**-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, सुबोध बाँयज सीनियर सैकेण्डरी स्कूल के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.) फोन 0141-2575997, website ; www. jinwani.in, E-mail : sgpmandal@yahoo.in, **पुस्तक प्राप्ति के अन्य स्थल**-(1) श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, सामायिक-स्वाध्याय भवन, प्लॉट नं. 2, कुम्हार छात्रावास के सामने, नेहरू पार्क, सरदारपुरा, जोधपुर-342003 (राज.) मो. 94141-26279 (2) श्री प्रकाशचन्दजी सालेचा, जोधपुर, मो. 94610-26279 (3) श्री नवरत्नजी भंसाली, बेंगलोर, मो. 98441-58943 (4) श्री पदमचन्दजी कोठारी, अहमदाबाद, मो. 94293-03088 (5) श्री मनोजजी संचेती, जलगाँव, मो. 94225-91423, **प्रथम संस्करण**-2020, **पृष्ठ**-86 + 10 = 96, **मूल्य**-60/- (साठ रुपये मात्र) पोस्टेज खर्च अतिरिक्त।

प्रस्तुत रचना 'क्यों जरूरी?' लेखिका ने नवयुवक-युवतियों, बालकों तथा किशोरों को ध्यान में रखकर उनकी जिज्ञासाओं को शान्त करने एवं उनका समुचित समाधान कर सही दिशाबोध कराने के लक्ष्य से लिखी गई है।

वर्तमान में बालक-बालिकाएँ अधिक बुद्धिमान एवं तार्किक होने से तरह-तरह के प्रश्न करते हैं, जिनका समाधान होना आवश्यक है। समाधान प्राप्त होने पर ही वे सभी सिद्धान्त, शिक्षा एवं संस्कारों तथा धार्मिक मान्यताओं को स्वीकार करते हैं और फिर दृढ़तापूर्वक पालन भी करते हैं। प्रस्तुत रचना में लेखिका ने 12 महत्त्वपूर्ण विषयों को लेकर स्पष्ट किया है कि वे क्यों जरूरी हैं? यथा-जीवन में लक्ष्य होना क्यों जरूरी है, अच्छी आदतें रखना क्यों जरूरी है, सत्संगति, व्यसन मुक्त होना, धार्मिक होना, शाकाहारी होना और दान देना आदि क्यों जरूरी है? लेखिका ने प्रत्येक विषय को उदाहरणों के माध्यम से, संवाद के माध्यम से और ऐतिहासिक तथा वर्तमान कालीन प्रसिद्ध व्यक्तियों के माध्यम से स्पष्ट रूप से समझाया है। स्वास्थ्य सम्बन्धी और मनोवैज्ञानिक तरीके से मानव स्वभाव का विश्लेषण कर विषय-वस्तु को स्पष्ट एवं हृदयग्राही बनाया गया है। प्रत्येक विषय आसानी से पाठक की समझ में आता है और उसको जीवन में ग्रहण करने एवं पालन करने की इच्छा होती है। बच्चों में समझपूर्वक संस्कार डालने के लिए इस प्रकार की रचनाएँ अतीव उपयोगी और लाभदायक सिद्ध होंगी। कुछ विषयों की लाभ और हानियाँ बताकर भी स्पष्ट रूप से समझाने का सार्थक प्रयास किया गया है।

पुस्तक आर्ट पेपर पर रंगीन पृष्ठों में सचित्र मुद्रित है और बच्चों, किशोरों एवं युवकों को विशेष रूप से आकर्षित करती है। पुस्तक के अन्त में शब्दों के अंग्रेजी अर्थ भी दिये गये हैं।

पद्मविभूषण डॉ. डी. आर. मेहता सा. एवं पश्चिम बंगाल के प्रमुख प्रशासनिक अधिकारी श्री चंचलमलजी बच्छावत के पुस्तक पर प्रभावी विचार भी प्रकाशित हैं।

लेखिका की यह रचना बालकों एवं युवकों में सत्संस्कारों के निर्माण में पूर्णरूपेण सहायक सिद्ध होगी।

-पूर्व डी.एस.ओ., 70, 'जयगार', विश्वकर्मा नगर-द्वितीय, महाराजी फॉर्म, जयपुर (राजस्थान)

10 जुलाई 2020

जिनवाणी 81

ISSN 2249-2011

## समाचार विविधा

### पीपाड़शहर में पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. से पूज्य आचार्यप्रवर श्री रामलालजी म.सा. का मधुर मिलन

रत्नसंघ के अष्टम पट्टधर, आगमज्ञ, प्रवचन-प्रभाकर, सामायिक-शीलव्रत-रात्रिभोजन-त्याग, व्यसनमुक्ति के प्रबल प्रेरक, जिनशासन गौरव, परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा., महान् अध्यवसायी, सरस व्याख्यानी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. आदि ठाणा का पुण्यधरा पीपाड़ से 25 जून, 2020 को कोसाणा की ओर विहार हो गया था एवं दिनांक 30 जून, 2020 को कोसाणा में चातुर्मास हेतु मंगल प्रवेश हो गया है।

06 जून को समता संघ के नवम पट्टधर आचार्यप्रवर पूज्य श्री रामलालजी म.सा., उपाध्यायप्रवर श्री राजेशमुनिजी म.सा. आदि ठाणा-10 पीपाड़शहर में आचार्य पद ग्रहण करने के पश्चात् पहली बार पधारे। रत्नसंघ के अष्टम पट्टधर परम पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. सन्त मण्डल के साथ शरदचन्द्रिका मुणोत सामायिक-स्वाध्याय भवन में विराज रहे थे। वरिष्ठ सन्त महान् अध्यवसायी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. आदि सन्तवृन्द अगवानी हेतु पधारे। आचार्यश्री रामलालजी म.सा. शिष्य समुदाय के साथ दर्शन-वन्दन की भावना से स्वाध्याय भवन पधारे। दोनों महापुरुषों के परस्पर स्नेह मिलन का प्रसंग आह्लादकारी रहा। परस्पर सुख-साता की पृच्छा कर प्रत्येक सन्त का परिचय कराया गया। कोरोना के कारण विचरण विहार के मध्य आयी बाधाओं के प्रसंग सुनाये गये। दोपहर में उपाध्यायप्रवर एवं सन्तरत्न पूज्य गुरुदेव के संयमी जीवन के अनुभव से लाभान्वित होने की भावना से पुनः स्वाध्याय भवन पधारे। पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. ने चर्चा में फरमाया कि श्रावक प्रतिक्रमण में पाठों एवं विधि में जो अन्तर आ रहा है वह अच्छा रूप नहीं है। प्रतिक्रमण के पाठों में हमारी एकरूपता रही है।

08 जून को साधुमार्गी संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री गौतमचन्दजी रांका एवं अन्य पदाधिकारियों ने पूज्य गुरुदेव के दर्शन-वन्दन एवं सेवा-सन्निधि का लाभ लिया। रत्नसंघ के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सुमेरसिंहजी बोथरा एवं अन्य श्रावकगण ने रघुनाथ स्मृति भवन में विराजित आचार्यप्रवर श्री रामलालजी म.सा. आदि ठाणा के दर्शन-वन्दन का भी लाभ लिया। 11 जून को आचार्यप्रवर श्री रामलालजी म.सा. पीपाड़ से विहार करने के पूर्व समस्त सन्त-रत्नों के साथ दर्शन-वन्दन के लिए पधारे एवं मांगलिक श्रवण कर जोधपुर के लक्ष्य से विहार फरमाया। श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. आदि सन्तवृन्द कुछ दूर विहार में साथ पधारे। मिलन सौहार्दपूर्ण रहा।

पीपाड़ संघ की सेवाएँ सराहनीय रहीं। कोरोना संकट काल में थोड़ी सावधानी बरतते हुए सन्त प्रवर की सुरक्षा का ध्यान रखा गया। कोसाणा संघ के लोग चातुर्मास की भावना से पीपाड़ में पहले से पधार गये थे तथा विहार सेवा में पीपाड़ के साथ उनकी भी सेवाएँ सराहनीय रहीं।

-जगदीश जैन

### सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल द्वारा अध्यात्मयोगी आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा. की दीक्षा-शताब्दी के अवसर पर वेबिनार व्याख्यान-माला आयोजित

जयपुर-सामायिक-स्वाध्याय के प्रबल प्रेरक, इतिहास मार्तण्ड, युगमनीषी, अध्यात्मयोगी, परम पूज्य आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा. की दीक्षा-शताब्दी के अवसर पर 7 जून, 2020 को 'अध्यात्मयोगी आचार्यश्री हस्ती : प्रेरक साधनामय जीवन एवं दुर्लभ प्रसंग' विषय पर अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ की संस्था

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल जयपुर के द्वारा द्वितीय व्याख्यान यूट्यूब एवं साइनोविड.इन (YouTube & synovid.in) पर आयोजित किया गया। इस व्याख्यान-माला में प्रमुख वक्ता संघ संरक्षक श्रावक रत्न श्री विमलचन्दजी डागा, जयपुर ने पूज्य आचार्यप्रवर के प्रेरक साधनामय जीवन के प्रभावी दुर्लभ प्रसंगों की चर्चा की। धाराप्रवाह प्रस्तुति में उन्होंने आचार्यप्रवर के चारित्रिक एवं संयममय जीवन की विशेषताओं को प्रसंगों के माध्यम से रेखांकित किया। आचार्यप्रवर में अप्रमत्तता, क्षमाशीलता, गुणग्राहिता, आचारनिष्ठा, वचनसिद्धि, करुणाशीलता आदि अनेक गुण उनकी संयम साधना को तेजस्वी बना रहे थे।

द्वितीय प्रमुख वक्ता के रूप में पद्मभूषण, महावीर विकलांग सहायता समिति के संस्थापक, प्राणिमित्र डॉ. डी. आर. मेहता, जयपुर ने अपने जीवन पर पूज्य आचार्यप्रवर के प्रभाव को प्रस्तुत करते हुए उनकी उत्कट संयम-साधना एवं आचार्यों की गरिमाशाली परम्परा को उदाहरण सहित पुष्ट किया। पूज्य आचार्यप्रवर ने उन्हें संघसेवा, मानवसेवा एवं अहिंसा का कार्य करने की भोलावन दी थी। वेबिनार का संयोजन करते हुए डॉ. धर्मचन्दजी जैन ने पूज्य आचार्यप्रवर के साधनामय जीवन के गुणों का सजीव-चित्रण किया तथा वेबिनार मञ्च पर पधारे हुए महानुभावों का एवं यूट्यूब पर जुड़े सभी लोगों का हार्दिक स्वागत किया। उन्होंने वक्ताओं के वक्तव्यों का समाहार करते हुए पूज्य आचार्यप्रवर की साधना एवं समाज को मिली प्रेरणा पर संक्षेप में प्रकाश डाला। सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के कार्याध्यक्ष श्री विनयचन्दजी डागा, जयपुर ने 5 जुलाई, 2020 को होने वाली आगामी वेबिनार की सूचना दी।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के अध्यक्ष श्री चंचलमलजी बच्छावत, कोलकाता ने हार्दिक प्रसन्नता अभिव्यक्त की तथा अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के अध्यक्ष न्यायमूर्ति श्री प्रकाशजी टाटिया ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित करते हुए पूज्य आचार्यप्रवर के साधनामय विरल संस्मरण से सबको लाभान्वित किया। इस वेबिनार में 276 महानुभावों ने पञ्जीयन करवाया तथा यूट्यूब पर इसे 1200 से अधिक लोग देख चुके हैं।

प्रथम व्याख्यान का आयोजन जयपुर में सुबोध लॉ कॉलेज के भव्य सभागार में 23 फरवरी, 2020 को 'आचार्य हस्ती के चिन्तन में आधुनिक समस्याओं के समाधान' विषय पर हुआ था। जिसमें भारतीय दार्शनिक परिषद् के पूर्व अध्यक्ष प्रोफेसर एस.आर. भट्ट, दिल्ली एवं जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय के पूर्व प्रोफेसर श्री दयानन्दजी भार्गव, जयपुर मुख्य वक्ता थे।

-अशोक कुमार सेठ, मन्त्री

## अखिल भारतीय स्तर पर आगम 'आवश्यकसूत्र'

### पर लिखित परीक्षा 24 जनवरी, 2021 को

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के तत्त्वावधान में अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड द्वारा सामायिक-स्वाध्याय के प्रबल प्रेरक, इतिहास मार्तण्ड, युगमनीषी, अध्यात्म-योगी, परम पूज्य आचार्य भगवन्त 1008 श्री हस्तीमलजी म.सा. के दीक्षा शताब्दी वर्ष को पूरे भारत वर्ष में अटूट श्रद्धा भक्ति, सेवा एवं उत्साह के साथ मनाया जा रहा है।

रत्न संघ के प्रत्येक परिवार में कम से कम एक सदस्य प्रतिक्रमण को अर्थ सहित कण्ठस्थ करे ऐसा लक्ष्य संघ द्वारा लिया गया है। प्रतिक्रमण आवश्यक सूत्र आगम का एक अंग है। प्रत्येक सदस्य सूत्रों के अर्थ एवं भावार्थ को समझकर अपने क्रियात्मक पक्ष को मजबूत करें, एतदर्थ अखिल भारतीय स्तर पर 'आवश्यक सूत्र' आगम पर लिखित परीक्षा का आयोजन आचार्य भगवन्त के 111 वें जन्मदिवस के उपलक्ष्य में 24 जनवरी, 2021 को किया जा रहा है। सभी सदस्य दीक्षा शताब्दी वर्ष में आवश्यक सूत्र आगम का प्रतिदिन स्वाध्याय कर इस परीक्षा में अवश्य भाग लें। परीक्षा से सम्बन्धित विस्तृत जानकारी इस प्रकार है-



1. इस परीक्षा हेतु फार्म ऑनलाइन एवं ऑफलाइन दोनों तरह से उपलब्ध हैं। ऑनलाइन फार्म रत्नसंघ एप्प एवं वेबसाइट के माध्यम से भरे जा सकेंगे।
2. परीक्षा का समय 3.00 घण्टे रहेगा, जिसमें दो तरह के प्रश्न पत्र होंगे। प्रथम Objective Type के प्रश्न-पत्र का समय आधा घण्टा रहेगा, जिसमें परीक्षार्थियों को उत्तर कण्ठस्थ किए गए ज्ञान के आधार पर देना होगा। द्वितीय Subjective Type के प्रश्न पत्र का समय 2.5 घण्टा रहेगा, जिसमें आवश्यक सूत्र की पुस्तक साथ में लेकर प्रश्नों के उत्तर ढूँढ़कर लिखें जायेंगे।
3. परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक सूत्र पुस्तक का अर्द्धमूल्य 50/- रखा गया है। जो परीक्षार्थी इस परीक्षा में भाग लेने हेतु फार्म भरकर देंगे, उन्हें ही पुस्तक दी जायेंगी। डाक द्वारा पुस्तक मँगवाने पर उसका व्यय अलग से देय होगा।
4. जहाँ कम से कम 10 परीक्षार्थी होंगे वहाँ परीक्षा का केन्द्र रखा जायेगा।
5. प्रश्न-पत्र में आवश्यक सूत्र की पुस्तक में से कहीं से भी प्रश्न दिये जा सकते हैं।
6. आवश्यक सूत्र की परीक्षा में बैठने वाले सभी परीक्षार्थियों को प्रोत्साहन पुरस्कार दिया जायेगा।
7. आवश्यक सूत्र परीक्षा में वरीयता प्राप्त करने वाले प्रथम प्रतिभागी को 25000/-, द्वितीय-21000/-, तृतीय-15000/- का पुरस्कार प्रदान किया जायेगा। परीक्षा में 90 से अधिक अंक पाने वाले को 1000/- तथा 80 से 90 तक अंक पाने वाले को 500/- का प्रोत्साहन पुरस्कार दिया जायेगा।
8. 50 अंक लाने वाले को उत्तीर्ण माना जायेगा तथा सभी उत्तीर्ण परीक्षार्थियों को प्रशस्ति पत्र दिया जायेगा।
9. उक्त परीक्षा से सम्बन्धित अन्य कोई जानकारी एवं किसी भी प्रकार का उचित परिवर्तन होने पर उसकी सूचना जिनवाणी, रत्नम् एवं रत्नसंघ एप्प के माध्यम से दी जायेगी।

उक्त परीक्षा में देश भर के जैन-जैनेतर सदस्यों के साथ ही संघ एवं सहयोगी संस्थाओं के सभी पदाधिकारी, संस्कार केन्द्र के छात्र एवं अध्यापक, स्वाध्याय संघ के स्वाध्यायी, शिक्षण बोर्ड के परीक्षार्थी एवं केन्द्राधीक्षक भी अवश्य भाग लें ऐसा निवेदन है।

-धनपत सेठिया, महामन्त्री

## आचार्य हस्ती दीक्षा-शताब्दी वर्ष में रत्नसंघ एप्प के माध्यम से ऑनलाइन मासिक प्रतियोगिताओं का आयोजन

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर द्वारा सामायिक-स्वाध्याय के प्रबल प्रेरक, इतिहास मार्तण्ड, युगमनीषी, परमश्रद्धेय आचार्य भगवन्त पूज्य श्री 1008 श्री हस्तीमलजी म.सा. के दीक्षा-शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में रत्नसंघ मोबाइल एप्प के माध्यम से मासिक प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जा रहा है। प्रथम प्रतियोगिता 24 मई, 2020 को आयोजित हुई, जिसमें सम्पूर्ण भारत देश के 583 प्रतियोगियों ने भाग लेकर प्रश्नों के माध्यम से आचार्य हस्ती के जीवन चरित्र से परिचय एवं प्रेरणाएँ प्राप्त की। द्वितीय प्रयोगिता 21 जून, 2020 को आयोजित हुई, जिसमें देशभर के 634 प्रतियोगियों ने भाग लिया।

प्रतियोगिता सम्बन्धी नियम निम्न प्रकार से है-

1. यह प्रतियोगिता 'रत्नसंघ' मोबाइल एप्प के माध्यम से 'मासिक प्रतियोगिता' कॉलम में आयोजित होगी।
2. तृतीय मासिक प्रतियोगिता 26 जुलाई, 2020 को दोपहर 3 से 4 बजे तक रहेगी। इस प्रतियोगिता में परीक्षा प्रारम्भ करने के पश्चात् प्रतियोगी को 30 मिनट मिलेंगे। परन्तु 4.00 बजे के पश्चात् परीक्षा समाप्त हो

जायेंगी।

3. कुल 10 प्रतियोगिताएँ आयोजित की जायेंगी।
4. सभी प्रतियोगिताओं में बहुविकल्पात्मक 30 प्रश्न होंगे। उनमें प्रश्न आचार्यश्री हस्ती की जीवनी तथा सामायिक सूत्र एवं प्रतिक्रमण सूत्र से सम्बन्धित होंगे।
5. जीवनी सम्बन्धी प्रश्न 'नमो पुरिसवरगन्धहृत्थीणं' ग्रन्थ भाग-1 पर आधारित होंगे तथा सामायिक-प्रतिक्रमण सम्बन्धी प्रश्न श्रावक सामायिक-प्रतिक्रमण सूत्र (विधि एवं अर्थ सहित) की पुस्तक-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर से प्रकाशित में से दिये जायेंगे।
6. नमो पुरिसवरगन्धहृत्थीणं भाग-1 में जीवनी लगभग 314 पृष्ठों में दी गई है। इसे 10 हिस्सों में विभाजित करके अर्थात् प्रत्येक माह लगभग 30-32 पृष्ठ के मेटर में से निम्नानुसार प्रश्न पूछे जायेंगे-(1) प्रथम प्रतियोगिता पृष्ठ 1 से 31 (24 मई, 2020 को हो गई)। (2) द्वितीय प्रतियोगिता पृष्ठ 32 से 61 (21 जून, 2020 को हो गई)। (3) तृतीय प्रतियोगिता पृष्ठ 62 से 94 तक। (4) चतुर्थ प्रतियोगिता पृष्ठ 95 से 125 तक। (5) पञ्चम प्रतियोगिता पृष्ठ 126 से 156 तक। (6) षष्ठ प्रतियोगिता पृष्ठ 157 से 189 तक। (7) सप्तम प्रतियोगिता पृष्ठ 190 से 219 तक। (8) अष्टम प्रतियोगिता पृष्ठ 220 से 252 तक। (9) नवम प्रतियोगिता पृष्ठ 253 से 284 तक। (10) दशम प्रतियोगिता पृष्ठ 285 से 314 तक।
7. जिनके पास नमो पुरिसवरगन्धहृत्थीणं पुस्तक नहीं है, उनके लिए प्रतिमाह प्रतियोगिता के लिए निर्धारित मेटर रत्नसंघ एप्प पर 'समाचार एवं सूचना कॉलम में उपलब्ध कराया जायेगा, जिससे प्रतियोगी अपनी तैयारी आसानी से कर सकें।
8. प्रति दो प्रतियोगिताओं के औसत अंक के अनुसार प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वालों को क्रमशः रुपये 2,100/-, 1,500/- एवं 1,100/- के प्रोत्साहन पुरस्कार तथा दस प्रतिभागियों को रुपये 250/- का सान्त्वना पुरस्कार संघ की ओर से प्रदान किये जायेंगे।
9. सभी 10 प्रतियोगिताओं में भाग लेने वालों में से सर्वोच्च अंक प्राप्त करने वाले प्रतिभागियों को विशेष रूप से पुरस्कृत किया जायेगा।
10. एक बार प्रतियोगिता पूर्ण करने पर या बन्दकर देने पर वह प्रतियोगिता दुबारा नहीं दी सकेगी।
11. आवश्यक एवं उपयोगितानुसार नियमों में बदलाव करने का अधिकार अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड को है। बदलाव की सूचना एवं प्रतियोगिता सम्बन्धी अन्य सभी सूचना 'रत्नसंघ एप्प' के ऑनलाइन मासिक प्रतियोगिता विभाग अथवा समाचार विभाग में देखी जा सकेगी।

**सम्पर्क सूत्र**-अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, सामायिक-स्वाध्याय भवन, प्लॉट नं. 2, नेहरू पार्क, जोधपुर-342003 (राज.) फोन नं. 0291-2630290, मोबाइल 7610953735 (व्हाट्सअप नं.), ईमेल-sikshanboardjodhpur@gmail.com -सुभाष नाहर, सचिव

### आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड परीक्षा स्थगन सूचना

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर की 05 जुलाई, 2020 को होने वाली परीक्षा को वैश्विक महामारी कोरोना के कारण उत्पन्न हुए संकट को देखते हुए आगामी सूचना तक स्थगित किया गया है। आगामी परीक्षा की दिनांक आपको परीक्षा की तारीख से एक माह पूर्व सूचित कर दी जायेगी। जनवरी माह में होने वाली जैनागम स्तोक वारिधि (थोकड़ा) परीक्षा के स्थान पर इस बार आवश्यक सूत्र की परीक्षा 24 जनवरी,

2021 को आयोजित की जायेगी। इस हेतु जितनी पुस्तकों की आवश्यकता हो, हमें 76109-53735 पर व्हाट्सएप पर सूचित करें। परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक सूत्र पुस्तक का मूल्य 50/- रखा गया है।

-अशोक बाफना-संयोजक

## राष्ट्रीय स्तर पर निबन्ध प्रतियोगिता तृतीय का आयोजन

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री 1008 श्री हस्तीमलजी म.सा. का दीक्षा शताब्दी वर्ष एवं श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर के हीरक जयन्ती वर्ष के अवसर पर निबन्ध प्रतियोगिता-3, विषय : मुक्ति प्रदाता-स्वाध्याय निम्नाङ्कित बिन्दुओं के आधार पर स्वाध्याय संघ, जोधपुर के पते पर लिखकर भेजे-मुख्य बिन्दु-1. स्वाध्याय क्या ?-अर्थ एवं विवेचन, 2. स्वाध्याय से गुणदृष्टि, 3. स्वाध्याय से सम्यक् सोच, 4. स्वाध्याय से ज्ञान वृद्धि, 5. स्वाध्याय से दुःख मुक्ति और 6. स्वाध्याय परम-औषधि। उक्त निबन्ध मौलिक, तथ्यात्मक तथा 1500 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए। अन्तिम तिथि 31/08/2020

## आचार्य हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान, जयपुर

### (सिद्धान्त-शाला) में वर्ष 2020 के प्रवेश हेतु रजिस्ट्रेशन प्रारम्भ

(भारतवर्ष के विद्यार्थियों के लिए आध्यात्मिक-नैतिक अध्ययन/ संस्कारों के साथ उच्च अध्ययन का जयपुर शहर में स्वर्णिम अवसर)

आचार्य हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान, जयपुर (सिद्धान्त शाला) में वर्ष 2020 से प्रवेश प्राप्त करने वाले छात्रों के रजिस्ट्रेशन प्रारम्भ हो गये हैं। परम श्रद्धेय आचार्य प्रवर 1008 श्री हस्तीमल जी म.सा. की प्रेरणा से वर्ष 1973 में संस्थापित शिक्षण संस्थान में आध्यात्मिक शिक्षण के साथ-साथ उच्च अध्ययन की समुचित व्यवस्था है। साथ ही विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए कई कार्यक्रम भी संचालित किये जाते हैं। संस्थान में विद्यार्थियों के लिए उचित आवास-भोजन व्यवस्था के साथ कम्प्यूटर शिक्षण, अंग्रेजी स्पिकिंग क्लासेज, सेमिनार एवं मोटिवेशनल कक्षाएँ आयोजित होती रहती हैं।

शैक्षणिक अध्ययन के साथ संस्थान द्वारा निर्धारित धार्मिक पाठ्यक्रम का अध्ययन भी संस्थान में करवाया जाता है। जो छात्र अभिभावक संस्कारित रहकर जयपुर में उच्च अध्ययन करना चाहते हैं वे रजिस्ट्रेशन के लिए सम्पर्क करें। रजिस्ट्रेशन के लिए योग्यता-कक्षा 9वीं से उच्च कक्षा के कोई भी विद्यार्थी रजिस्ट्रेशन करवा सकते हैं। विद्यार्थी को धार्मिक एवं नैतिक संस्कारों को सीखने में रुचि हो। रजिस्ट्रेशन कैसे करें-संस्थान के दिये गये सम्पर्क सूत्र पर सम्पर्क करें अथवा <https://ratnasangh.com/> वेबसाइट से अथवा हमारे फेसबुक पेज [facebook.com/sidhantshala](https://www.facebook.com/sidhantshala) से फॉर्म डाउनलोड कर संस्थान के पते पर अथवा ईमेल [ahassanathan@gmail.com](mailto:ahassanathan@gmail.com) पर प्रेषित करें।

संस्थान में प्रवेश कैसे होगा-जुलाई अथवा अगस्त माह में संस्थान में प्रवेश के लिए प्राप्त आवेदनों में से चयनित छात्रों का इण्टरव्यू के आधार पर सलेक्शन किया जायेगा। अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क करें-दिलीप जैन 'प्राचार्य', ए-9 महावीर उद्यान पथ, बजाज नगर, जयपुर-302015, फोन न. 0141-2710946, 94614-56489, 79762-6596 Email:-[ahassanathan@gmail.com](mailto:ahassanathan@gmail.com)

## संक्षिप्त-समाचार

लुधियाना-महावीर इण्टरनेशनल के अन्तर्गत महावीर विकलांग हैल्प केन्द्र द्वारा विकलांग जरूरतमन्द लोगों को कृत्रिम अंग, तिपहिया साइकिल, व्हील चेयर, कान की सुनने की मशीन, चश्में, वैशाखी आदि मुफ्त में प्रदान किये जाते हैं। सम्पर्क सूत्र-वीर सुशील कुमार (महासचिव) 9878754061, वीर डॉ. रविन्द्र कोचर (संयोजक) 9815222221

-आन्ध्र जैन स्वाध्यायी संघ

**चेन्नई**—भगवान महावीर फाउण्डेशन द्वारा स्थापित 23वें महावीर अवार्ड्स के पुरस्कारों का चयन न्यायमूर्ति श्री एम. एन. वेंकटचलिया (पूर्व मुख्य न्यायधीश, भारत) की अध्यक्षता में प्रतिष्ठित चयन जूरी द्वारा 23 फरवरी, 2020 को बेंगलुरु में आयोजित बैठक में किया गया। प्रत्येक पुरस्कार विजेता को नकद रुपये 10 लाख, एक स्मृति चिह्न और एक प्रशस्ति-पत्र समारोह में प्रदान किए जाएंगे। यह पुरस्कार अलग-अलग चार श्रेणियों में दिए जाएंगे जो निम्न प्रकार से है—

1. **अहिंसा और शाकाहार**—अहिंसा और शाकाहार के क्षेत्र में यह पुरस्कार सन्त बाबा पालासिंह गोशाला, पंजाब को दिया जाएगा। गोशाला की स्थापना सन्त बाबा पालासिंह द्वारा की गई, जिसमें लगभग 16,000 जानवर वर्तमान में हैं, जिनमें ज्यादातर गाय और बैल हैं। संगठन के सेवाधर सड़क पर घायल जानवरों को गोशाला में आश्रय देते हैं और अच्छी देखभाल करते हैं। इनके द्वारा जानवरों हेतु एक अस्पताल एवं वर्तमान में श्री सुक्खासिंह और श्री गज्जनसिंह द्वारा गोशाला का संचालन किया जा रहा है।

2. **शिक्षा**—शिक्षा के क्षेत्र में मानव कल्याण ट्रस्ट, नवसारी-गुजरात, एनजीओ को जो पिछले 4 दशकों से विभिन्न विकलांग व्यक्तियों की विशेष शिक्षा और पुनर्वास के क्षेत्र में कार्य कर रहा है। ट्रस्ट की स्थापना स्वर्गीय महेशभाई कोठारी ने की थी। वर्तमान में आवासीय स्कूलों और पुनर्वास केन्द्रों द्वारा देखभाल और मुफ्त शिक्षा प्रदान करने वाली सेवाओं के माध्यम से 788 बच्चों को लाभान्वित किया जाता है, साथ ही 70 विकलांग बच्चों को व्यावसायिक प्रशिक्षण मिल रहा है।

3. **चिकित्सा**—चिकित्सा के क्षेत्र में पेड़न एण्ड पैलियेटिव केयर सोसायटी, केरल को जो निम्न और मध्यम आय वालों को समुदाय आधारित उपशामक देखभाल के लिए पहला धर्मार्थ न्यास है। यह दुनियाभर के डॉक्टर, नर्स, सहायक नर्सों और स्वयं सेवकों को 'केरल मॉडल' में प्रशिक्षित कर रहा है तथा असाध्य एवं दीर्घकालिक बीमारी वाले व्यक्तियों को प्रशामक देखभाल प्रदान करता है। 'फुट प्रिण्ट्स' नामक एक कार्यक्रम के माध्यम से यह लकवाग्रस्त और बेडरेस्ट रोगियों को पुनर्वास सहायता प्रदान करता है। अब तक सोसायटी द्वारा 47,000 से अधिक रोगियों को लाभान्वित किया गया है।

4. **सामुदायिक और सामाजिक सेवा**—सामुदायिक और सामाजिक सेवा के क्षेत्र में यह पुरस्कार सेवाधाम आश्रम, मध्यप्रदेश को दिया जाएगा जो पिछले 3 दशकों से बच्चों और पुराने मानसिक रूप से बीमार और निराश्रित लोगों के लिए अलग-अलग सेवाएँ कर आश्रय घर चला रहा है जहाँ वर्तमान में 600 निवासियों को आश्रय प्रदान किया जा रहा है। आश्रम में लगभग 500 से अधिक पीड़ित लोगों को नया जीवन, 2,000 लोगों को पुनर्वास, 200 नेत्र और स्वास्थ्य शिविर आदि कार्य किए हैं।

## बधाई



**जोधपुर**—श्रीमती रश्मिजी धर्मसहायिका श्री देवेन्द्रजी धारीवाल को सामाजिक कार्य और व्यापार उत्कृष्टता के लिए श्री नितिनजी गडकरी केन्द्रीय मन्त्री भारत सरकार ने अप्रैल, 2020 में देश की सर्वश्रेष्ठ 100 महिला उद्यमियों की सूची में सम्मिलित कर सम्मानित किया। आप गत 14 वर्षों से महिला सशक्तीकरण रोजगार उन्मुखी कार्यक्रम, पर्यावरण संरक्षण और प्रकृति की अनुकूल स्थिरता के लिए कार्यरत हैं।

—चंचलचन्द सिंघवी



**इन्दौर**—डॉ. अर्पणजी जैन 'अविचल' को कोरोना महामारी में मानवता की सेवा एवं साहित्य सकारात्मकता के अनुपम कार्य हेतु वर्ल्ड बुक ऑफ रिकॉर्ड्स, लन्दन द्वारा सम्मानित किया गया।

—एम. के. जैन 'मनुज'

**जयपुर**-शुभम् जैन सुपुत्र श्री विनोद कुमारजी जैन (कंजौली वाले) की बैंक ऑफ बड़ौदा में असिस्टेंट मैनेजर के पद पर नियुक्ति हुई।

## श्रद्धाञ्जलि

**जयपुर**-धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती रूपदेवीजी धर्मपत्नी संधारा साधक स्वर्गीय श्री भागचन्दजी पुत्रवधू स्वर्गीय श्री कुन्दनमलजी चौरड़िया (गीजगढ़ वाले) का 8 मई, 2020 को 93 वर्ष की आयु में समाधिपूर्वक देहावसान हो गया। आप रत्नसंघीय महासती श्री रतनकँवरजी म.सा. की सांसारिक भाभीजी थी। आप धर्मपरायण सेवाभावी, सहिष्णु, वाल्सल्यमूर्ति होने के साथ नियमित सामायिक, स्वाध्याय, प्रातः एवं सायंकालीन प्रतिक्रमण में संलग्न रहती थी। आप अपने पीछे सुपुत्र श्री राजेन्द्रजी, अशोक कुमारजी एवं देवर श्री प्रकाशचन्दजी चौरड़िया सहित भरा-पूरा परिवार छोड़कर गई है।



**मुम्बई**-सुश्रावक श्री पुष्पेन्द्रजी सेठ सुपुत्र श्री ज्ञानचन्दजी सेठ का 25 अप्रैल, 2020 को 57 वर्ष की अल्पायु में निधन हो गया। आपने आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के दोनों चातुर्मासों की सभी व्यवस्थाओं एवं विहार सेवा में अतुलनीय सेवा प्रदान की थी। आपके दादाश्री गोपीचन्दजी सेठ जयपुर के प्रमुख श्रावक एवं अनन्य गुरुभक्त थे। आपके पिताश्री ज्ञानचन्दजी-माताश्री श्रीमती गुलाबदेवीजी सेठ जो तपस्या के साथ-साथ धार्मिक गतिविधियों में अग्रणी रहे हैं एवं भ्राता श्री राजेन्द्रजी एवं देवेन्द्रजी सेठ भी संघ समर्पित श्रावक हैं जो युवक परिषद् में सक्रिय सेवा दे रहे हैं। आपकी धर्मसहायिका श्रीमती संगीताजी सेठ धार्मिकवृत्ति की एवं तपस्वी श्राविका हैं जो भोपालगढ़ के अनन्य गुरुभक्त सुश्रावक श्री सुमेरमलजी कांकरिया की सुपुत्री हैं जो भोपालगढ़ संघ के अध्यक्ष रहे हैं एवं भ्राता श्री मनोजजी कांकरिया जोधपुर में संघ की सभी संस्थाओं से जुड़े हैं और सेवा प्रदान कर रहे हैं। आप दो सुपुत्र सुमितजी एवं हर्षजी तथा एक सुपौत्र, एक सुपौत्री सहित भरा-पूरा परिवार छोड़कर गये हैं। -*अशोक कुमार सेठ, मन्त्री*



**चेन्नई**-धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री जतनराजजी सुपुत्र श्री चुन्नीलालजी बागमार (मेड़तासिटी वाले) का 7 जून, 2020 को 57 वर्ष की अल्पायु में आकस्मिक परलोकगमन हो गया। आप व्यवसाय-निपुण, व्यवहार-कुशल, मिलनसार और सेवाभावी थे। आपका पूरा परिवार रत्नसंघ, आचार्य भगवन्त श्री हस्तीमलजी म.सा., गुरुदेव श्री हीराचन्द्रजी म.सा. एवं सभी सन्त-सतीवृन्द के प्रति अनन्य श्रद्धावान है। 9 दिन पश्चात् आपके पिताश्री धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री चुन्नीलालजी बागमार सुपुत्र श्रीमान् हेमराजजी बागमार (मेड़तासिटी वाले) का 16 जून, 2020 को 90 वर्ष की आयु में संधारा सहित समाधिमरण हो गया। -*विजयराज राजकुमार, अमित कुमार बागमार, चेन्नई*



**चेन्नई**-धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री दिलीपकुमारजी सुपुत्र श्री धर्मेशजी लोढ़ा का 23 जून, 2020 को अल्पायु में देहावसान हो गया। आपने आचार्य हस्ती द्वारा प्रेरित सामायिक-स्वाध्याय को अपने जीवन में आत्मसात् किया था। व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबालालजी म.सा. आदि ठाणा के चेन्नई में पधारने पर आपकी अमूल्य सेवाएँ प्राप्त हुई तथा आप सहित समस्त परिवारजनों ने दर्शन-वन्दन, प्रवचन-श्रवण के साथ धर्म-ध्यान का लाभ प्राप्त किया। चेन्नई संघ के कार्यक्रमों में आपका एवं आपके परिवार का सक्रिय योगदान रहता है। लोढ़ा परिवार चेन्नई-नाडसर में संघ-सेवा में महनीय सेवाएँ प्रदान कर रहा है, साथ ही सदैव स्वधर्मी भाई-बहनों की सेवा के लिए तत्पर रहता है। -*धनपत्त सेठिया, महामन्त्री*



**गंगापुरसिटी-धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री रामदयालजी जैन (रिटायर्ड तहसीलदार फाजिलाबाद वाले) का 27 मई, 2020**



वर्ष की आयु में सागारी संधारे के साथ समाधिमरण हो गया। संघनिष्ठ, कर्तव्यनिष्ठ विविध गुणों से युक्त आपका जीवन संघ और समाज सेवा में समर्पित रहा। आप नियमित रूप से सामायिक-स्वाध्याय करने वाले चिन्तनशील श्रावक तथा सामायिक-स्वाध्याय के प्रति पूर्ण जागरूक थे। आपने रात्रिभोजन त्याग, जमीकन्द का त्याग, रात्रि चौविहार-त्याग, श्रावक के 12 व्रत, स्नान की मर्यादा एवं शीलव्रत आदि कई नियम एवं प्रत्याख्यान का जीवन पर्यन्त पालन किया। संस्कारी जीवन जीते हुये आपने परिवारजनों को भी धार्मिक संस्कार देने का महत्त्वपूर्ण दायित्व निभाया। आपने श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ में वरिष्ठ स्वाध्यायी के रूप में विभिन्न क्षेत्रों में सेवाएँ प्रदान करने के साथ पल्लीवाल शाखा के संयोजक के रूप में अपनी महनीय सेवाएँ प्रदान की। आपके सुपुत्र श्री त्रिलोकचन्दजी और श्री भागचन्दजी जैन स्वाध्यायी के रूप में अपनी सेवाएँ प्रदान कर रहे हैं। आपने पल्लीवाल-पोरवाल क्षेत्र में धार्मिक प्रचार-प्रसार एवं साहित्य प्रचार-प्रसार का कार्य भी लम्बे समय तक किया। आप सन्त-सतीवृन्द की विहार-सेवा का लाभ लेते थे। आप रत्नसंघीया व्याख्यात्री महासती श्री चारित्रलताजी म.सा. के सांसारिक ताऊजी (बड़े पापा) एवं महासती श्री गरिमाश्रीजी म.सा. के सांसारिक बड़े दादाजी थे। आपका सम्पूर्ण परिवार रत्नसंघ के प्रति समर्पित है।

-त्रिलोकचन्द जैन, गंगापुरसिटी

**इन्दौर-धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्रीअशोक कुमारजी सुपुत्र समाजसेवी स्व. श्री लङ्कालालजी जैन (मोहम्मदपुरा वाले) का**



10 मई, 2020 को 56 वर्ष की आयु में स्वर्गवास हो गया। आपकी देव-गुरु-धर्म के प्रति अटूट आस्था थी। सन्त-सतियों की सेवा में आप सदैव अग्रणी रहते थे। सम्पूर्ण परिवार धार्मिक संस्कारों से सुसंस्कारित होने से आपकी बचपन से ही धार्मिक एवं सामाजिक गतिविधियों में रुचि रही। आपने सन् 2010 में पोरवाल संघ, इन्दौर कार्यकारिणी सदस्य एवं सन् 2016 में उपमन्त्री पद पर रहते हुए अपने कर्तव्यों का निष्ठापूर्वक पालन किया। आप अपने पीछे पत्नी, तीन भाई, चार बहनें, दो पुत्र, एक पुत्री सहित भरा-पूरा परिवार छोड़कर गए हैं।

-हेमन्त जैन (कुशतला वाले), जयपुर

**जोधपुर-धर्मराधिका सुश्राविका श्रीमती दौलतकंवरजी मोदी धर्मसहायिका स्मृतिशेष श्री दिलमोहननाथजी मोदी का**



87 वर्ष की वय में 23 मई, 2020 को देवलोकगमन हो गया। आपका जीवन कर्तव्यपरायणता, कर्मठ सेवा भावना, वात्सल्य, विनम्रता एवं उदारता आदि सद्गुणों से ओतप्रोत था। वर्षीतपाराधना एवं नियमित सामायिक-स्वाध्याय, जप-तप करते सुदेव, सुगुरु एवं सुधर्म के प्रति पूर्णतः समर्पित रहते अपने सुपुत्रों श्री राजेशजी, श्री विनोदजी मोदी (सी.ए.) एवं सुपुत्रियाँ श्रीमती नीलिमाजी भण्डारी एवं श्रीमती कल्पनाजी भंसाली परिवार को सुसंस्कार प्रदान किये।

-देवेन्द्रनाथ मोदी, जोधपुर

**जयपुर-धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती सरोजजी धर्मपत्नी श्री हेमचन्द्रजी रांका का 28 अप्रैल, 2020 को 87 वर्ष की**



आयु में देहावसान हो गया। आपकी धर्म के प्रति प्रगाढ़ श्रद्धा थी। आपको सामायिक-प्रतिक्रमण, भजन, श्लोक, बोल, लावणियाँ आदि कण्ठस्थ थे। प्रत्येक वर्ष पर्युषणपर्व में अठाई, नौ, ग्यारह, पन्द्रह की तपस्या करती रहती थीं। आपको स्थानकवासी समाज द्वारा रजतपत्र अनुमोदनार्थ प्रदान कर सम्मानित किया गया। आपने सन् 1972 में चातुर्मास के दौरान मासखमण की तपस्या की। आप प्रत्येक वर्ष नवपद की ओली दो बार निरन्तर करती थी। आपने जवाहर नगर महावीर साधना केन्द्र जयपुर पर आसोज शुक्ला सप्तमी सन् 1991 में ओलीजी प्रारम्भ करवायी जो निरन्तर गतिमान है। आपने हर पखवाड़े की पाँचों तिथियों

को हरी का पूर्णतया त्याग, जमीकन्द का आजीवन त्याग तथा नवकारसी, कई वर्षों से एक समय भोजन ग्रहण करना आदि नियम ग्रहण कर रखे थे। आप हर रोग को बड़ी सहजता से सहन करती थी। अन्त समय में मंगल पाठ सुनकर अन्तिम श्वास ली तथा अपने पीछे भरा-पूरा परिवार छोड़कर गई है।  
-विजय जैन, जयपुर

**बेंगलोर**-धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री कमलकिशोरजी रांका का 19 जून, 2020 को निधन हो गया। आप रत्नसंघ के सुज्ञ, समर्पित, श्रद्धावान और धर्मनिष्ठ श्रावक थे। आप सन्त-सतीवृन्द की सेवा-भक्ति में तथा संघ-सेवा में सदैव तत्पर रहते थे। आपका जीवन प्रारम्भ से श्रीसंघ सेवा के लिए समर्पित रहा था। आपने आचार्य श्री हस्ती द्वारा प्रेरित सामायिक-स्वाध्याय को अपने जीवन में आत्मसात् किया था। व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवतीजी म.सा. आदि ठाणा के बेंगलोर चातुर्मास में आपकी अमूल्य सेवाएँ प्राप्त हुई थी। व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबालाजी म.सा. आदि ठाणा के बेंगलोर पधारने पर आप सहित समस्त परिवारजनों ने दर्शन-वन्दन, प्रवचन-श्रवण के साथ धर्म-ध्यान का लाभ प्राप्त किया।  
-धन्यत सेठिया, महामन्त्री

**सवाईमाधोपुर**-धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री अमोलकचन्दजी जैन (जरखोदा वाले) का 88 वर्ष की आयु में 29 मार्च, 2020 को स्वर्गवास हो गया। आप देव, गुरु, धर्म एवं संघ के प्रति समर्पित, निष्ठावान, श्रद्धावान, अनन्य गुरुभक्त, वरिष्ठ स्वाध्यायी एवं धर्मनिष्ठ थे। सूर्योदय से सूर्यास्त तक होने वाली प्रत्येक धर्मचर्या प्रातःकाल प्रार्थना, 8-10 सामायिक, प्रतिदिन धर्मस्थान में स्वाध्याय एवं सांयकालीन प्रतिक्रमण नियमित जीवनचर्या तो थी ही, वाणी का माधुर्य सैकड़ों भजनों से, प्रेरक-बोध कथा, कहानियों से सभी को जोड़े रखते थे और धर्म की प्रेरणा करते थे। 33 वर्ष तक आपने शीलव्रत का पालन और 30 वर्ष तक स्वाध्यायी के रूप में सेवाएँ प्रदान कीं। आपका भरा-पूरा परिवार धर्मध्यान से जुड़कर संघ की सेवा कर रहा है।  
-स्मेश कुमार जैन, सवाईमाधोपुर



### सावज्जं पच्चक्खामि

(तर्ज :: हर दिल जो प्यार करेगा.....)

महासती श्री पदमप्रभाजी म.सा.

सावज्जं पच्चक्खामि न करेमि कारवेमि,  
निंदामि गरिहामि तस्स भंते! वोसिरामि।

कर चुका जो भूल उसको फिर न करूँगा,  
समणोऽहं याद रखूँगा, बनकर के वीर सहूँगा-॥  
निश्चय महावीर बनूँगा....॥

घटना पर दुर्घटना नहीं, क्रिया पर प्रतिक्रिया नहीं,  
साहिज्जे दिण्णे चिन्तन हो, सहइ खमइ धर्म यही।

कोई और नहीं है कोई गैर नहीं है,  
मिस्ती में भूएसु मेरा जीवन यही है॥

भुज्जो भुज्जो खामेमि से वैर टलेगा.....

क्या कब कैसे किसने किया, विकथा न करना है,  
किं मे कडं किं च मे सेसं, हिसाब अपना लगाना है।

परचर्चा पर चिन्तन पर की न गुलामी,  
गुणदर्शन गुण वर्णन, साधक की निशानी।  
दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ से फिर वो बचेगा....  
अधिकार सबका मुझ पर है,  
मेरा कोई अधिकार नहीं,  
लहुभूय बनकर रहना है, गुरुता का कोई भार नहीं  
सब मेरे मैं सबकी अपनापन सभी से  
प्रीति बढ़ती जाए, शिकायत न किसी से  
आत्मवत् भूतेषु जयनाद गूजेगा.....  
वस्तु अवस्था परिस्थिति, दोष किसी का न होता है  
लाभ-अलाभ या हो अपमान सन्तुलन समझौता है  
सहना ही सही है गुरु शिक्षा यही है  
गुरुकृपा से बढ़कर, कोई निधि नहीं है  
गुरु की मेहर से ही, मोक्ष मिलेगा.....

-संकलित

## ❁ साभार-प्राप्ति-स्वीकार ❁

<p><b>4000/-सत्साहित्य सदस्यता</b> <b>(अधिकतम 20 वर्ष) हेतु प्रत्येक</b> 808 जिनवाणी भवन, पाँच्यावाला-जयपुर (राज.)</p> <p><b>1000/-जिनवाणी पत्रिका की आजीवन</b> <b>(अधिकतम 20 वर्ष) सदस्यता हेतु प्रत्येक</b> क्रम संख्या 16145 से 16149 तक कुल 5 सदस्य बने <b>'जिनवाणी' मासिक पत्रिका हेतु साभार प्राप्त</b></p> <p>100000/- अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ एवं सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के पूर्व अध्यक्ष श्री पी. शिखरमलजी सुराणा, चेन्नई की ओर से जिनवाणी प्रकाशन योजना में सप्रेम।</p> <p>100000/- श्री गौतमचन्दजी जैन (अलीगढ़-रामपुरा वाले), जयपुर, पूर्व जिला रसद अधिकारी स्वयं के जन्मदिवस 1 जून, 2020 के उपलक्ष्य में जिनवाणी प्रकाशन योजना में सप्रेम।</p> <p>25000/- श्री प्रकाशचन्दजी डागा, जयपुर की ओर से सप्रेम भेंट।</p> <p>22000/- श्री महावीरचन्दजी, अरूणाजी, मनोजजी, कमलेशजी बाफना, सूरत की ओर से जिनवाणी पत्रिका में प्रकाशित बाल-स्तम्भ पुरस्कार वर्ष 2020 हेतु अर्थसहयोग।</p> <p>11000/- श्री त्रिलोकचन्दजी, भागचन्दजी, अशोक कुमारजी जैन (फाजिलाबाद वाले), गंगपुरसिटी, पूज्य पिताजी श्री रामदयालजी जैन (सेवानिवृत्त तहसीलदार) का 27 मई, 2020 को संधारापूर्वक मरण होने पर उनकी पुण्य स्मृति में।</p> <p>11000/- श्री ज्ञानचन्दजी, गुलाबदेवीजी सेठ, जयपुर, सुपुत्र श्री पुष्पेन्द्रजी सेठ का 25 अप्रैल, 2020 को मुम्बई में असामयिक निधन हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में।</p> <p>11000/- श्री पी.शान्तिलालजी, सुरेशजी, मुकेशजी, नमनजी गुंदेचा, हैदराबाद, श्री पी. शान्तिलालजी गुंदेचा की 49वीं वैवाहिक सालगिरह के उपलक्ष्य में।</p>	<p>5100/- श्रीमती दाखाबाईजी, हिमांशुजी, शुभांशुजी जैन अलीगढ़-रामपुरा, श्रीमती उर्मिलाजी-श्री सोहनलालजी जैन की 24 जून, 2020 को शादी की 29वीं सालगिरह के उपलक्ष्य में।</p> <p>5000/- श्री हेमचन्दजी रांका, जयपुर, धर्मसहायिका श्रीमती सरोजजी रांका का 28 अप्रैल 2020 को देहावसान हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में।</p> <p>4000/- मैसर्स एस. आर. भण्डारी चेरिटेबल ट्रस्ट, ट्रिपलीकेन-चेन्नई, श्री सम्पतराजजी भण्डारी के दामाद एवं श्रीमती निर्मलाजी के धर्मसहायक और प्रेक्षाजी के पिताजी स्व. श्री प्रदीपजी चोरड़िया की प्रथम पुण्य स्मृति में।</p> <p>2100/- श्रीमती आयचुकीदेवीजी धर्मपत्नी श्री माणकचन्द जी लोढ़ा, नाडसर, सौ.कां. मोनिकाजी (सुपौत्री) संग चि. अरिहन्तजी (सुपुत्र महावीरजी-कंचनदेवीजी) एवं चि. शुभमजी (पड़पौत्र) सुपुत्र श्री रिखबराजजी-दिलखुशदेवीजी सुपौत्र प्रकाशजी-पुष्पाजी लोढ़ा संग सौ.कां. खुशबूजी के शुभ विवाहोत्सव के उपलक्ष्य में।</p> <p>2100/- श्री महावीरप्रसादजी, गौतमजी, संदीपजी जैन, कोटा, पूजनीया माताजी स्व. श्रीमती गुलाबबाईजी धर्मसहायिका श्री फूलचन्दजी जैन की प्रथम पुण्य स्मृति के उपलक्ष्य में।</p> <p>1111/- श्री हुकमीचन्दजी, किशोर कुमारजी डाकलिया, जोधपुर-चेन्नई, सौ. कोमलजी सुपौत्री श्री हुकमीचन्दजी सुपुत्र श्री किशोरकुमारजी डाकलिया का शुभविवाह चि. महेन्द्रजी सुपुत्र श्री प्रमोदजी ललवाणी के संग 15 जनवरी, 2020 को सुसम्पन्न होने पर।</p> <p>1100/- श्रीमती आशाजी अग्रवाल, त्रिवेणीनगर-जयपुर, उपनिदेशक पद से सेवानिवृत्त होने पर।</p> <p>1100/- श्री भारतभूषणजी, ताराचन्दजी, नरेन्द्र कुमारजी, जयप्रकाशजी, सुनीलजी जैन, अलवर, पूजनीया माताजी श्रीमती विद्यादेवीजी जैन का स्वर्गमन हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में।</p> <p>1100/- श्रीमती आयचुकीदेवीजी धर्मपत्नी श्री माणकचन्द जी लोढ़ा, नाडसर, चि. विकासजी संग निशाजी सुपुत्र श्री गौतमजी-लीलाबाईजी खिवसर के</p>
-----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------	-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------



- शुभविवाह के उपलक्ष्य में।
- 1100/- श्री राजेन्द्रजी, सौरभजी, हर्षजी चोरड़िया (जोधपुर वाले), बेंगलोर की ओर से सप्रेम भेंट।
- 1100/- श्री गौतमचन्द्रजी, पारसजी, मुई-सवाईमाधोपुर, श्रीमती सोहनदेवीजी की पुण्य स्मृति में।
- 1100/- श्री महावीर प्रसादजी, डॉ. लोकेन्द्रजी, सवाईमाधोपुर, चि. मयंक संग सौ. पूजा के शुभविवाह के उपलक्ष्य में।
- 1100/- श्री नरेन्द्र कुमारजी जैन (चौरू वाले), दिल्ली, चि. परिचयजी जैन के शुभविवाह के उपलक्ष्य में।
- 1100/- श्री रमेशचन्द्रजी, सुरेशचन्द्रजी जैन, सवाईमाधोपुर, पूज्य पिताजी श्री अमोलकचन्द्रजी जैन की पुण्य स्मृति में।
- 1100/- श्री राजेन्द्र कुमारजी, विमल कुमारजी, पदमचन्द्रजी, अंकित कुमारजी, आशीष कुमारजी (मोहम्मदपुरा वाले), इन्दौर, श्री अशोक कुमारजी सुपुत्र स्व. श्री लङ्कालालजी जैन का 10 मई, 2020 को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्यस्मृति में।
- 1100/- श्री मदनलालजी, विमलकुमारजी जैन (करेला वाले), सवाईमाधोपुर, चि. आशीष कुमारजी जैन के शुभविवाह के उपलक्ष्य में सप्रेम।
- 1100/- श्री गणपतलालजी, पप्पूलालजी, सुरेशजी, अजयजी, मनोजजी, रोहितजी जैन, कोटा, अपने भ्राता श्री अशोकजी जैन (मोहम्मदपुरा वाले) का 10 मई, 2020 को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में।
- 1100/- श्री राजेशजी, विनोदजी-श्रीमती रेणुकाजी एवं श्री केदारजी मोदी, जोधपुर, श्रीमती दौलतकँवरजी मोदी धर्मसहायिका स्व. श्री दिलमोहननाथजी मोदी का 23 मई, 2020 को स्वर्गारोहण हो जाने के प्रसंग पर।

### सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल हेतु साभार प्राप्त

- 1100/- श्रीमती अंजूजी-मनोजजी कोठारी, जयपुर की ओर से।

### आगामी पर्व तिथि

श्रावण कृष्णा 14, रविवार	19.07.2020	चतुर्दशी, पक्खी
श्रावण कृष्णा अमावस, सोमवार	20.07.2020	आचार्य पूज्य श्री शोभाचन्द्रजी म.सा. का 94वाँ स्मृति-दिवस
श्रावण शुक्ला 8, सोमवार	27.07.2020	अष्टमी
श्रावण शुक्ला 14, रविवार	02.08.2020	चतुर्दशी
श्रावण शुक्ला पूर्णिमा, सोमवार	03.08.2020	पक्खी
भाद्रपद कृष्णा 8, बुधवार	12.08.2020	अष्टमी
भाद्रपद कृष्णा 11, शनिवार	15.08.2020	पर्युषण पर्व प्रारम्भ

### जिनवाणी का आगामी विशेषाङ्क 'जैन जीवनशैली' विषय पर

'जिनवाणी' हिन्दी मासिक पत्रिका के अहिंसा, कर्मसिद्धान्त, सम्यग्दर्शन, प्रतिक्रमण, गुरु गरिमा और श्रमण-जीवन, आचार्यपद आदि विभिन्न विशेषाङ्क लोकप्रिय रहे हैं। अब शीघ्र ही 'जैन जीवनशैली विशेषाङ्क' प्रकाशित करने की योजना है। विशेषाङ्क से सम्बद्ध विषयों पर आलेख, कविताएँ, प्रेरक प्रसङ्ग आदि आमन्त्रित हैं। आशा है सुधी लेखक इसमें सहर्ष सहयोग प्रदान करेंगे।

उदारमना, धर्मनिष्ठ महानुभावों से इसके प्रकाशन में अर्थसहयोग कर श्रुतसेवा करने हेतु निवेदन है। कोरोना काल में 'जैन जीवनशैली विशेषाङ्क' एकदम प्रासङ्गिक रहेगा।

-डॉ. धर्मचन्द्र जैन, सम्पादक

गजेन्द्र निधि

# आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

उज्ज्वल भविष्य की ओर एक कदम.....

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

Acharya Hasti Meghavi Chatravritti Yojna Has Successfully Completed 13 Years And Contributed Scholarship To Nearly 4500 Students. Many Of The Students Have Become Graduates, Doctors, Software-Professionals, Engineers And Businessmen. We Look Forward To Your Valuable Contribution Towards This Noble Cause And Continue In Our Endeavour To Provide Education And Spirituals Knowledge Towards A Better Future For The Students. Please Donate For This Noble Cause And Make This Scholarship Programme More Successful. We Have Launched Membership Plans For Donors.

**We Have Launched Membership Plans For Donors**

MEMBERSHIP PLAN (ONE YEAR)		
SILVER MEMBER RS.50000	GOLD MEMBER RS.75000	PLATINUM MEMBER RS.100000
DIAMOND MEMBER RS.200000		KOHINOOR MEMBER RS.500000

**Note - Your Name Will Be Published In Jinwani Every Month For One Year.**

The Fund Acknowledges Donation From Rs.3000/- Onwards. For Scholarship Fund Details Please Contact M.Harish Kavard, Chennai (+91 95001 14455)

The Bank A/c Details is as follows - Bank Name & Address - AXIS BANK Anna Salai, Chennai (TN)

A/c Name- Gajendra Nidhi Acharya Hasti Scholarship Fund IFSC Code - UTIB0000168

A/c No. 168010100120722

PAN No. - AAATG1995J

Note- Donation to Gajendra Nidhi are exempted u/s 80G of Income Tax Act 1961.

छात्रवृत्ति योजना में सदस्यता अभियान के सदस्य बनकर योजना की निरन्तरता को बनाये रखने में अपना अमूल्य योगदान कर पूष्यार्जन किया, ऐसे संघनिष्ठ, श्रेष्ठियों एवं अर्थ सहयोग एकत्रित करने करने वालों के नाम की सूची -

KOHINOOR MEMBER (RS.500000)	PLATINUM MEMBER (RS.100000)
श्रीमान् मोफतराज सा मुणोत, मुम्बई। श्रीमान् राजीव सा नीता जी डागा, झुल्टन। सुवारल श्री हरीश सा क्वाड, चैन्नई।	श्रीमान् दलीचंद बाघमार एण्ड संस, चैन्नई। श्रीमान् दलीचंद सा सुरेश सा क्वाड, पूनामल्लई। श्रीमान् राजेश सा विमल सा पवन सा बोहरा, चैन्नई। श्रीमान् प्रेम सा क्वाड, चैन्नई।
SILVER MEMBER (RS.50000)	श्रीमान् अम्बालाल सा बसंतदेवी जी कर्नावट, चैन्नई। श्रीमान् सम्यतराज सा राजकंवर जी मंडारी, ट्रिपलीकेन-चैन्नई। कन्हैयालाल विमलादेवी हिरण चैरिटेबल ट्रस्ट, अहमदाबाद।
श्रीमान् गुप्त सहयोगी, चैन्नई। श्रीमान् गुप्त सहयोगी, चैन्नई। श्रीमति गुप्त सहयोगी, चैन्नई। श्रीमान् महावीर सोहनलालजी बोधरा जलगांव (मोपालगढ़) श्रीमान् सोहनराज जी बाघमार, कोयम्बटूर। कन्हैयालाल विमलादेवी हिरण चैरिटेबल ट्रस्ट, अहमदाबाद। श्रीमान् विजयकुमार जी मुकेश जी विनीत जी गोठी, मदनगंज-किशनगढ़।	

सहयोग के लिए चैक या ड्राफ्ट कार्यालय के इस पते पर भेजें- M.Harish Kavard - No.5, Car Street, Poonamallee, CHENNAI-56

छात्रवृत्ति योजना से संबंधित जानकारी के लिए संपर्क करें- मनीष जैन, चैन्नई (+91 95430 68382)

**‘छोटा सा चिन्तन परियह को हल्का करने का, लाम बड़ा गुरु भाइयों को शिक्षा में सहयोग करने का’**

# बाल-जिनवाणी

प्रतिमाह बाल-जिनवाणी के अंक पर आधारित प्रश्नोत्तरी में भाग लेने वाले श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को सुगनचन्द प्रेमकँवर रांका चेरिटेबल ट्रस्ट-अजमेर द्वारा श्री माणकचन्दजी, राजेन्द्र कुमारजी, सुनीलकुमारजी, नीरजकुमारजी, पंकजकुमारजी, रौनककुमारजी, नमनजी, सम्यक्जी, क्षितिजजी रांका, अजमेर की ओर से पुरस्कृत किया जा रहा है। पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार-600 रुपये, द्वितीय पुरस्कार-400 रुपये, तृतीय पुरस्कार- 300 रुपये तथा 200 रुपये के तीन सान्त्वना पुरस्कार। पुरस्कार राशि सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर द्वारा भिजवाई जाती है।

## सफलता चाहिए तो जल्दबाजी न करें

कुमारी मीनाक्षी चौपड़ा

कौन व्यक्ति होगा जो जीवन में सफल नहीं होना चाहता, पर बहुत कम लोग आज ऐसे हैं जो सफलता के लिए इन्तज़ार करते हैं। उसे पाने की हर किसी को बेकरारी है। हर कोई उतावला हो उठा है। आज सफलता का मायना ही बदला हुआ नज़र आता है। मापदण्ड दौलत के तराजू पर होता है। जो जितना धनी, वह उतना अपने क्षेत्र में सफल समझा जाता है। यही वजह है कि हर कोई सफलता का आनन्द चखने के लिए पागल है। अवसरवादिता के युग में सफलता प्राप्ति के तरीके बदल गए हैं। बिना कुछ किए सफलता मिलती जा रही है। इसे तो हम भाग्य का चक्कर कहेंगे। यह सफलता थोपी हुई सफलता कही जाएगी, क्योंकि कब खिसक जाए, कहा नहीं जा सकता। सफलता की वास्तविकता तो तब कही जाएगी जब सफलता परिश्रम द्वारा हासिल की गई हो।

परीक्षा में हजारों विद्यार्थी बैठते हैं। जो उत्तीर्ण होता है वह सफल और अनुत्तीर्ण को असफल समझा जाता है। अब यदि उत्तीर्ण हुए विद्यार्थी ने नकल की हो और पैसे के द्वारा सफलता हासिल की हो तो ऐसे विद्यार्थी का उत्तीर्ण होना सफलता कदापि नहीं। उसे सफल विद्यार्थी नहीं कह सकते। यहाँ सफलता का अर्थ हुआ उद्देश्य की पूर्ति नैतिक ढंग से होनी चाहिए।

सफलता जिस ताले में बन्द रहती है, वह दो चाबियों से खुलता है, एक परिश्रम और दूसरा सत्प्रयास। कोई ताला यदि बिना चाबी के खोला गया तो आगे उपयोगी नहीं रहेगा। ठीक ऐसे ही यदि सफलता थोपी हुई है अथवा मुफ्त में मिली है तो वह टिक नहीं सकती, कभी भी छिन सकती है। संयोगवश जो हुआ, वह सदैव हो, कोई गारण्टी नहीं। निरन्तर प्रयास और परिश्रम से प्राप्त हुई सफलता से सन्तोष और सुख की प्राप्ति होती है। अनीति का साम्राज्य देर तक नहीं टिकता। धर्म-अधर्म की लड़ाई में अन्तिम जीत हमेशा धर्म की होती है। अतः यह अत्यन्त जरूरी है कि सफलता प्राप्ति का मार्ग नैतिकता और धर्म की परिधि में भले ही टेढ़ा-मेढ़ा क्यों न हो, पर परिश्रम और प्रयास का प्रतिफल है।

नैतिक पतन, चरित्र हनन और ईमान बेचकर कार्य सिद्धि सफलता नहीं मानी जा सकती, पर आज सफलता हासिल करने के लिए हर कोई शॉर्टकट वाला मार्ग पसन्द कर रहा है। जल्दबाजी में हम नैतिकता भूल जाते हैं। समझौता करना बुरा नहीं। बुराई है अवसरवादिता की आड़ में स्वार्थ सिद्धि के लिए किया गया समझौता, सिर्फ स्वयं के सुख के लिए सोचना और उसी के अनुसार कार्य करना और सम्बन्ध बनाना। सिद्धान्तहीन ज़िन्दगी का कोई महत्त्व नहीं।

-सुपुत्री श्री प्रकाशचन्दजी चौपड़ा, 4/265,  
लाखन कोटड़ी, अजमेर (राजस्थान)

## जीवन में सद्गुण अपनाओ

श्री मोहन कोठारी 'विनय'

जीवन में सद्गुण अपनाओ, यह महापुरुषों का कहना है, कटु वचन सुनाए गए कोई, उन्हें समभावों से सहना है।।

जीवन में सद्गुण अपनाओ.....।।टेर।।

हो विनय हमारे जीवन में, जीवन आनन्दमय बन जाता, वो इन्सान बड़ा ही महान उसे, जो कड़वे घूँट भी पी जाता। बस सहनशील बन जाएँ हम, अपनी गरिमा में रहना है,

जीवन में सद्गुण अपनाओ.....।।1।।

हम बात करें जब औरों से, विनय, विवेक का ध्यान रहे, पहुँचाएँ कभी न ठेस उन्हें, इसका भी हमको भान रहे। जैसा भी अवसर हो सम्मुख, नहीं अधीर हमें बनना है,

जीवन में सद्गुण अपनाओ.....।।2।।

मिले धन, वैभव, ऐश्वर्य कभी, यह पुण्यवानी का जोर अरे, औरों की सेवा में देकर, अन्तर में होवे हर्ष हमें। हम दान करें इन हाथों से, ऐसा चिन्तन हमें करना है,

जीवन में सद्गुण अपनाओ.....।।3।।

यह हृदय हमारा पावन हो, औरों का भी ध्यान धरें, दुःखियों के आँसू पोंछ सकें, उनका भी हम सहयोग करें। रहे दया भावना घट अपने, बस पुण्य से झोली भरना है,

जीवन में सद्गुण अपनाओ.....।।4।।

जनता साइरी सेन्टर, फरिश्ता कॉम्प्लेक्स, स्टेशन रोड़, दुर्ग -491001(छ.ग.) 9424109109

## देखें अपने दोष, रहें सदा निर्दोष

श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा.

(आगमज्ञ, व्यसन मुक्ति के प्रबल प्रेरक, रत्नसंघ के अष्टम पट्टधर आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के सुशिष्य श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा. द्वारा नेहरू पार्क जोधपुर में 9 मार्च, 2020 को फरमाये गए प्रवचन में आए कतिपय अनमोल वचनों का संकलन जिनवाणी के सह-सम्पादक श्री नौरतनमलजी मेहता, जोधपुर ने किया।)

★ दूसरों के दोष देखना पाप है, जबकि स्वयं के दोष देखना धर्म।

- ★ मान (अभिमान) नहीं होता तो मोक्ष यहीं हो जाता।
- ★ जितनी लघुता होगी, उतनी प्रभुता रहेगी।
- ★ जो करता है दूसरों की निन्दा, उसका अध्यात्म नहीं रहता जिन्दा।
- ★ आत्म-आलोचना होने पर सम्यग्दर्शन होगा।
- ★ करके पराई चर्चा, अपना अनमोल समय व्यर्थ में खर्चा।
- ★ अपनी शान्ति का करना है स्वागत, तो नहीं करें दूसरों की शिकायत।
- ★ समाधि टिकानी है अपनी, तो नहीं करें पराई टीका-टिप्पणी।
- ★ स्वयं की आलोचना से जीव आत्म-दर्शन करता है।
- ★ जो देखेगा अपने दोष, वह रहेगा सदा निर्दोष।  
प्रवचन-सभा में कई भाई-बहिनों ने सन्त-सतीवृन्द की निन्दा नहीं करने का संकल्प अंगीकार किया।

## प्रतिक्रमण याद करने के लाभ

डॉ. दिलीप धींग

जो व्यक्ति प्रतिक्रमण कण्ठस्थ कर लेता है, वह जाने-अनजाने अनेक उपयोगी ज्ञानवर्द्धक आगमिक बातों का जानकार हो जाता है। प्रतिक्रमण मूलतः प्राकृत में है। प्राकृत एवं संस्कृत दिव्य भाषाएँ मानी जाती हैं। उनका उच्चारण मंगलकारी माना जाता है। जहाँ नियमित सामायिक-प्रतिक्रमण की आराधना होती है, वहाँ अनेक अशुभ टल जाते हैं। केवल प्रथम सामायिक आवश्यक को ही द्वादशांगी का सार और चौदह पूर्व का अर्थपिण्ड कहा गया है तो छह आवश्यक सहित सम्पूर्ण प्रतिक्रमण का महत्त्व निःसन्देह बहुत अधिक है। जिसे प्रतिक्रमण याद है-

1. वह सगर्व यह कह सकता है कि उसे एक आगम कण्ठस्थ है।
2. सभी आगमों के नाम उसे कण्ठस्थ हो जाते हैं।

3. वह पञ्च परमेष्ठी के स्वरूप और उनके गुणों का जानकार हो जाता है।
4. वह छह आवश्यकों का जानकार हो जाता है।
5. वह यह जान जाता है कि अठारह पाप कौनसे होते हैं।
6. उसे मांगलिक (मंगल-पाठ) याद हो जाता है।
7. उसे प्रत्याख्यान का पाठ याद हो जाता है, जिससे वह किसी को भी प्रत्याख्यान करवा सकता है अथवा स्वयं भी प्रत्याख्यान पूर्वक कोई नियम ले सकता है।
8. वह श्रावक के बारह ब्रतों (तीन गुणव्रत और चार शिक्षाव्रत सहित) का जानकार हो जाता है।
9. वह बारह ब्रतों का स्वरूप और उनके दोषों (अतिचारों) का जानकार हो जाता है।
10. वह रत्नत्रय (सम्यग्ज्ञान, सम्यग्दर्शन और सम्यक् चारित्र) के स्वरूप को समझ सकता है।

प्रतिक्रमण के सूत्रों एवं पाठों में ज्ञान, ध्यान, विनय, अनुशासन, नैतिकता और प्राणिमात्र के प्रति मैत्री के सन्देशों की अनुगूञ्ज है। प्रतिक्रमण में अनेक विषय समाविष्ट हैं। प्रतिक्रमण जानने वाला कहीं भी विचार व्यक्त करना चाहे तो वह प्रतिक्रमण में से कई तथ्य उद्धृत कर सकता है और उसकी अभिव्यक्ति को प्रभावशाली और प्रामाणिक बना सकता है। अर्थ को समझते हुए प्रतिक्रमण याद किया जाए और उसकी सही रूप से आराधना की जाए तो जीवन में नई रोशनी पैदा होती है। माता-पिता को चाहिये कि वे अपनी सन्तान को अन्य चीजों के अलावा प्रतिक्रमण भी कण्ठस्थ कराएँ। बाल-किशोरवय में याद किया गया प्रतिक्रमण जीवन-भर की पूँजी बन जायेगा।

-निदेशक, अन्तरराष्ट्रीय प्राकृत अध्ययन व शोध केन्द्र, सुगन् हाउस, 18, रामानुज अय्यर स्ट्रीट, साहुकारपेट, चेन्नई-600001

## MORE EFFECTIVE WORDS

Sh. Shrikant Gupta

A blind boy sat on the steps of a building with a hat by his feet. He held up a sign which said-'I am blind, please help.' There were only a few coins in the hat. A man was walking by. He took a few coins from his pocket and dropped them into the hat. He then took the sign, turned it around, and wrote some words. He put the sign back so that everyone who walked by would see the new words.

Soon the hat began to fill up. A lot more people were giving money to the blind boy.

That afternoon the man who had changed the sign came to see how things were. The boy recognized his footsteps and asked, 'Were you the one who changed my sign this morning? What did you write?' The man said, 'I only wrote the truth. I said what you said but in a different way.' What he had written was : 'Today is a beautiful day and I cannot see it.'

Do you think, the first sign & the second sign were saying the same thing? Of course both signs told people the boy was blind. But the first sign simply said the boy was blind. The second sign told people that they were so lucky that they were not blind. Should we be surprised that the second sign was more effective?

-Jodhpur (Raj.)

## व्यवहार सम्यक्त्व के 67 बोल

### पाँचवें बोले लक्षण पाँच

श्रद्धा होने पर जो गुण आवश्यक रूप से पाये जाने चाहिये, वे 'लक्षण' कहलाते हैं।

1. सम-अनन्तानुबन्धी कषाय का उदय न होना 'सम' है।
2. संवेग-मोक्ष की तीव्र इच्छा 'संवेग' है।
3. निर्वेद-संसार से उदासीनता रूप वैराग्य भाव का होना 'निर्वेद' है।

4. अनुकम्पा—दुःखी जीवों के दुःखों को मिटाने की इच्छा 'अनुकम्पा' है। द्रव्य और भाव के भेद से अनुकम्पा दो प्रकार की है। शक्तिपूर्वक दुःखी जीवों के दुःख दूर करना द्रव्य अनुकम्पा है तथा दुःखी को देखकर दया से हृदय कोमल हो जाना भाव अनुकम्पा है।
5. आस्था—जिनेन्द्र भगवान के फरमाये हुए सूक्ष्म, गूढ़, अतीन्द्रिय धर्मास्तिकाय, आत्मा, परलोक आदि पर श्रद्धा करना 'आस्था' है।

#### छठा बोले दूषण पाँच

श्रद्धा के बीच होने वाले विक्षेपों (बाधाओं) को 'दूषण' कहते हैं।

1. शंका—तत्त्व के विषय में सन्देह-संशय करना 'शंका' है।
2. कांक्षा—अन्य तीर्थिकों के आडम्बर को देखकर उनकी चाह करना 'कांक्षा' है।
3. वितिगिच्छा—धार्मिक क्रिया के विषय में फल के प्रति सन्देह करना तथा गुणियों के मलिन वेश को देखकर घृणा करना 'वितिगिच्छा' है।
4. पर-पाखण्डी प्रशंसा—सर्वज्ञ प्रणीत मत के सिवाय अन्य मतावलम्बियों की प्रशंसा करना 'पर-पाखण्डी प्रशंसा' है।
5. पर-पाखण्डी संस्तव—सर्वज्ञ प्रणीत मत के सिवाय अन्य मत वालों के साथ सहवास, संलाप आदि रूप में परिचय करना 'पर-पाखण्डी संस्तव' है।

### जय जिनेन्द्र जय भारत का

#### सूरज धरती पर लायेंगे

श्री एस्. के. जैन लौंगपुरिया

कम खाना और गम खाना,  
हमने तो सदियों से सीखा है।  
भारत वह वट वृक्ष है जिसको,

सन्त जनों ने सींचा है।।  
जीवदया के फूल निराले,  
इसकी डाली पर खिलते हैं।  
करुणा और अहिंसा के,  
अंकुर जिनमें मिलते हैं।।  
इसकी छाया के सोपान तले,  
राजा महाराजा आये हैं।  
वे अपने सदज्ञान तपस्या से,  
मोक्षगति को पाये हैं।।  
जिसके लिए महावीर प्रभु ने,  
धूल जंगलों की छानी।  
जिस पर निज सर्वस्व लुटाकर,  
भामाशाह बने दानी।।  
गौरी, गजनी, गुलाम लोधी,  
कर न सके कमजोर जिसे।  
मिटा न पाई नादिरशाही, तैमूरी तलवार जिसे।  
जैन समाज के रहते इसका,  
हो सकता अपमान नहीं।  
प्यारा हिन्दू कभी, सह सकता है अपमान नहीं।।  
इन्सानों के बीच में रहकर,  
जो बन पाया इन्सान नहीं।  
कहने को कोई कुछ भी कह ले,  
पर उसका हिन्दुस्तान नहीं।।  
इस सत्य अहिंसा की धरती ने,  
कितनी हिंसा झेली है।  
अब हर भारतवासी जागे, हमने करवट ले ली है।  
हम पुनः अहिंसा के बल पर,  
हिंसा का नाम मिटायेंगे।  
जय जिनेन्द्र जय भारत का,  
सूरज धरती पर लायेंगे।।

-14-6-405, नागर खाना, चूड़ी बाजार, हैदराबाद-

500012 (तेलंगाना) 9951067147

## मैं राजा भोज हूँ

श्री दुलीचन्द जैन 'साहित्यरत्न'

बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित रचना को पढ़कर अन्त में दिए गए प्रश्नों के उत्तर 20 वर्ष की आयु तक के पाठक 15 अगस्त, 2020 तक जिनवाणी सम्पादकीय कार्यालय, ए-9, महावीर उद्यान पथ, बजाज नगर, जयपुर-302015 (राज.) के पते पर प्रेषित करें। उत्तर के साथ अपनी आयु तथा पूर्ण पते का भी उल्लेख करें। श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को श्री महावीरचन्द जी बाफना, जोधपुर द्वारा अपनी धर्मपत्नी एवं श्रीमती अरुणा जी, श्री मनोजकुमार जी, श्री कमलेश कुमार जी बाफना की माताश्री स्व. श्रीमती मोहिनीदेवी जी बाफना की पुण्य-स्मृति में पुरस्कृत किया जा रहा है। पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार-500 रुपये, द्वितीय पुरस्कार-300 रुपये, तृतीय पुरस्कार-200 रुपये तथा 150 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार। पुरस्कार राशि सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर द्वारा भिजवाई जाती है।

एक बार राजा भोज सन्ध्याकाल के समय नगर के बाहर उपवन में घूम रहे थे। एक प्रौढ़ व्यक्ति सिर पर लकड़ियों की भारी गठरी लिये जंगल से आ रहा था। राजा ने देखा, उसके सिर पर काफी भार है, पसीना चू रहा है, फिर भी उसके चेहरे पर एक अजीब मस्ती है। चाल-ढाल निराली ही है। राजा उसके सामने आया, लेकिन उसने राजा की ओर कोई ध्यान नहीं दिया। बड़ी बेपरवाही से वह अपने घर की ओर बढ़ रहा था। राजा ने पूछा-“भाई! तुम कौन हो?” लकड़हारे ने बिना इधर-उधर देखे, बड़ी मस्त आवाज़ में कहा-“मैं राजा भोज हूँ।”

राजा के आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा। एक लकड़हारा, चार-छह पैसे की लकड़ी सिर पर ढो रहा है, फटे-पुराने कपड़े में लिपटा हुआ है, गरीबी का साक्षात् अवतार है और इतनी बेफिक्री से अपने को राजा भोज कह रहा है। राजा को उसकी मस्ती और बेफिक्री से ईर्ष्या होने लगी। सोचा, राजा भोज तो मैं हूँ, यह नया राजा भोज कहाँ से पैदा हो गया? किन्तु जो मस्ती उसके चेहरे पर है, जो अल्हड़ता इसकी चाल में है, वह मेरे पास कहाँ? राजा आगे बढ़ा और बोला-“अरे भाई! जरा रुको तो सही। तुम राजा भोज हो, तो बताओ तुम्हारी आमदनी क्या

है?” लकड़हारा रुका और बोला-“मेरी आमदनी है, छह टके रोज।”

अब तो राजा को कुतूहल एवं आश्चर्य का कोई आर-पार नहीं रहा। यहाँ तो लाखों रुपये रोज के आते-जाते हैं, जिसमें भी सुख-चैन नहीं है। मन में शान्ति नहीं, भोग की सब सामग्री होते हुए भी आनन्द नहीं है और यह छह टके रोज कमाता है, कितनी मेहनत करता है, जिस पर कितना सुखी! कितना मस्त! राजा ने आगे पूछा-“अच्छा भाई! तू अपने को राजा भोज बताता है और छह टके रोज कमाता है, तो तेरे खर्च का हिसाब क्या है? राजा है तो कुछ खर्च की व्यवस्था भी होगी?”

लकड़हारे ने भारी बोझ को नीचे डाल दिया और कहा-“तुमको मुझमें बड़ी दिलचस्पी है? तो लो सुनो। मैंने अपने खर्च का अलग-अलग हिसाब कर रखा है। मैं छह टके रोज कमाता हूँ, जिसमें एक टका अपने बोहरे को देता हूँ, एक टका आसामी को देता हूँ, एक टका मन्त्री को देता है, एक टका अपने पर खर्च करता हूँ, एक टका खजाने में डालता हूँ और एक टका अतिथि-सत्कार में खर्च करता हूँ।”

लकड़हारे की बातें राजा को बड़ी ही अजीब लग रही थीं, लेकिन बड़ी रसीली भी। वह मन-ही-

मन सोच रहा था, छह टके रोज कमाने वाले का बोहरा भी है, आसामी भी है, मन्त्री है क्यों न होगा, जब अपने आपको राजा भोज कहता है, और खजाना भी है। आश्चर्य तो यह है कि अतिथि-सत्कार में भी खर्च करता है। लेकिन यह सब क्या पहेली है? बोहरा कौन है? आसामी कौन है? इसका मन्त्री कौन है? राजा ने पूछा-“भाई! यह तो बताओ, तुम्हारा बोहरा कौन है?”

लकड़हारे ने बड़ी सरलता से कहा-“तुम नहीं जानते, मेरा बोहरा कौन है? आदमी तो बड़े होशियार लगते हो, इतना भी नहीं मालूम। खैर, मैं बताता हूँ। माँ-बाप मेरे बोहरे हैं, जिन्होंने मुझे पाल-पोसकर बड़ा किया, अपने खून-पसीने की कमाई से मेरा भरण-पोषण किया, यह आशा लगाई कि बुढ़ापे में यह हमारी सेवा करेगा। क्या वे बोहरे नहीं है? बोहरा आसामी को इसी आशा से देता है कि वह समय पर ब्याज के साथ लौटा देगा। क्या माँ-बाप पुत्र से ऐसी आशा नहीं करते?”

“बिल्कुल ठीक बात है, तुम्हारी।” राजा ने सिर धुनकर कहा।

“तो इसलिए मैं रोज एक टका अपने माँ-बाप की सेवा में लगता हूँ, क्योंकि वे मेरे बोहरे हैं।”

“और आसामी कौन है भाई?” राजा ने पूछा।

“आसामी हैं मेरे पुत्र-पुत्रियाँ! वे अभी कमा नहीं सकते। इसलिए उनके भरण-पोषण की सब जिम्मेदारी मेरी है, अभी उनकी व्यवस्था करना मेरा उत्तरदायित्व है। वे जब बड़े होंगे तो माता-पिता के इस ऋण को चुकाएँगे। इसलिए वे मेरे आसामी हैं।”

“बहुत खूब! और मन्त्री कौन है?” राजा ने मुस्कराकर पूछा।

“पत्नी मेरी मन्त्री है। वह सुख-दुःख में मेरी सहायता करती है, मौके पर सच्ची सलाह देती है।

उदासी और चिन्ता के समय धैर्य बँधाती है, समय पर अपना सर्वस्व अर्पण करके भी पति की जीवन-बाती जगमगाती रखने का प्रयत्न करती है। भाई, उससे बढ़कर और मन्त्री कौन होगा?”

राजा लकड़हारे की बात पर गद्गद हो उठा। उसके कन्धे पर हाथ रखकर कहा-“भाई! तुम बात तो बड़े पते की कह रहे हो। स्त्री के प्रति तुम्हारे मन में इतनी ऊँची और आदरपूर्ण भावना है, तो सचमुच ही तुम राजा हो। दरअसल सच्चा मन्त्री तो पत्नी ही है।”

“हाँ तो, इसलिए मैं एक टका अपने मन्त्री को देता हूँ और एक टका अपने खजाने में डालता हूँ।”

“तुम्हारे पास खजाना भी है?” राजा ने पूछा।

“क्यों नहीं, खजाना ही तो राजा का बल है। जो आदमी अपनी आमदनी में भविष्य के लिए कुछ बचाता नहीं, उसे समय पर पछताना पड़ता है। इसलिए मैं प्रतिदिन एक टका अपने खजाने में डाल देता हूँ और एक टका अपने लिए खर्च कर देता हूँ। अपने शरीर की भूख-प्यास, वस्त्र की आवश्यकता आदि को बस एक टके में पूरी कर लेता हूँ।”

“शेष बचे एक टके का क्या करते हो भाई?” राजा ने पूछा तो लकड़हारे ने कहा-“तुम्हें मालूम नहीं, अतिथि-सत्कार करना गृहस्थ का धर्म है। घर पर कोई मेहमान या अतिथि आ जाए तो उनका स्वागत करना, प्रेम से आसन देना, मीठी वाणी बोलना और जैसा हो पाए, उनका स्वागत-सत्कार करना गृहस्थ का कर्तव्य होता है। अब यदि मेरे पास कुछ नहीं हो, तो मैं अपना यह कर्तव्य कैसे पालन करूँगा, इसलिए मैं अपने अतिथि के लिए अपनी आमदनी में से एक टका निकालकर रखता हूँ। भाई! यह मेरा हिसाब-किताब है, इस तरह से



मेरी गाड़ी बड़े आराम से चल रही है।”

राजा भोज ने लकड़हारे की बातें सुनीं और आश्चर्यपूर्वक सोचने लगा—मैं तो नाम का राजा भोज हूँ, वास्तव में राजा भोज यही है। इसके जीवन में कितनी व्यवस्था, कितनी कर्तव्यपरायणता और कितना आनन्द है। छह टके रोज कमाकर यह अपने परिवार का भरण-पोषण करता है, अतिथि की सेवा भी करता है और भविष्य के लिए बचाता भी है। कितना सुखमय है इसका जीवन। (लेखक अब दिवङ्गत)

—‘रोचक बोधकथाएँ’ पुस्तक से संकलित

प्र. 1. राजा भोज को लकड़हारे से ईर्ष्या होने का क्या

कारण था ?

- प्र. 2. राजा भोज ने स्वयं को नाममात्र का जबकि लकड़हारे को वास्तविक राजा क्यों कहा ?
- प्र. 3. प्रस्तुत कहानी हमें क्या सन्देश देती है ?
- प्र. 4. लकड़हारे ने अपने खर्च की व्यवस्था का विवरण किस प्रकार दिया ?
- प्र. 5. आपकी नज़र में वास्तविक राजा में क्या गुण होने चाहिए ?
- प्र. 6. खज़ाना एवं आमदनी के तीन-तीन पर्यायवाची लिखिए तथा अल्हड़ता एवं आसामी का वाक्य में प्रयोग कीजिए।

## HOW TO BOOST CONFIDENCE

1. Love yourself
2. Stop comparing to others
3. Admire your strengths
4. Exercise and go to the gym
5. Always improve yourself
6. Set goals and hit them
7. Tell yourself good things daily
8. Track your accomplishments
9. Learn to accept compliments



### लॉकडाउन में बहुत कुछ सीखा

कुमारी आज्ञा बाफना (उम्र 7 वर्ष) सुपुत्री श्रीमती अंकिताजी-श्री पवनजी बाफना, सुपौत्री श्रीमती तारादेवीजी-श्री अमृतलालजी बाफना (निवासी-भोपालगढ़) ने लॉकडाउन के दौरान विद्यालयीय पढ़ाई के साथ-साथ 20 विहरमान, 11 गणधर, 16 सतियाँ, प्रतिक्रमण पूर्ण विधि सहित, दशवैकालिक प्रथम चार अध्ययन, पुच्छिसु णं, भक्तामर स्तोत्र, पच्चीस बोल, साधु-वन्दना, घण्टाकर्ण सूत्र, श्री पैसठिया यन्त्र का सूत्र, समकित के 67 बोल, सामायिक सूत्र अर्थ सहित कण्ठस्थ किए जो सभी के लिए प्रेरणास्पद है।

—मनमोहन कर्णावट, जोधपुर

**बाल-स्तम्भ [मार्च-2020] का परिणाम**

जिनवाणी के मार्च-2020 के अंक में बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत 'समाज की महत्ता' के प्रश्नों के उत्तर जिन बालक-बालिकाओं से प्राप्त हुए, वे धन्यवाद के पात्र हैं। पूर्णांक 25 हैं।

पुरस्कार एवं राशि नाम		अंक
प्रथम पुरस्कार-500/-	मयंक जैन, सवाईमाधोपुर (राजस्थान)	25
द्वितीय पुरस्कार-300/-	जिनेन्द्र पारख, धनारीकलाँ-जोधपुर (राजस्थान)	24.5
तृतीय पुरस्कार- 200/-	अंशुल कचोलिया, बेंगलुरु (कर्नाटक)	24
सान्त्वना पुरस्कार- 150/-	सुदर्शन जैन, चौथ का बरवाड़ा (राजस्थान)	23.5
	आरची जैन, नीमच (मध्यप्रदेश)	23.5
	अरिन चौरड़िया, जयपुर (राजस्थान)	23
	ममता आर. छाजेड़, भुसावल (महाराष्ट्र)	23
	मनीष सूर्यकान्त चोरड़िया-जयपुर (राजस्थान)	23

**बाल-जिनवाणी मई-जून, 2020 के अंक से प्रश्न (अन्तिम तिथि 15 अगस्त, 2020)**

- प्र. 1. देव का मन ग्लानि से क्यों भर गया ?
- प्र. 2. 'संस्कार' कहानी का मूल सन्देश लिखिए।
- प्र. 3. शाकाहारी बनकर हम किस तरह बीमारियों से छुटकारा पा सकते हैं ?
- प्र. 4. स्थानक में जाते समय किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिए ?
- प्र. 5. 'विनय' करने से क्या लाभ हैं ? हमें किन-किन का विनय करना चाहिए ?
- प्र. 6. 'दिन का स्वागत' कविता के आधार पर खुश कौन हैं ?
- प्र. 7. 'अपने विचारों को विस्तार तो दीजिए' कविता क्या प्रेरणा देती है ?
- प्र. 8. 'धैर्य जीवन की पूँजी है।' पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।
- प्र. 9. Who can follow Jaina path?
- प्र. 10. Write three synonyms of to accept requirement, violence, possession

**बाल-जिनवाणी [फरवरी-2020] का परिणाम**

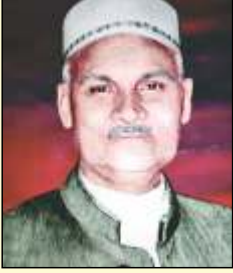
जिनवाणी के फरवरी-2020 के अंक की बाल-जिनवाणी पर आधृत प्रश्नों के उत्तरदाता बालक-बालिकाओं का परिणाम इस प्रकार है। पूर्णांक 40 हैं।

पुरस्कार एवं राशि नाम		अंक
प्रथम पुरस्कार-600/-	सुहानी सुराणा, वैशाली नगर-अजमेर (राजस्थान)	38
द्वितीय पुरस्कार-400/-	अरिष्ठ कोठारी, अजमेर (राजस्थान)	37
तृतीय पुरस्कार- 300/-	अभिषेक पालरेचा, जोधपुर (राजस्थान)	36.5
सान्त्वना पुरस्कार (3)- 200/-	विशाल सिंघवी, जोधपुर (राजस्थान)	36
	भूमि सिंघवी-जोधपुर (राजस्थान)	36
	प्रणव भण्डारी, जोधपुर (राजस्थान)	36

**संस्कार केन्द्र एवं पाठशाला अध्यापकों से निवेदन**

आध्यात्मिक संस्कार केन्द्र एवं धार्मिक पाठशालाओं के अध्यापकों से निवेदन है कि वे जिनवाणी पत्रिका में प्रकाशित 'बाल-जिनवाणी' का वाचन कक्षा में करावें एवं उसमें पूछे गए प्रश्नों के उत्तर भेजने हेतु व्यवस्था करावें। आचार्य हस्ती दीक्षा शती वर्ष में बालकों को संस्कारित करने का यह भी एक उत्तम साधन है।

-सम्पादक



**श्रीकृष्ण**  
**श्रावकरत्न वीर पिता एवं वीर नाना**  
**श्री उमरावमलजी सेठ**  
**एवं वीर माता श्राविकारत्न**  
**श्रीमती सज्जनदेवीजी सेठ**



श्रावकरत्न वीर पिता एवं वीर नाना श्री उमरावमलजी सेठ एवं वीर माता श्राविकारत्न श्रीमती सज्जनदेवीजी सेठ का रत्नसंघीय श्रावक-श्राविकाओं में अग्रणी स्थान रहा। सेठ परिवार पीढ़ियों से गुरुभक्त एवं श्रद्धा समर्पित रहा है। सेठ श्री उमरावमलजी प्रतिमाह की पूर्णिमा को परम आराध्य गुरु भगवन्त आचार्य श्री 1008 श्री हस्तीमलजी म.सा. की सेवा में दर्शन-वन्दनार्थ उपस्थित होते थे। सन् 1948-86 तक नियमित 38 वर्षों तक परिवार की विषम परिस्थितियों में भी गुरु दर्शन-वन्दन हेतु पधारकर आपने अपनी दृढ़ संकल्प शक्ति का परिचय दिया।

उत्कृष्ट साधर्मि-वात्सल्य एवं आत्मीयता के कारण अनेक गुरु भक्त जयपुर पधारने पर सहज ही सेठ परिवार को आतिथ्य सत्कार का लाभ देकर प्रसन्नता का अनुभव करते थे। पण्डित दुःखमोचनजी झा, उनके सुपुत्र पण्डित शशिकान्तजी झा एवं आचार्यश्री की सेवा में चार माह विराजने वाले सभी का लाभ सेठ परिवार सहर्ष लिया करता था। 16 जनवरी, 1964 को अपनी तृतीय पुत्री तेजकँवर (वर्तमान में साध्वीप्रमुखा महासती श्री तेजकँवरजी म.सा.) की दीक्षा पूर्ण ठाट-बाट से करवाई, जिसमें जयपुर की तत्कालीन महारानी गायत्रीदेवीजी की मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थिति महत्त्वपूर्ण थी। वीरमाता श्रीमती सज्जनदेवीजी की सत्कार भावना पुराने श्रावक-श्राविकाएँ सदैव स्मरण रखते हैं। पूज्य आचार्य भगवन्त ने स्वयं फरमाया था कि सज्जनबाई सा. का क्या स्वधर्मि वात्सल्य था! अपने दौहित्र श्री प्रमोदजी मेहता (वर्तमान में तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा.) की दीक्षा के सभी कार्यक्रम एवं अभिनिष्क्रमण यात्रा भी सेठ परिवार की हवेली से ही सम्पन्न हुए।

रत्नसंघ के अतिरिक्त भी जयपुर में अन्य सन्तों के चातुर्मास काल में पधारे दर्शनार्थियों का सेठ उमरावमलजी एवं सज्जनबाईजी अतिथि सत्कार का भरपूर लाभ लेते, सभी दर्शनार्थीबन्धु सेठ परिवार का आतिथ्य स्वीकार कर प्रसन्नता की अनुभूति करते थे। रत्नसंघ के सभी कार्यक्रमों को गति देने में सेठ साहब उमरावमलजी का अतुलनीय योगदान रहता था। पूज्य सेठ सा. का सम्पूर्ण परिवार सम्प्रति पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के प्रति पूर्ण श्रद्धा समर्पित है।

**सुपुत्रियाँ-** (1) स्व. श्रीमती प्रेमकुमारी जी (माताश्री तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा.)। (2) स्व. श्रीमती विजया कुमारीजी (नागौर-गोटन निवासी) आप तपस्वी रत्ना एवं स्वाध्यायी श्राविका थी। अनेक थोकड़ों की ज्ञाता थी। (3) तेजकँवरजी (साध्वीप्रमुखा महासती श्री तेजकँवरजी म.सा.)। (4) श्रीमती कमल कुमारीजी चोरड़िया धर्मसहायिका श्री प्रकाशचन्दजी चोरड़िया (जो सेवामूर्ति व्याख्यात्री महासती श्री रतनकँवरजी म.सा. के सांसारिक भ्राता हैं) आप स्वाध्याय रसिक श्राविका रत्न हैं एवं सतत स्वाध्याय में रमण करती हैं।

**सुपुत्र-** (1) श्री विनोद कुमारजी सेठ-आप भी स्वाध्याय, सेवा, कविता एवं साहित्य के विशेष रसिक हैं। अनेक पद्य रचनाएँ कण्ठस्थ हैं। (2) श्री अशोक कुमारजी सेठ-आप वर्तमान में सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के मन्त्री पद को गौरवान्वित कर रहे हैं। अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के विभिन्न पदों पर एवं श्री जैन रत्न युवक परिषद् के अनेक पदों का बखूबी निर्वहन कर चुके हैं। संगठन एवं सेवा कार्यों में विशेष रुचि रखते हैं। दोनों सुपुत्रवधुएँ, पौत्र, पौत्र वधुएँ सभी दौहित्र, उनके पुत्र आदि सभी परिवारजन नियमित सामायिक-स्वाध्याय, सेवा, तपस्या, साधना में संलग्न रहते हुए संघ के प्रति पूर्णतः समर्पित हैं एवं रत्नसंघ में अपनी सेवाएँ प्रदान कर रहे हैं। आपके दौहित्र के सुपुत्र श्री मनीषजी मेहता अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् के अध्यक्ष पद का बखूबी निर्वहन कर रहे हैं एवं सुपौत्र श्री महावीरजी सेठ भी बैंकॉक में संघ के कार्यक्रमों को मूर्त रूप देते रहते हैं।

अंक-सौजन्य

## तपस्विनी सुग्रा श्राविकारत्न

## श्रीमती पारसकँवरजी भण्डारी को शत-शत नमन



मृत्यु को महोसत्व बनाने वाली श्रीमती पारसकँवरजी भण्डारी, 2 अप्रैल, 1933 में बोरुंदिया कुल में माता बदनकँवर की कुक्षि से जन्मी एवं पिता फूलचन्दजी के दुलार-प्यार में बड़ी हुई। बचपन में सत्संस्कारों के बीजारोपण से जीवन महका, पल्लवित हुआ। समय की गति के साथ श्रेष्ठिवर्य श्री माँगीचन्दजी भण्डारी के सुपुत्र श्री इन्द्रचन्दजी भण्डारी के साथ परिणय सूत्र में आबद्ध हुई, नवगृहस्थ जीवन का आरम्भ हुआ। गृहस्थ बगिया के सुरभित पुष्प दो सुपुत्र श्री प्रसन्नचन्दजी, श्री अशोकचन्दजी भण्डारी तथा चार सुपुत्रियाँ श्रीमती ताराजी बैद, श्रीमती मंजुजी कुम्भट, श्रीमतीकंचनजी छल्लाणी एवं श्रीमती रेणुजी चोरड़िया सभी संस्कार युक्त परिवार में हैं तथा पीहर-ससुराल को दिपा रही हैं।

**तपाराधना**-आपने कई उपवास, आयम्बिल, बेले, तेले, कई अठाइयाँ, सोलह, इक्कीस एवं मासखमण-दो बार, करीब दस-बारह साल तक निरन्तर एकाशन आदि किये।

**धार्मिक अध्ययन**-आप नित्य 5-7 सामायिक एवं प्रतिक्रमण करती थी। अनेक थोकड़े कण्ठस्थ थे, अनेक आगमों की जानकार थीं। प्रश्नव्याकरणसूत्र की खुली पुस्तक प्रतियोगिता की प्रश्नोत्तरी आपने तैयार करके संघ को भेंट की। नित्य नया सीखने की आपकी प्रगाढ़ रुचि और अटूट श्रद्धा थी। जिनवाणी में भी आपकी रचनाएँ प्रकाशित हुईं।

**संघ, समाज एवं श्राविका मण्डल में आपका योगदान**

ॐ सर्वप्रथम 1991 में आपकी अध्यक्षता में महिला-सम्मेलन चेन्नई में ॐ महावीर महिला मण्डल चेन्नई की अध्यक्ष ॐ युवतियों को धर्म में दृढ़ करने की भावना से युवति मण्डल चेन्नई की स्थापना ॐ चेन्नई स्थानक में सप्ताह में दो बार महिलाओं को पढ़ाना ॐ अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल की चेन्नई शाखा की स्थापना 1998 में तथा छह वर्षों तक संस्थापक अध्यक्षा ॐ अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल की उपाध्यक्षा ॐ ज्ञानवर्धन के लिए हर संघ की प्रश्नोत्तरी में रुचि।

**श्रद्धा एवं समर्पण**-गुरु हस्ती, गुरु हीरा, उपाध्यायप्रवर मानचन्द्रजी एवं समस्त सन्त-सतियों के प्रति अटूट श्रद्धा संघ के प्रति पूर्ण समर्पित। 'यथा नाम तथा गुण' श्राविकारत्न।

**संधारापूर्वक प्रयाण**-आपने 'गुरु हीरा' से संधारे के बारे में व्यक्तिगत पूरी समझाइश पाकर, पूरे होश-हवास में संघ और परिवार की पूर्ण सहमति लेकर चेन्नई में चौविहार संधारा ग्रहण किया। पूर्ण सजगता के साथ नियमों का प्रतिपूर्ण दृढ़ता से पालन करते हुए 5 दिसम्बर, 2012 को मंगल वातावरण में आपने मृत्यु को 26 दिन के चौविहार संधारे के साथ ऐतिहासिक महोत्सव बना दिया। आपके बताये हुए मार्ग पर हम धर्म एवं संघ के कार्यों में आगे बढ़ते रहें, इन्हीं मंगल भावनाओं के साथ, आपका कोटि-कोटि अभिनन्दन।

**श्री प्रसन्नचन्द-श्रीमती मंजु भण्डारी, बेंगलोर**

राष्ट्रीय अध्यक्ष-अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल







# JVS Foods Pvt. Ltd.

Manufacturer of :

NUTRITION FOODS

BREAKFAST CEREALS

FORTIFIED RICE KERNELS

WHOLE & BLENDED SPICES

VITAMIN AND MINERAL PREMIXES

*Special Foods for undernourished Children  
Supplementary Nutrition Food for Mass Feeding Programmes*

*With Best Wishes :*

## JVS Foods Pvt. Ltd.

G-220, Sitapura Ind. Area,  
Tonk Road, Jaipur-302022 (Raj.)

Tel.: 0141-2770294

Email-jvsfoods@yahoo.com

Website-www.jvsfoods.com

FSSAI LIC. No. 10012013000138





**WELCOME TO A HOME THAT DOESN'T  
FORCE YOU TO CHOOSE.  
BUT, GIVES YOU EVERYTHING INSTEAD.**

Life is all about choices. So, at the end of your long day, your home should give you everything, instead of making you choose. Kalpataru welcomes you to a home that simply gives you everything under the sun.

 **022 3064 3065**



ARTIST'S IMPRESSION

Centrally located in Thane (W) | Sky park | Sky community | Lavish clubhouse | Swimming pools | Indoor squash court | Badminton courts

PROJECT  
**IMMENSA**  
THANE (W)  
EVERYTHING UNDER THE SUN

**TO BOOK 1, 2 & 3 BHK HOMES, CALL: +91 22 3064 3065**

**Site Address:** Bayer Compound, Kolshet Road, Thane (W) - 400 601. | **Head Office:** 101, Kalpataru Synergy, Opposite Grand Hyatt, Santacruz (E), Mumbai - 400 055. | **Tel:** +91 22 3064 5000 | **Fax:** +91 22 3064 3131 | **Email:** sales@kalpataru.com | **Website:** www.kalpataru.com

In association with



This property is secured with Axis Trustee Services Ltd. and Housing Development Finance Corporation Limited. The No Objection Certificate/Permission would be provided, if required. All specifications, designs, facilities, dimensions, etc. are subject to the approval of the respective authorities and the developers reserve the right to change the specifications or features without any notice or obligation. Images are for representative purposes only. \*Conditions apply.

*If undelivered, Please return to*

**Samyaggyan Pracharak Mandal**  
Above Shop No. 182,  
Bapu Bazar, Jaipur-302003 (Raj.)  
Tel. : 0141-2575997

स्वामी सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के लिए प्रकाशक, मुद्रक - अशोक कुमार सेठ द्वारा डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भूमिचौं का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर राजस्थान से मुद्रित एवं सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, शॉप नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-3 राजस्थान से प्रकाशित। सम्पादक-डॉ. धर्मचन्द जैन